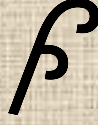
ISSN 2229-547X VIDEHA



विदेह ३६८ म अंक १५ अप्रैल २०२३ (वर्ष १६ मास १८४ अंक ३६८)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्

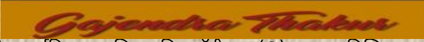


विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।







Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

Videha e-Journal: Issue No. 368 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ ***(****कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।****)***

माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओइपर **(** *गद्य-पद्य रूपी***)** मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

...

Videha: Maithili Literature Movement

ꞵ

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्ति:

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তি:

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय (पृ. २-६)

१.२.अंक ३६७ पर टिप्पणी (पृ. ७-७)

कला विमर्श विशेषांक

२.१.अटर-पटर, नाङट-उघार... शिव-शक्तिक पूजा लिङ-योनिक रुपमे **(पृ. १०-१४)**

२.२.सोनी नीलू झा- आधुनिकताक परिवेश मे आधुनिक चित्रकला **(पृ. १५-१८)**

२.३.संजू दास- कलाकृति मे अश्लीलता **(पृ. १९-२२)**

२.४.गौरीनाथ- कुमार पवनक प्रसिद्ध कथा 'पइठ' क संग प्रकाशित संजू दासक कलाकृतिक सम्बन्धमे **(पृ. २३-२५)**

२.५.मैथिलीक "उसने कहा था" माने कुमार पवनक दीर्घकथा "पइठ" (चित्रांकन संजू दास) **(पृ. २६-४०)**

२.६.मुन्नी कामत- समकालीन चित्रकार संजू दास **(पृ. ४१-४५)**

२.७.मुकेश दत्त- अपन शैली आ तकनीकक बलेँ आधुनिक कला मे अलग पहचान बना रहलीह संजू दास **(पृ. ४६-५५)**

२.८.गोविन्द चन्द्र दास- कामसूत्र के बिना कोनो चित्र शैली नहि छैक- लोककला के साक्षात विश्वविद्यालय गुमनाम नायक कृष्ण कुमार कश्यप (आ शशिबाला)* **(पृ. ५६-५९)**

२.९.रवीन्द्र कुमार दास- परिवारक सहयोग सबसऽ जरूरी **(पृ. ६०-६३)**

२.१०.संजू दासक किछु बीछल कलाकृति **(पृ. ६४-७०)**

२.११.गजेन्द्र ठाकुर- कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला- एकटा परिचय **(पृ. ७१-७३)**

२.१२.जितेन्द्र झा, जनकपुर- मिथिला चित्रकला- नेपाल प्रसंग **(पृ. ७४-७९)**

२.१३.गजेन्द्र ठाकुर- श्वेता झा चौधरी- एकटा परिचय **(पृ. ८०-१०२)**

ऐ अंकक अन्यान्य रचना

३.गद्य खण्ड

३.१.डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक'-गामक नामकरण: एक परिशीलन **(पृ. १०५-११७)**

३.२.संतोष कुमार राय 'बटोही'-मंगरौना (एगारहम खेप) **(पृ. ११८-१२०)**

३.३.संतोष कुमार राय 'बटोही'-समीक्षा- जिनगी भार बनि गेल **(पृ. १२१-१२२)**

३.४.रबीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २५ म खेप **(पृ. १२३-१२६)**

३.५.कुमार मनोज कश्यप-ओ दधीचि **(पृ. १२७-१२८)**

३.६.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खेप-१७) **(पृ. १२९-१३३)**

३.७.प्रणव झा- करमनेढ़ **(पृ. १३४-१४२)**

३.८.आचार्य रामानन्द मण्डल-मिथिला के लाल: उपन्यास सम्राट फणीश्वरनाथ रेणु आ पारो **(पृ. १४३-१५०)**

३.९.डाॅ. किशन कारीगर-लोंगी डैंस(हास्य कटाक्ष) **(पृ. १५१-१५२)**

३.१०.लाल देव कामत-मिथिलामे मांगैन खवाश छइ! (आगाँ)/ वर्णित रस/ चाह पोखता'क अर्थ जानि गेलहुँ (लघुकथा)/ लघुकथा- परचाक

निहितार्थ/ चलला मुरारी छकबय (लघु कथा)/ लघु कथा- हलहौर/ मैथिली बिहैन कथा- -सापरपिट्टा/ भाग जागल- विहैन कथा/ सुनैना बेटी - मैथिली सामाजिक उपन्यास/ लिख पटापैट मारय दयह (लघुकथा)/ लघुकथा- ई गुड़ खेनै कान छेदौने/ अम्बोहि पानि उठल- लघुकथा (मैथिली)/ रोज सेन्टेड लिची (लघुकथा)/ लघुकथा -रानी केँ नँय छै राजा **(पृ. १५३-१७२)**

४.पद्य खण्ड

४.१.राज किशोर मिश्र-अंतस्-तम **(पृ. १७४-१७७)**

४.२.निर्मला कर्ण- जूड़ शीतल **(पृ. १७८-१८१)**

४.३.किशन कारीगर- आ रे सुग्गा आ आ (बाल कविता) **(पृ. १८२-१८३)**

४.४.कल्पना झा- व्यग्रता **(पृ. १८४-१८५)**

४.५.डा सुमंगला झा- मैथिल **(पृ. १८६-१८७)**



ϧ

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তিঃ পৃথ্বী শান্তিৰাপ: শান্তিৰোষধয: শান্তি ৰনস্পতয: শান্তিৰ্ৰিশ্বে দেৰা: শান্তিৰ্ব্ৰহ্ম

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:- जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ব্ৰহ্মণসঁ প্ৰাৰ্থনা জে দ্যুলোকমে, অংতৰিক্ষমে, পৃথ্বীপৰ, জলমে, ঔষধমে, ৰনস্পতিমে, ৰিশ্বমে, সভ দেৰতাগণমে আ ব্ৰহ্মমে শাংতি হুঅয।

ওঁ-ব্ৰহ্মণ, দ্যৌ-সূৰ্য-তৰেগণ, অংতৰিক্ষ- পৃথ্বী আ দ্যূলোকক ৰীচ, আপ:-জল, ৰিশ্বেদেৰা- সভ দেৰতা, ব্ৰহ্ম- সৰ্জক।

ꡁ

ॐ, स॒हस्रंशीर्षा॒ पुरुंषः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्रंपात्।

ওঁ, স↓ হস্রা↑ শীর্ষা↓ পুরু↑ ষঃ। স↓ হ↓ স্রা↓ ক্ষঃ
স↓ হস্রা↑ পাৎ।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

স ভূমিং↑ Ẇ রি↓ শ্বতো↑ বৃ↓ ত্বা। অত্যা↑ তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু↓ লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः
सहस्रपात् ॥ सभूमिंसर्व्वतस्पृत्वा
त्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

प॒द्भ्यागँ् शू॒द्रो अंजायत॥

প↓ ড্যাগ্ঁ↑ শূ↓ দ্রো অ↑ জাযত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिश॒ः श्रोत्रा॑त्।

প↓ ড্যাং ভূমি↓ র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑ ↑ ৎ।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐 (Swastik)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम সিদ্ধিৰস্তু, সিদ্ধম Devanagari Anji)

Ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑓆



१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३६७ पर टिप्पणी

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१

दिल्ली साहित्य अकादमीक प्रख्यात मैथिली विभाग परामर्शदात्री समिति (२०२३-२०२८)

१० मे ६ ब्राह्मण + १ नव-ब्राह्मणवादी आ समानान्तर धाराक एक्कोटा गएर-सवर्ण लेखक नहि छथि, जे गत १५ बर्ख सऽ सीमित आर्थिक संसाधनक अछैत मैथिली लेल जान-प्राण अरोपने छथि। नचिकेता जीक ई परामर्शदात्री समिति एलिट अछि, आ ई अगड़ा-पिछड़ा दुनूक एलिट लेल काज करत, साहित्यमे जे एलिट छथि से कतिआयले रहता, राजदेव मण्डल जीक रचना जूरी बाड़ने छथि से बाड़ले रहत। समानान्तर धाराक साहित्तकार लोकनि लेल ई खतराक अलार्म अछि आ से हुनका दुन्ना काज करय पड़तनि।

लिस्ट:

उषाकिरण खान, सुभाषचन्द्र यादव, प्रमोद कुमार झा, देवशंकर नवीन, तारानन्द वियोगी, विद्यानन्द झा, रमण कुमार सिंह, अजय झा, वीणा ठाकुर, नचिकेता।

२

कला आस्वादन आ कला समीक्षा- सैद्धांतिक पक्ष

१

दिल्ली साहित्य अकादमीक प्रख्यात मैथिली विभाग परामर्शदात्री समिति (२०२३-२०२८)

१० मे ६ ब्राह्मण + १ नव-ब्राह्मणवादी आ समानान्तर धाराक एक्कोटा गएर-सवर्ण लेखक नै छथि, जे गत १५ बर्ख सऽ सीमित आर्थिक संसाधनक अछैत मैथिली लेल जान-प्राण अरोपने छथि। नचिकेता जीक ई परामर्शदात्री समिति एलिट अछि, आ ई अगड़ा-पिछड़ा दुनूक एलिट

लेल काज करत, साहित्यमे जे एलिट छथि से कतिआयले रहता, राजदेव मण्डल जीक रचना जूरी बाड़ने छथि से बाड़ले रहत। समानान्तर धाराक साहित्यकार लोकनि लेल ई खतराक अलार्म अछि आ से हुनका दुन्ना गतिसँ काज करय पड़तनि।

लिस्ट:

उषाकिरण खान, सुभाषचन्द्र यादव, प्रमोद कुमार झा, देवशंकर नवीन, तारानन्द वियोगी, विद्यानन्द झा, रमण कुमार सिंह, अजय झा, वीणा ठाकुर, नचिकेता।

२

कला आस्वादन आ कला समीक्षा- सैद्धांतिक पक्ष

१

नर्तकी (!) बा महिलाक मूर्ति (२५०० बी.सी.ई.)

भारतमे प्राचीनतम कलाकृति सिन्धु घाटी सभ्यतासँ प्राप्त सामग्री सभ अछि।

नर्तकी (!) बा महिलाक मूर्ति जे धातु (कांस्य) क अछि से मोहनजोदाड़ोसँ भेटल। कलाकारक नाम अज्ञात अछि मुदा उत्कृष्टतामे ई मोहनजोदाड़ोक कलाक परिणिति अछि। मोटामोटी चारि इंची ऊँच, दू इंची चाकर आ एक इंची मोट ई कलाकृति आइ-काल्हि राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्लीक सिन्धु घाटी सभ्यता गैलरीमे राखल अछि।



(साभार जो रवि, विकी CC-BY-SA-3.0)

कला आस्वादनक लेल आब देखी जे ऐमे की अछि जे एकरा उत्कृष्ट बनबैत अछि।

१.ई एकटा पातर दुब्बर महिलाक अनुकृति अछि।

२.महिला ठाढ़ अछि, वाम हाथ वाम जांघ आ दहिन हाथ डाँरपर पाछू दिश छै।

३.आँखि पैघ-पैघ छै।

४.केश औंठिया छै।

५.नाक थोपल छै।

६.महिला नग्न अछि मात्र गरामे कंठहार आ हाथमे चूड़ी देखा पड़ि रहल छै। वाम हाथमे २४ टा चूड़ी मुदा दहिन हाथमे मात्र ४ टा।

७.ककबा कएल केश पाछाँमे जूड़ी बान्हल छै।

८.माथ पाछाँ दिश उतान छै।

९.हाथ सापेक्ष रूपेँ नम्हर बुझि पड़ै छै।

ई महिलाक अनुकृति अछि, एकरा नर्तकी किए कहल गेल? की अहाँकेँ ऐमे महिला नर्तकीक कोनो टा लक्षण देखा पड़ैए? राष्ट्रीय संग्रहालय आ इतिहासक पोथी पतरा सभमे ई नर्तकीक रूपमे वर्णित भेटत जे पुरुष मानसिकताक परिणाम अछि जइमे महिला लेखिका रोमिला थापड़ जे मात्र इतिहासकार छथि, सेहो अपनाकेँ ओझरा लेने छथि। कला-इतिहास आ पुरातत्वक अध्ययन अछैत ऐ तरहक भ्रम उत्पन्न होइत अछि।

२

अजन्ताक पकिया रंगक राजकुमारी (२०० बी.सी.ई. सँ ४८० सी.ई.)

अजन्ताक एकटा गुफापर भित्तिचित्र (सभसँ पुरान चित्रकला) एकटा पकिया रंगक अतिसुन्दर राजकुमारीक चित्रण, जे गहना पहिरने अछि आ केशमे सेहो गहना छै।

३

खजुराहो (९५० सी.ई. सँ १०५० सी.ई.)

[खर्जुर (बिच्छू- वृश्चिकक संस्कृत)- एकटा अप्सरा अपन जांघ उघारि कऽ देखा रहल अछि जइपर वृश्चिक चित्रित छै, तही सँ खजुराहो नाम]।

रोमिला थापड़ एतुक्का कलाकृतिकेँ पलायनक कला कहै छथि। तेरहम शताब्दीक जयदेवक गीत गोविन्द सेहो रोमिलाकेँ नव लगै छन्हि। कलाक इतिहासकार आ पुरातत्वविद रोमिलाक गपसँ असहमत छथि। कला इतिहासकार देवांगना देसाइ कहै छथि जे योनि आ लिंग आर्येतर सभ्यतामे विद्यमान छल, वातस्यायनक काम सूत्र आ कालिदासक कुमारसम्भव खजुराहो आ गीत गोविन्दसँ बहुत पहिनहियेसँ अछि। ओ कहै छथि जे वृश्चिकक तुलना काम लोलुपता रूपी बिखसँ कएल जाइत अछि आ सएह संकल्पना अप्सराक जांघपर चित्रित अछि।

- Gajendra Thakur, editor, Videha (Be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be ad.0ded to the Videha WhatsApp Broadcast list.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.२.अंक ३६७ पर टिप्पणी

आशीष अनचिन्हार

संतोष राय बटोही जीक डायरी नीक जा रहल अछि। मुदा हुनकर उपन्यास मंगरौना कने पाछू चलि रहल अछि। आशा अछि जे ओ अपन उपन्यासकेँ शीघ्र पूरा करता।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

कला विमर्श विशेषांक

२.१.अटर-पटर, नाङट-उघार... शिव-शक्तिक पूजा लिङ-योनिक रुपमे

२.२.सोनी नीलू झा- आधुनिकताक परिवेश मे आधुनिक चित्रकला

२.३.संजू दास- कलाकृति मे अश्लीलता

२.४.गौरीनाथ- कुमार पवनक प्रसिद्ध कथा 'पइठ' क संग प्रकाशित संजू दासक कलाकृतिक सम्बन्धमे

२.५.मैथिलीक "उसने कहा था" माने कुमार पवनक दीर्घकथा "पइठ" (चित्रांकन संजू दास)

२.६.मुन्नी कामत- समकालीन चित्रकार संजू दास

२.७.मुकेश दत्त- अपन शैली आ तकनीकक बलेँ आधुनिक कला मे अलग पहचान बना रहलीह संजू दास

२.८.गोविन्द चन्द्र दास- कामसूत्र के बिना कोनो चित्र शैली नहि छैक-लोककला के साक्षात विश्वविद्यालय गुमनाम नायक कृष्ण कुमार कश्यप (आ शशिबाला)*

२.९.रवीन्द्र कुमार दास- परिवारक सहयोग सबसऽ जरूरी

२.१०.संजू दासक किछु बीछल कलाकृति

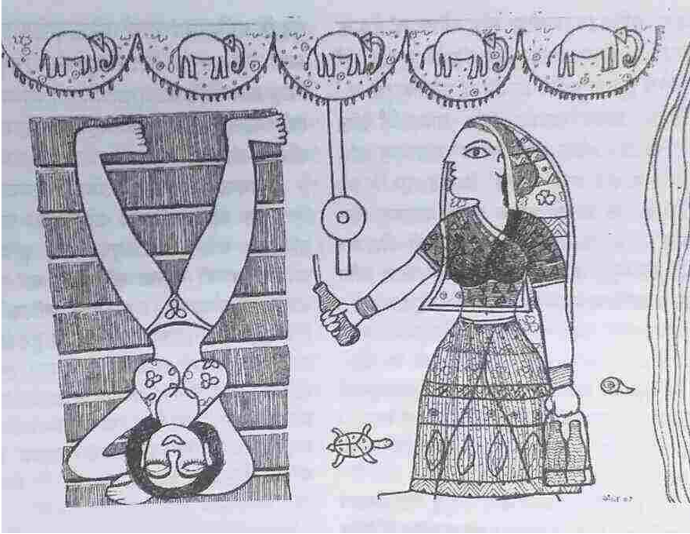
२.११.गजेन्द्र ठाकुर- कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला- एकटा परिचय

२.१२.जितेन्द्र झा, जनकपुर- मिथिला चित्रकला- नेपाल प्रसंग

२.१३.गजेन्द्र ठाकुर- श्वेता झा चौधरी- एकटा परिचय

२.१.अटर-पटर, नाङट-उघार... शिव-शक्तिक पूजा लिङ-योनिक रुपमे

अटर-पटर, नाङट-उघार... शिव-शक्तिक पूजा लिङ-योनिक रुपमे



परमेश्वर कापड़ि

ई अटर-पटर, नाङट-उघार, गंरि-मुडिया कलाकृति नइ, परम्परागत मिथिला आर्टक उत्तरआधुनिकता ओ वैश्विक कृति अइ, जेकरा सहाज आ गरहाज करैत सांस्कृतिक आयाम देब'मे परहेज करहि पडत !
(चित्र 'अंतिका' स' साभार)

राजेन्द्र बिमल

परम्परासँ खेलबाड!

परमेश्वर कापड़ि- राजेन्द्र बिमल -अधरम !

रंजू मिश्र

मनमौजी भ गेल छै सब।

परमेश्वर कापड़ि- रंजू मिश्र- बेपर्द

रोशन चौधरी
गरि-मुरिया।

बृषेश चंद्र लाल

हमरा लगैत अछि कलाकार किछु देखबए चाहैत छथि । एतए कदाचित् सम्पन्नताक दृष्टिमे आधुनिकता की थीक आ कोना ओकर सेवामे ओकरे इच्छा अनुसारक मांग समाजकेँ पूरएक बाध्यता बनि गेल छैक से देखबक प्रयत्न भेल अछि । हँ किछु आओर स्पष्टता रहितै त नीक छलैक ।

परमेश्वर कापड़ि- बृषेश चन्द्र लाल- बलधौसीके कतेक लेबा लगएबै मीता !

बृषेश चंद्र लाल
मीत, नव-नव कोण आबए दिऔक ने । आओर स्पष्ट आ विकसित होइक ताहिलेल सभ केओ प्रयास करी । हमर अर्थ ई नहि जे अटर-पटर, नाङटि, उघार होइक । हँ, ई जे मिथिला आर्ट परम्परागत चित्रकारीये टा मे सिमित नहि रहए । समय सापेक्ष अभिव्यक्तिक सशक्त माध्यम सेहो बनए ।

ईशनाथ झा
के शिरोमणि छथि एकर संपादक ?(अन्तिकाक)

मिथिलेश कुमार झा
निंदनीय

कुणाल

एहि चित्र के ल क ' परंपरा भंजन ' एवं अधर्म प्रभृति कहइत एहिठाम एवं अन्य परंपरा रक्षी लोकनि द्वारा बेस बात भेलए। चित्रकार एवं संपादक के नाम किनको नइ बूझल छइन।अथवा नाम लेला पर जिह्वा अशुद्ध हेबाक खतरा हेतइन। एहि चित्र के अंतिका छपने अइ।संपादक - गौरीनाथ । चित्रकार - संजू दास। आउटलुक पत्रिका मे संजू दास के साक्षात्कार छपल छइन। ओत अन्य चित्र क संग इहो चित्र छइ। चित्रकार कृष्ण कुमार कश्यप के कतिपय चित्र सब गीत गोविंद (जयदेव,) के पद सब पर आधारित छइन।कश्यप जी ओकरा कहियो सार्वजनिक नइ केलइन। कारण छइ इएह पोंगापंडित परम्परा रक्षी लोकइन जे स्वयं परम्परा क ज्ञान स रहित छइथ।

विजयदेव झा

कुणाल-कृष्ण कुमार कश्यप आप एहि धरती पर नहि छथि तैं हुनक नाम पर किछुओ झूठ चला दियौ। बामपंथ सदैव ओपन सेक्स चारित्रिक उच्चश्रृंखलताक पक्षधर रहल अछि। कलाक नाम पर सेक्स आ अश्लीलता पसारब बामपंथक चरित्र रहल अछि।

कुणाल- विजयदेव झा- झूठ दक्षिणपंथ क विशेषता छी ।वामपंथ हरदम सत्य क पक्षधर अइ आ रहत ।
कश्यप जी क चित्र हमर देखल अइ।
सेहो एसगर नइ, पूरा प्रोडक्शन टीम छल।

कुमार पद्मनाभ

एहि चित्र मे भारतीय परिधान मे कोल्ड्रिंक बेचैत स्त्री बेसी अश्लील अछि. नग्नता सबठाम खराप नहि होइत छैक. बिकनी स्वीमिंग पुल आकि बीच पर कोनो खराप नहि लागैत छैक. समस्या अछि जे नग्नता आधुनिकताक

द्योतक किएक? जखन कि आधुनिकता अम्बानीक बेटीक आ लक्ष्मी मित्तलक बेटाक विवाह मे बारीक बनैत छैक आ अम्बानी आ मित्तलक परिवारक घोघ तानने स्त्रीगण केँ खाना खुआबैत छैक.

सुनील कुमार मल्लिक

मिथिला चित्रक नव आयाम कहल जा सकैछ। एहिमे अश्लिलता देखनिहारके चश्मा बदलबाक चाही।

रामचंद्र झा

सुनील कुमार मालिक-न्न, एक्केबेर एना नहि कहियौ

परमेश्वर कापड़ि- रामचंद्र झा- यौ की कहू! छगुनाइत एहि दुआरे छी जे ऐ बतकटौवलि मुहचोथौवलिमे नग्नता मातृत्व आ बेनङनपन सहीमे अर्थवता आ दृष्टि-दर्शन नहि पौलक अछि । हमरासबे कालीमाइ, सहस्रबाहु संहारनी सीता नग्न होइतो (बेनङन नइ छैथ) पूज्य छथि! शिव-शक्तिक पूजा लिङ-योनिक रुपमे; तान्त्रिक ओ शक्ति उपासक योनी महाशक्तिक दर्शन करिते छथि ! सबके अवोधिया/शिशु बहिन बेटी बेपर्दे रहैछ ।तब ई घोल घोङहाउज !? ठाम गुणे कजर, कुठाम गुणे करिखा ! जाहिठाम वस्त्र आ लिङके कीटल झापन/पर्दाक सामाजिक सांस्कृतिक व्यवहार छै ओतए ई एहन सेक्स नग्नताक गप्प उठैछ त' ऐमे वेदमे छेद नइ हुअए चाही । बियौहती कनिञाके घोघट(लाज-लेहाज) पडैत जे छन्हि, से चर्म-चक्षुए नहि मनसा विचारके आवरण/ बर्जन सेहो रहैछ !! ई नगनता दृष्टि-दर्शन सापेक्ष अइ ।

सुनील कुमार मल्लिक- परमेश्वर कापड़ि- सही कहल सर

रामचंद्र झा

अहाँक विलक्षण विश्लेषणक समाहार तँ ठाम गुणे कहिए देलिऐ---! समरथ कहुँ नहिं दोष गोसाईं। रवि पावक सुरसरि की नाईं।। ई विधिसम्मत वाक्यक परिधि नंघबाक उपक्रम नहि हुअए सएह नीक।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२.सोनी नीलू झा- आधुनिकताक परिवेश मे आधुनिक चित्रकला



सोनी नीलू झा
आधुनिकताक परिवेश मे आधुनिक चित्रकला

मिथिलाक अनूठा चित्रकार छथि रविन्द्र दास जी आ संजु दास जी। जतय मधुबनी पेंटिंग चारु कात भेट जाएत हमरा अहाकें, ओतए हिनकर आधुनिक चित्रकला एकटा फराक शैली में भेटत मुदा बहुत कम देखैत होएब, से नहिए सन।

ई कला कोनो नव थिक से नहि अपना ओत लोक लेल नव भ' सकैछ। ओना जतय स्त्रीक मूक रहबाक परम्परा हो, ओहि ठामक ओहि परम्परा कें सभ्यता बुझनाहर लेल ई चित्र सभ अवश्य खटकतनि मुदा तखन, जखन ओ अर्थ बुझथिन।
आ जा धरि ओ लोकनि बुझताह/ बुझतीह ता धरि ई आधुनिक चित्रकला बहुत आगु ल' गेल रहतीह संजु जी, से विश्वास अछि।

एहि बीच, बिहार सरकार द्वारा आयोजित "बिहार म्यूजियम पटना" मे "हर महिला कुछ खास" प्रदर्शनी सेहो चलि रहल छैक। जतय दर्शक लेल एकटा अद्भूत प्रदर्शनीक केन्द्र बनल छनि हिनक चित्र सभ।

बिहार संस्कृति विभाग पटना सहित आर आन-आन क्षेत्र सँ हिनक कला कें पुरस्कृत कएल गेल अछि।
प्रत्येक क्षेत्र मे दर्जन सँ बेसी प्रदर्शनी मे हिनक सहभागिता छनि आ एकल प्रदर्शनी सेहो।
दर्जन भरि सँ बेसी मैथिली, हिन्दी पोथी,पत्रिकाक कवर पर हिनक बनाओल चित्र अपन स्थान सुनिश्चित कएने अछि।

कला कें कलाकार जँ अपन जीवनक अध्याय बना लैत अछि तँ ओकर चित्र बजैत अछि,अपन परिचय दैत अछि।
हँ ई सत्य गप जे ओहि लेल हमरा सभकेँ ओकर भाषा बुझबाक क्षमता होबाक चाही।

ओना तँ हिनका लोकनिक परिचय देबाक बेगरता नहि,
प्रख्यात कलाकार छथि लेकिन तैयो हमरा लगैत अछि जे
मिथिलाक लोक कें, कलाप्रेमी कें, हिनकर चित्रकला कें
कनेक अपन दृष्टि कें विस्तार क' देखबाक बेगरता अछि। "साहित्य,कला" कखनो अश्लील नहि होइत छैक अश्लील होइत छैक, नजरि आ सोच।

कतेको अवार्ड पुरस्कार सँ पुरस्कृत आ सम्मान कएल गेल छनि संजुजी आ रविन्द्र दास जीकें। हमरा गर्व होइत अछि हम हिनका आस-पास रहैत छी हमर अपन मिथिलाक छथि, हम एकदोसरकेँ चिन्हैत छी।

संजु जीक चित्र मे गामक परिवेश मे ग्रामीन स्त्रीक जीवन शैली भेटैत अछि, हिनक कलाक माध्यम सँ हुनका लोकनिक विचार बुझैत छी।
हिनक बनाओल बहुत रास एहन चित्र अछि जाहि चित्र कें हम सभ बैठक हॉल मे, सयनकक्ष मे,लगा सकैत छी।

सभसँ खुशीक गप जे एहि शैलीक चित्रक स्वप्रशिक्षित छथि एहि शैली मे चित्र बनाएब पुरुष प्रधान समाज मे ठीके एकटा चुनौती थिक। जतय सिखबैत हो सभ्यता मे, झांप-तोप आ अपन इच्छा कें दबा देबाक लेल,

ओहन समाज मे ओहि ठाम हिनकर चित्र अनघोल करैत अछि, बहुत रास गप कहैत अछि।

हमरा मोन अछि हम सभ एकटा
पुरस्कार प्रदान सभागार मे बैसल रही, हमरा बगल मे चित्रकला आदरणीय रविन्द्र दास जी आ संजु दास जी बैसल रहथि आ सामने मंचपर गंभीर विमर्श चलैत छल जतय, आदरणीय भैरव लाल दास जी संग आर भी बहुत गणमान्य व्यक्तिव सभ उपस्थित रहथि। हमरा प्रसन्नता भेल जखन सौ - दू सौ दर्शक आ स्रोता सँ भरल सभागार मे, आदरणीय गंगेश गुंजन जीक वक्तव्य चलि रहल छल सभ सुनि रहल छलथि, ई गप कतेक गोटेकें धिआन हेतनि से नहि कहि सकब। गंगेश गुंजन जीक कहब रहनि जे जखन कोनो कलाकार आ साहित्यकारकेँ अभिनय कला व लेखन लेल पुरस्कृत कएल जाइत छैक तँ अर्थक स्थान पर संजु दास आ रविन्द्र दास जी इशारा करैत ओ
संकेत केलथिन जे हमरा सोझां प्रसिद्ध चित्रकार बैसल छथि हुनका लोकनिक चित्र सँ सेहो पुरस्कृत कएल जा सकैछ। ई गप हुनकर ठीके बहुत दूरक आ गहींर गप छल। ई बात मैथिल लोककें मोन रखबाक चाहियैन।

एत' हम हुनक दुनू गोटेक गप कहय चाहब, रविन्द्र जी आ संजु जी,मिथिला मे एकटा नव चीज सिखबाक परम्परा ठाढ़ करैत छथि।

हमरा सभकें दोसर पेंटिंग सभ जकाँ आधुनिक चित्रकला सेहो सिखबाक, बुझबाक चाही।
दर्शक कैँ सेहो कला, चित्रकला बुझब, सिखब चाही,हम सभ तखने आलोचना आ समीक्षा करबाक योग्य बनब।
आलोचना आ समीक्षा सेहो आवश्यक मुदा तखने ने जखन बुझब,गुणब।

हमरा लगैत अछि मैथिली मिडिया लोकनिकेँ हिनका सभ
संँ साक्षात्कार करबाक चाहियैन। एहि सभ विषय पर

फैल सँ विमर्श होबाक चाहियै।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.३.संजू दास- कलाकृति मे अश्लीलता



संजू दास

कलाकृति मे अश्लीलता

सबस पहिने त हम ई बात फरिछा दी जे हमरो विचार अछि की कला ,साहित्य आ फिल्म मे रचनाकार के किछु स्वतंत्रता देल जेबाक चाही नहि त नव विचार आ नव कला परंपरा के विकास समाप्त भय जायत I सब कलाप्रेमी लोकनि सों हमर आग्रह जे कोनो कलाकृति मे अश्लीलता अछि की नहि तेकरा ओहि कलाकृति के विषय के मांग , आकृति के भाव भंगिमा आ कलात्मककता देखलाक बादे तय करू I एकटा आधुनिक कलाकार भेला के कारण हमर विचार स अश्लीलता मात्र एकटा विचार छियैक I जे ना एकटा गरीब के फाटल नुआ मे ओकर गरीबी देखाई दैत छैक मुदा किछु लोक के ओहि मे अश्लीलता सेहो देखाई छनि I भारत आ भारतीयता पर गर्व करैबला लोक राजकपूर सन फिल्मकार पर गर्व करैत छथि मुदा
हुनक फिल्म राम तेरी गंगा मैली मे मन्दाकिनी के अपन बच्चा के दूध

पियाबै काल मे किछु लोक के ओकर बेबसी देखाई पड़लै त किछु के अश्लीलता सेहो देखाई देलकनि l एखन धरि हम जे कला समाज स सिखलहुँ जे कला मे अश्लीलता नाम के कोनो विचार या कलाकृति नहि होइत छैक l जेना साहित्य मे पाठक तय करैत छथिन की कोन कलाकृति नीक छै आ की बेजाय तहिना कला मे दर्शक , कला समीक्षक आ बाज़ार l आब हमर प्रेरणा अमृता शेरगिल छथि से स्वयं अपन न्यूड चित्रण केने छलीह l आधुनिक कला के इतिहास मे कतेको नग्न चित्रण भेटत l बहुत रास भारतीय स्त्री कलाकार नग्न चित्रण करैत छथिन जेना अनुपम सूद अर्पिता सिंह ,मिथु सेन ,अंजलि इला मेनन l

आब अहाँ लोकनि सों एकटा सवाल कि गीत गोविन्द के अश्लील कहब ,विद्द्यापति के सब रचना के अश्लील कहब ,कोहबर के अश्लील कहब ,तंत्र कला के अश्लील कहब ,खजुराहो के अश्लील कहब एतबे नहि कतेक गैर सनातनी लोक त शिव लिंग के सेहो अश्लील कहैत छथि l सनातन धर्म के स्थापित करय बला शंकराचार्य ई कहि क जे अपनेक विषय अश्लील अछि मंडन मिश्र के स्त्री उभय भारती केँ मना नए केने रहथिन काम शास्त्र संवाद करय लेल l कृष्ण के बियाह त रुक्मिणी स भेल रहैन मुदा राधा कृष्ण नाम जपैत काल कोनो मैथिल लोक के मैथिल संस्कारक याद नहि अबैत छनि l चर्चित साहित्य खट्टर काका के तरंग मे सबस बेसी परंपरा के खिधांस कयल गेल छैक त कि ओ नीक साहित्य नहि l

हमर देश के चर्चित पत्रिका आउटलुक मे छपल किछु रेखांकन आ पेंटिंग मे मैथिल लोक के अश्लीलता देखाई दैत छनि मुदा ओकर विषय , भाव भंगिमा नहि , ओकर कलात्मकता नहि l एतय सबस पहिने हम अपन ओहि चित्र के चर्चा करय चाहब जेकरा एकटा साहित्यकार पद्मनाभ जी कला मे अश्लीलता कहि क सम्बोधित केलनि l एतबे नहि ओकरा ओ भगवती घर स सेहो जोड़ि के धार्मिक भावना भड़काबै के कोशिश केलनि l हमर चिंता मात्र ई अछि जे ओ बेसी पढ़ल लिखल विदेश मे नौकरी करय बला लोक छथि देश विदेश मे कतेको कलाकृति देखने

हेताह I ओहि चित्र मे गोआ तट पर विदेशी पर्यटक के कोल्डड्रिंक्स बेचैत एकटा स्त्री छैक I सनबाथ लेल बिकनी मे सुतल विदेशी स्त्री आ अपन आजीविकाक लेल कोल्डड्रिंक्स बेचैत मैथिल स्त्री I आइयो धरि बेसी लोक मिथिला पेंटिंग के मात्र देवी देवता के चित्रण बला परंपरागत शिल्प बुझैत छथिन एकटा कला नहि I जखन कि आब मिथिला पेंटिंग विश्व प्रसिद्ध कला थिक जाहि मे आठ टा स्त्री के पद्मश्री सेहो भेटल छनि I कोनो कला व साहित्य जा धरि समकालीनता के समावेश नहि करैत छैक ता धरि ओकरा मे जीवंतता नहि आबि सकैत छै I पुष्पा देवी ,संतोष दास ,अविनाश कर्ण ,अमृता झा आर कतेको नव कलाकार सब एहि बात के नीक जकाँ बुझैत छथि I हुनका जानकारी लेल हम बता दी जे सबस पहिने पद्मश्री गंगा देवी गैर पारम्परिक विषय सब के मिथिला कला मे जगह देलनि रोलर कोस्टर ,हॉस्पिटल के दृश्य ,ट्रेन के दृश्य ई सब हुनक गैर पारम्परिक विषय छलनि I पद्मश्री गोदावरी दत्त जे जीवन भरि पारम्परिक विषय बनबैत रहलीह एकटा अपन कलाप्रेमी ग्राहक लेल बुद्धा कार्निवाल सेहो बनौलनि I

कतेक मैथिल लोक कहैत छथि एकटा मैथिल भय क अहाँ मिथिला पेंटिंग कियैक नहि करैत छी I हम मैथिल छी त की मात्र मिथिले पेंटिंग करी , मॉडर्न पेंटिंग नहि कय सकैत छी I हमहू शुरुआत मे पारम्परिक मिथिला पेंटिंग करैत छलहुँ मुदा बियाह के बाद आधुनिक पेंटिंग करय लगलहुँ I आब हमर पेंटिंग मे आधुनिक कला आ समकालीन कला के विषयवस्तु आ तकनिकी सेहो देखाई देत I

किछु गोटे कहैत छथि आई धरि कोनो आन ख्याति प्राप्त कलाकार मिथिला पेंटिंग मे बिकनी पहिरल स्त्रीक चित्र नहि बनाओलनि. मिथिला पेंटिंग मे अहाँ जिनकर नाम सुनने छी ओ सब बूढ़ पुरान लोक सब छथिन पहिने मिथिला पेंटिंग मात्र पारम्परिक बनैत छलै मुदा आब किछु परिवर्तन भय रहल छैक जेना पुष्पा देवी ,अविनाश कर्ण ,संतोष दास I हमहू अपन रेखांकन मे कोनो मैथिल महिला के बिकनी मे नहीं देखाउने छी हमर चित्र जाहि मे अश्लीलता के आरोप लगाओल गेल अछि ताहि मे .गोआ समुद्र तट के दृश्य छै कोनो विदेशी पर्यटक के एकटा मिथिल

स्त्री कोल्डड्रिक्स बेचीं रहल छथिन l पलायन के शिकार मैथिल ललना मानसिक वर्जना के तोड़ि क अपन रोजगार मे लागल छथि l

अहीं सब जबाब दिय जे विदेशी पर्यटक की कम्बल ओढिक सनबाथ लेतीह ? असल मे लोक परम्परा के ताबीज़ जकाँ गर्दैन मे टांग नेने छथि परम्परा बनैत बिगरैत र हलैया उदाहरण के लेल जयमाल अपन सबहक परंपरा नहि छल मुदा आब समाज अपना लेलक l

अपन समाज मे आई जे नकली संस्कारवान लोक छथि ओ सब छद्म लबादा ओढ़ेने छथि l साहित्य, कला आ संस्कृति के नाम पर पुराणपंथी दुकान चला रहल छथि सबके कलई खुजि रहल छनि ।

सोसल साईट पर विरोध के हम सामान्य रूप मे लेलहुँ कियैक त कोनो रचनाकार के ई सब सहय के क्षमता जरूर हेबाक चाही l गीत गोविन्द , कालिदास आ विद्यापति के सौन्दर्य वर्णन पर बहुत लोक विरोध करैत छथिन । राजकमल चौधरी आ खट्टर कका के सेहो विरोध भेलै l

-संजू दास मो 9899242017

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.४.गौरीनाथ- कुमार पवनक प्रसिद्ध कथा 'पइठ' क संग प्रकाशित संजू दासक कलाकृतिक सम्बन्धमे



गौरीनाथ

कुमार पवनक प्रसिद्ध कथा 'पइठ' क संग प्रकाशित संजू दासक कलाकृतिक सम्बन्धमे

पन्द्रह साल पहिने 'अंतिका'क अप्रैल-जून 2008 अंक मे कुमार पवन क प्रसिद्ध कथा 'पइठ' क संग प्रकाशित संजू दास क कलाकृति पर जे टिप्पणी कयल जा रहल अछि ओकर संदर्भ मे किछु बात मिथिला संस्कृतिक तथाकथित रक्षक ऐ चित्र के लऽ कऽ कऽ रहल छथि ओ अत्यंत अफसोसजनक आ निन्दनीय अछि।

संजू दास हमरा लोकनिक समयक एकटा महत्वपूर्ण कलाकार छथि । संजू जी मे स्वस्थ आ गतिशील परंपराक प्रति जागरूक आ समृद्ध हेबाक अलाबे आइक बदलैत समय आ समाज के देखय आ परखय मे निपुण आधुनिक चित्रकारक नजरि छन्हि। हुनक चित्रक पाँति बजैत अछि, स्वस्थ मनुक्खक मोन केँ चिंतनशील बना दैत अछि

। निश्चित रूपसँ ओ स्वशिक्षित चित्रकार छथि, मुदा ओ एकटा कुशल कलाकार छथि, जिनकर कलाक राष्ट्रीय स्तरक कएकटा चित्रकार आ कला समीक्षक सराहना केने छथि। बहुत रास महत्वपूर्ण सम्मानसँ सम्मानित संजू जी क पेंटिंग प्रतिष्ठित राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा मे संग्रहित भेटत।

दरभंगा जिलाक कमरौली गाममे जनमल संजू जी स्नातक छथि। हुनक पेंटिंग कं छअ टा एकल आ दर्जन बेर समूह प्रदर्शनी कएल गेल अछि। राष्ट्रीय स्तरक पत्रिका, अखबार आ किताबमे ऐ सब पर चर्चा भेल अछि। नारीवादी दृष्टिक समर्थक संजूक मानब अछि जे आइयो महिलाकेँ समाजमे उचित सम्मान नै मिलल छै आर जाधरि ई सहज नै भऽ जेतै, ताधरि महिला अपन इच्छाक अभिव्यक्तिक तरीका ताकैत रहतै। आइक नारीक संघर्षक संग-संग हुनक इच्छाक अभिव्यक्ति हुनक चित्रकला मे भेटैत अछि ।

संजू जीक विवाह आधुनिक चित्रकार रविन्द्र कुमार दाससँ भेल अछि । दुनू गोटे बहुत विचारशील कलाकार छथि जिनका पर कोनो समाज गर्व महसूस कऽ सकैत अछि । एहन चित्रकारकेँ कलाक बिना बुझने हुनकर चित्र पर ओछ टिप्पणी करय वाला लोक अपनाकेँ लेखक-कवि-चित्रकार, मिथिलाक संस्कृतिक रक्षक कहि सकैत छथि, मुदा संवेदनशील स्तर पर हुनका सब पर मनुष्य हेबाक बात पर संदेह भऽ सकैत अछि।

'अन्तिका' क संपादकक रूपमे हम एकर निंदा करैत छी जे एहेन टिप्पणी करैत छथि आ सभ जिम्मेदार सोच बला मित्र सँ उचित हस्तक्षेपक अपेक्षा करैत छी।

संजू दास मिथिला संस्कृतिक तथाकथित रक्षककेँ आहत करयबला पेंटिंगक विषय मे कहैत छथि, "हम गोवा बीच क दृश्य देखलाक बाद ई ड्राइंग बनौने रही। मिथिलाक एकटा महिला विदेशी पर्यटककेँ कोल्ड ड्रिंक बेच/पड़ोसि रहल छथि। अर्धनग्न महिला बिकनीमे एकटा विदेशी पर्यटक अछि।" मतलब जे पलायनक शिकार मैथिल ललना भूगोलक

संग संग मानसिक वर्जनाक देवाल पार कऽ रहल छथि। अश्लीलता ऐ चित्रमे नहि, अधलाह विचारक लोकक नजरिमे अछि। अंग अश्लील नहि अछि आ ने ओकर चित्रण। जँ एहन रहैत तँ कोहबरक चित्र नहि बनैत।

(हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद आशीष अनचिन्हार)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.५.मैथिलीक "उसने कहा था" माने कुमार पवनक दीर्घकथा "पइठ" (चित्रांकन संजू दास)

मैथिलीक "उसने कहा था" माने कुमार पवनक दीर्घकथा "पइठ" (चित्रांकन संजू दास)

मैथिलीक "उसने कहा था" माने कुमार पवनक दीर्घकथा "पइठ" (साभार अंतिका) । हिन्दीक पाठक, जे "उसने कहा था" पढ़ने हेता, केँ बुझल छन्हि जे कोना अहि कथाकेँ रचि चन्द्रधर शर्मा "गुलेरी" अमर भऽ गेलाह। हम चर्चा कऽ रहल छी, कुमार पवनक "पइठ" दीर्घकथाक। एकरा पढ़लाक बाद अहाँकेँ एकटा विचित्र, सुखद आ मोन हौल करैबला अनुभव भेटत, जे सेक्सपीरिअन ट्रेजेडी सँ मिलितो लागत आ फराको। मुदा ऐ रचनाकेँ पढ़लाक बाद तामस, घृणा सभपर नियंत्रणकेँ आ सामाजिक/ पारिवारिक दायित्वकेँ सेहो अहाँ आर गंभीरतासँ लेबै, से धरि पक्का अछि। मुदा एकर एकटा शर्त अछि जे एकरा समै निकालि कऽ एक्के उखड़ाहामे पढ़ि जाइ। ऐ कथाक चित्र सभकेँ लिखलनि अछि लिखिया संजू दास- **सम्पादक**

दीर्घ कथा

पड़ठ

कुमार पवन

प्रायः एक युग बाद कुमार पवन फेर सँ लेखन मे सक्रिय भेल छथि। विगत शताब्दीक नवम दशकक शुरुआत सँ लेखन आंरभ कर'वला कुमार पवन मैथिलीक सुपरिचित कवि, कथाकार आ व्यंग्यकार छथि। किछुए कथा आ तीन चारि दर्जन कविताक बल पर मैथिली मे अपन फराक पहिचान राख'वला ई एक टा विशिष्ट कवि-कथाकार छथि। हिनक नव दौरक प्रारंभ एक टा यादगार दीर्घ कथा आ पाँच गोट कविताक संग भ' रहल छनि। प्रायः कतेको वर्ष सँ मैथिली मे एहन सशक्त कथा पढ़बा लेल नइँ भेटल अछि। हमरा विश्वास अछि जे मैथिलीक व्यापक पाठक वर्ग केँ ई स्मरणीय शुरुआत बुझेतनि।

—संपादक

अन्हार मे डुबैत खिरोइ...



मोन मे औनाइत जाहि बेचैनी केँ टारि देबाक फेर मे हम एत' प्रायः भागि क' आयल छलहुँ, से एखनहुँ कहाँ छोड़ि रहल अछि... ईंटाक पाया आ काठक गार्डरवला एहि जर्जर पुल पर ठाढ़ भ' नीचाँ लगभग सुखायल मिरतुक्की खिरोइ आ चारू दिस गर्द-गर्द भेल वातावरण केँ देखि मोन हल्लुक क' लेबाक आशा करब आब व्यर्थे बुझा रहल अछि...। खिरोइ, जे हमर गामक पूर्वी सीमान पर अदौ सँ बहैत हमरा लोकनि केँ एक टा परिचिति दैत आबि रहल अछि, आइ केहन दुब्बरि-पातरि सनटिटही सन भेलि अपन अस्तित्वक लेल संघर्ष क' रहल अछि, से देखनहि जानल जा सकैए। एक टा दीर्घ निसास छोड़ैत हम चारू दिस नजरि खिरबैत छी। सूर्य ढरकि चुकल छथि...। खूने खुनाम पश्चिमाकाश...। घुरिआयल परिवेश...। नहू-नहू उतरैत अन्हार...। आ अन्हार मे डूबैत खिरोइ...।

हम एत' की क' रहल छी? एखन तँ गाम पर रहबाक चाही। ओत' धमगज्जर मचल हेतै। कल्हुका भोजे तेहन रहै जे अजुका भोज लेल लोक सभ भोरहि सँ उत्साहित अछि। जटावला भाँगक पत्ती भोरहि मे फूलय लेल ध' देल गेल छलै। कमलू भाइक खास आग्रह छलनि। से छनि। गाम मे भोज रहौक तँ ओ दड़िभंगा मे अटकि नहि सकैत छथि। ओ काल्हिए दसबजिया ट्रेन सँ आबि गेल छलाह। उत्साहपूर्वक भनसिया सभक संग भरि दिन लागल रहलाह। वैह किऐ? बहुतो लोक आयल अछि। कॉलेजिया नवयुवक सभ। काल्हिए सँ हरित क्रांतिक योजना पर अमल भ' रहल छैक। भोर सँ फुलैत भाँग केँ मीजि-मीजिक' पाँच पानि सँ धोने हेताह शोभन...। सिलौट पर ताधरि पिसने हेताह जाधरि भाँग सिलौट ने छोड़ि देने हैत। भाँग मे देल गेल हेतै खीराक बीया, गुलाबक पत्ती, सौंफ, दछिनी, मरीच आदि-आदि कैक तरहक मसाला। वैन्यू छलै टीसन। नवीन झाक चाहक दोकान। कमलू भाइ साफ कहने छलथिन नवीन झा केँ, कोनो हालति मे दस किलो दूध राखय लेल। दूध-चीनीक संग घोरल गेल हैत भाँग। गिलास-पर-गिलास देने हैत सभ...। सबहक मोन आब गुनगुना चुकल हेतै...। एखन धरि तँ सबहक संपर्क भ' चुकल हेतै बाबा बौरहबा सँ—सोझे हॉटलाइन पर। आब तँ एक्कहि टा काज बाकी...।

सरबन बाबूक दलानक विस्तृत अगुअइत मे नोतल ब्राह्मण सभक जुटान भ' रहल हेतनि...। ओत' एखन हमरो रहबाक चाहैत छल...। आ हम एत' एहि पुल पर ठाढ़ छी...। की क' रहल छी हम एत'? सभ हमरा ओत' ताकि रहल हैत...। कमलू भाइ खास क' आ हम...? तखन सँ कतोक बेर गाम दिस विदा होब' चाहलहुँ अछि, मुदा डेगे नहि उठि रहल अछि...। हिम्मति तँ करहि पड़त...। सामाजिक बन्हन केँ अनठिया देब उचित नहि...। जाय तँ पड़बे करत...।

नदीक छरकी...लचका...जरलाहा पीपर... जेना-जेना गाम दिस बढ़ल जा रहल छी अन्हार आर सघनायल जा रहल अछि...। माल-जाल केँ चराक' बाध सँ घुरैत लोक सभ...। मंथर गतिएँ चलैत, पजुआहि करैत, महीस सभ आ ताहि पर बैसल चरबाह सभ सड़कक एक दिस सँ जा रहल अछि। सामने गाछी सभक पच्छिम रेलवे आ तकर ओइ पार गाम। गाछी आ बँसबारिक कारणेँ अन्हार आर घनगर बुझा रहल अछि। गाछी सभक विरल भाग द' क' इजोत हुलकी द' रहल अछि आ संगहि सुनाइ पड़ि रहल अछि जेनरेटरक फट्-फट्-फट् फट्... अनवरत...।

गाछी पार क' रेलवे लाइन पर चढ़ैत छी...। एतहि सँ स्पष्ट बुझाइत अछि—व्यापक ब्राह्मण समाज जुटि रहल अछि...। पुआरक सैकड़ो बीड़ा पंक्तिबद्ध राखल जा चुकल अछि...। बैसइ जइयौ केर आग्रह सुनबाक लेल उताहुल बूढ़-सेयान-बच्चा-बुतरु-छौंड़ा-छौंड़ीक भीड़...। भोज्य पदार्थ पर टूटि पड़बाक लेल सन्नद्ध अटाठट्ठ लोक...।

रेललाइन सँ सड़कक लभानी पर उतरि जहिना हम आगाँ बढ़ैत छी कि आग्रह भ' जाइत छैक। की रेलम पेल! लोक सभ बीड़ा लूझ' लेल टूटि पड़ैत अछि। केओ चारि-चारि टा बीड़ा लूझि-ओछा पलथी मारिक' बैसैत अछि तँ केयो बीड़ाक अभाव मे चप्पले पर आसन जमा लैत अछि। दब्बू प्रकृतिक लोक बीड़ाक लूटि मे पछुआ गेला संतां हारि क' चुकिए माली बैस जाइत अछि...। ओम्हर जे कनेक हमर-झाँटि-पर-झूलय-बड़का-बड़का-लोक वला लंठै सँ लैस अछि से बलजोरी सरबन बाबूक टाल सँ झीकि-झीकि पुआरक मोटका बीड़ा बना बैस जाइत अछि आ गर्व सँ गर्दनि तानि चारू दिस ताकि रहल अछि जेना कि कहि रहल हो, 'मर्दक

बेटा अछि क्यो तँ टोकि क' देखओ नेञ।' लोक फराके सँ हाँ...हाँ...क' रहल अछि परंच केक्कर हिम्मति छै जे समक्ष मे आबिक' रोकय...।

आब पात परसल जा रहल अछि...पुरइनक पात। अद्‌भुत! आब जखनकि प्राय: सभ भोज मे लोक दड़िभंगा वा पुपरी सँ पातक रेडीमेड प्लेट आ बाटी ल' अनैत अछि तखन पुरइनक पात? सरबन बाबूक हठ छलनि। खजुरबाराक पोखरि सँ आनल गेल छलै बोझक बोझ...। सरबन बाबूक तँ खाली हठ आ इच्छा छलनि। असल व्यवस्था सँ कयलनि राघव लला। से छनि। लोकक हुनका कमी नहि छनि...। बस एक बेर हाक देबाक काज...।

मुदा बाजय रसनचौकी...

से आब भोज शुरू भ' गेल अछि...। चूरा-दहीक भोज...। नहि-नहि, दही-चूराक भोज...। कहियो क्रेज रहै पक्की भोजक माने पूड़ी जिलेबीक भोजक। नामे सुनैत मातर बच्चा सभ किलोल करय लगैत छल...। स्त्रीगण अनेरे प्रसन्न भ' अपन नेना केँ कोरा मे ल' चुम्मा लैत पति केँ कनेडेरिएँ देखय लगैत छलीह...। पुरुखवर्गक तँ कथे कोन? परान्नं दुर्लभं लोके शरीराणि च पुन: पुन: केँ गीरह मे बन्हेने ओ लोकनि भाँगक पुरना पत्ती पीसि देबाक लेल कनिञाक निहोरा करय लगैत छलाह...। मुदा, आब ओकर क्रेज गेलै। आब के पुछैए पूड़ी-जिलेबी-तरकारी केँ? ओ तँ रहरहाँ होइते रहैत छै। आब तँ माघ नहाय से मर्द कहाय। माने जे दही-चूराक भोज क' पाबय से मर्द। बड़का-बड़काक ढोंढ़ी ढोल भ' जाइत छनि...। हँस्सी-ठट्ठा छै की? पसेरी भरिक' करेज होयबाक चाही। आ चाही मनीपावरक संग मैन पावर...। से आब लगैए, कनिञा काकीक दुनू बेटा मे एहि दुनू चीजक कमी नहि। दुनू बेटा पौरुष देखौलथिन अछि... आ से भरपूर देखौलथिन अछि...।

पौरुष तँ ओ लोकनि देखबिते रहैत छथि। आब ओही दिनुका बात लिय' ने। अरे, सरझप्पी दिनुका। अस्थिसंचयक बाद श्राद्धक हेतु योजना बनाब' लेल गामक पागधारी लोकनिक बैसार भेल छलनि...। सरबन बाबू दुनू भाँइ ओना तँ एक दोसरा सँ कटल-कटल रहैत छलाह...। एक गोटे ईर घाट तँ दोसर वीर घाट! परंच एखन दुनू गोटे अपना केँ एक टा विशेष प्रकारक अपराध भाव सँ समाने रूपेँ दबल अनुभव क' रहल छलाह। लागि रहल छलनि जेना कि पतिया लागल होनि। पतिया लागब की होइत छै, से ओ लोकनि नेनपने मे देखि चुकल छलाह। जकरा हाथेँ खुट्टा पर बान्हल गाय-बड़द मरि जाइत छलै तकरा गरा मे मरल पशुक-जउड़ लटकौने प्रायश्चित हेतु घरे-घरे दयनीय मुद्रा मे मौन रहि भीख माँगैत देखि चुकल छलाह...। आइ दुनू भाँइ अपना-अपना केँ किछु ओहने सन स्थिति मे पाबि रहल छलाह...। एम्हर पागधारी नक्षत्र मंडली विचार क' रहल छल—

"श्राद्ध कोन होअय?"

"वैदिकी?"

"पंचदान?"

"के बजलाह पंचदानक नाम? बजबाक गति नहि अछि तँ कम-सँ-कम चुप तँ रहू। अहाँ केँ ई नञि बूझल अछि जे शास्त्रक अनुसार वैदिकी श्राद्ध भेने मुइनहार केँ पइठ होइत छनि? आ सरबन बाबू दुनू भाँइक कोनो हाड़ हिलैत छनि? कथीक अभाव छनि?"

"हँ यौ! अभाव किऐ रहतनि? दोसर, प्रतिष्ठो किछु अर्थ रखैत छैक कि नहि? प्रखंड भरिक कोन गाम मे के नहि चिन्हैत छनि सरबन बाबू केँ?"

"आ राघवेजी कोन कम छथि?"

"हँ! से तँ ठीके! कोन गामक नवयुवक नहि चिन्हैत छनि राघव केँ?"

"असल मे चिलमक सम्बन्धे ततेक विस्तृत होइत छैक...।"

"फेर...। की बाजि देलहुँ अहाँ? जखन मुँह खोलब बुड़ित्वे बोकरब। भतृहरि कहने छथि...।"

"आब भतृहरि केँ एखन रहय दियनु। ट्रैक सँ हटै नहि जाइ जाउ।"

"ठीके कहैत छी। उचित तँ यैह जे वैदिकी होउक।"

"हँ...हँ...। वैदिकीए होउक।...की सरबन बाबू?"

जगमगाइत नक्षत्र मंडलीक मध्य सकुचायल सकपंज-निष्प्रभ बैसल सरबन बाबूक बुद्धि जेना हेरायल सन भ' गेल छलनि। आब जेना झुकल माथ उठयबाक अवसर आ बाट देखाइ पड़ि रहल छलनि...। कनेक महग अवश्य छलै, मुदा दोसर उपाये कोन छलनि...?

"ठीक छै। हमरा दिस सँ हर्ज नहि। कनेक राघवजी सँ सेहो पूछि लियनु।"

"कि राघवजी?"

सबहक नजरि राघव लला पर आबि स्थिर भ' गेल रहनि। धुआँयल मुखाकृति... झड़कल-झड़कल। कारी झामर ठोर...। तमाकुलक योग सँ गनगनायल गाँजाक लाली प'ल उठबिते आँखिक डिम्हा सँ हुलकी देब' लागल रहनि...।

"ठीके छै। जे सबहक विचार से हमरो...।"

आब भोज। नक्षत्र मंडलीक अनुभवी पाकशास्त्री सभ उनटि-पुनटि क' एहि मुद्दा पर विचार करय लगलाह...। खूब घमर्थन भेल...। अन्तत: निर्णय देल गेल—

"एकादशा दिन यदि संभव होअय तँ तुलसी फूल वा कनकजीर वा करिया कामोदक पुरना अरवा चाउर। जँ से उपलब्ध नहि भ' सकय तँ बासमती तँ अबस्से होअय। फेर राहड़िक दालि...सात टा तीमन...बड़, बड़ी, पापड़, दही, चीनी, सकड़ौरी आदि-आदि।"

"आ द्वादशा दिन पूड़ी-जिलेबीक भोज की करबह हौ सरबन! जखन एतेक भेबे केलै तँ बनियाँवला भोज की करबह। ओहुना कनिञा काकीक भोज लेल सबहक मोन टाँगल छै...। से दही-चूराक करह। भगलपुरिया कतरनी चूरा... कम सँ-कम चारि बेर अहगर क' छल्हिगर दही...चीनी...डालना...तीलक अँचार...आलुक अँचार...नोन-मिरचाइ आ अंत मे बुनियाँ...की?"

"ठीक छै ने सरबन बाबू?"

"मुदा, इस्टीमेट?"

"बनाब' हौ गोपाल। तों तँ हिसाब-किताब मे माहिर छह। बड़का कक्का आ भुटकुन बाबा सँ पूछि लहुन। आ अहूँ लोकनि विचार-सहयोग दियनु मास्टर साहेब आ नेता जी...।"

एस्टीमेट बनल। श्राद्ध आ भोज दुनू मिलाक' प्राय: डेढ़ लाखक! सरबन बाबूक हवा गुम्म आ राघव लला सटकदम्म...।

"की सरबन बाबू, भेल ने?"

सरबन बाबू दुनू भाँइ केँ चुप देखि ठीकेदार साहेब केँ नहि रहल गेलनि, "एना चुप किऐ छी? टकाक दिक्कति अइ? ई दिक्कति कोनो दिक्कति छै? असल बात तँ ई जे अहाँ सभ चाहैत की छी? जँ चाहैत छी तँ व्यवस्था भ' जेतै। हम कोनो समाज सँ बाहर थोड़े छी? आ जँ अवसर पर काज नञि आबय तँ धन बेकार। कथी? सधयबाक चिन्ता? भक्क! अरे माय-बाप फेर घुरिक' नहि अबैत छथिन। ओ पुत्र केँ जन्म कथी लेल दैत छथिन? एही लेल ने जे पुत्र समय पर पुरुषार्थ देखाबय? एहन श्राद्ध करय... एहन ब्रह्मभोज करय जे उद्धार क' देअय... स्वर्गक फाटक फोलि देअय। आ से अवसर उपस्थित अछि अहाँ सभक समक्ष। आब आवश्यकता अछि पुरुषार्थ देखयबाक।"

"ठीके तँ कहैत छथि भाइ। बेसी सोचल नहि जाओ। अरे, समय पर पाइ आपस क' सकबनि तँ बेस, नहि तँ टीसन लग सड़कक कात महक जे दसकठवी गाछी अछि सैह लिखि देबनि भाइ केँ। ओहुना आब गाम महक जमीनक प्रति मोह बेकारे। गाछिओ तँ उजड़िए गेल अछि...।"

ठीकेदार साहेबक मुंशी भोगी झाक मंतव्य नीक जकाँ बूझि रहल छलाह सरबन बाबू। गँजेड़ी

राघव बूझय वा नहि। जमीनक ओइ टुकड़ी पर बहुत दिन सँ नजरि छनि ठीकेदार साहेबक। ओ ओत' मार्केट कॉम्पलेक्स बनाब' चाहैत छथि। सामान्य स्थिति रहैत तँ सरबन बाबू ठीकेदारक एहि कूटनीतिक चालिक जबरदस्त जवाब दित'थनि...। मुदा, एखन तेहन ने उलंग फँसल छथि जे कोनो आन बाटे ने सूझि रहल छनि। के देत डेढ़ लाख रुपैया? जे देत से बदला मे किछु-ने-किछु चाहबे करत। निःस्वार्थ मदति आब के ककरा करैत छै? कम-सँ-कम ई समय पर द' तँ रहल अछि। सरबन बाबू चारू दिस तकलनि...। सबहक दृष्टि मे एक्के टा आग्रह। हँ कहि दियौक ने। सपूत बनू...अपन नाम कैँ सार्थक करू...!

"हम तँ तैयार छी। मुदा, एक बेर राघव जी कैँ सेहो पूछि लियनु।"

"की राघव जी?"

ठीकेदार साहेब आ हुनक मुंशी भोगी झा कैँ बेछिल्ले बाँस धाँसि देबाक योजना मोनहि मोन बनबैत आ तत्काल स्थगित करैत राघव लला कैँ प्रश्न सुनितहि लगलनि जेना केओ हुनक पौरुष कैँ ललकारि रहल होनि। क्रोध बाट बदलि क' सरबन बाबू पर केन्द्रित भ' गेलनि—

"देखै जाइ जाउ। हम कोनो मउगीक साया मे घुसिया क' रह'वला मर्द नहि छी। सभ कैँ अपन फिकिर कर' लेल कहियौ। राघव मर्द अछि आ मर्द वला बात कहत। आ मर्दवला बात वैह अछि जे लागय से देआइ, मुदा बाजय रसनचौकी...।"

पित्त तँ सरबन बाबूक सेहो लहरलनि, मुदा गरा मे उतरी तँ हुनके छलनि। दबा गेलाह...।

अजेय योद्धा सभक पराक्रम...

से आइ द्वादशाक जबरदस्त भोज भ' रहल अछि...। लगैए पूरा गाम उनटि आयल अछि...। हाथ जोड़ि क' सबहक स्वागत करैत दुनू भाँइक आग्रह, "मोन भरि खाइ जाउ। जे वस्तु जतेक चाही से लिय'। कोनो वस्तुक कमी नहि।" कमी किऐ रहतै? ठीकेदार साहेबक सहयोग देखि भरि गामक युवक लोकनिक उत्साह फरकि उठल छलनि...। संगहि सहयोग छलनि भमरपुराक सोगारथ यादवक।

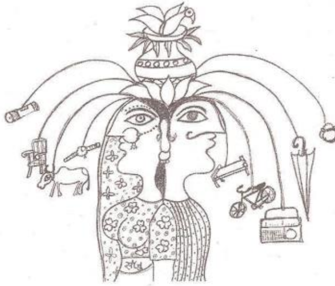
सोगारथ यादव। सरबन बाबूक परम मित्र। प्रखंड राजनीतिक संगी। ढढ़िया, मिल्की, खजुबारा, भभरपुरा, खेरिया टोल, राढ़ी माने ई जे परोपट्टाक सभ गाम छनि मारल गेल...। महिसबार सभ कैँ सोझे बथाने पर जा पकड़लनि सोगारथ बाबू, "हौ भाइ सभ, साल भरि तँ देहातक दूध एकत्र क'...पानि मिला...ड्राम मे भरि...विदाउट टिकट जनता ट्रेन सँ जाक' दड़िभंगा मे बेचिते छह...चानी कटिते छह...। कहियो क' किछु पुण्यो कमाबह। बस चारि दिनुका दूध दएह। बूझ' जे हमरे दैत छह। चारिम दिन एक-एक टा पाइ गनबा लएह...।" सोगारथ यादवक निशाना कतहु खाली जानि। ततेक ने दूध भेलै जे सय तौला...नहि-नहि, तौला नहि खोर मे पौरल गेल दही...।

"अढ़ाइ सय खोर...।"

"तँ तोरा माने की? अट्ठारह मन अरवा चाउर आ बीस मन चूड़ा खयनिहार गाम मे एहि सँ कम मे की होइतै?"

से दुनू भाँइक आग्रह जे मोन भरि खाइ जाउ आ कामना करै जाउ जे कनिञा काकी कैँ पइठ होइन...। पंक्तिबद्ध आसन जमौने भोज खयनिहार सभ...। एक टा पाँति पच्छिम मुँहे तँ दोसर पाँति पूब मुँहे...। एहिना तेसर पाँति पश्चिम मुँहे तँ चारिम पाँति पूब मुँहे...। सम्मुखक दू पाँतिक बीच मे बारिक लोकनि कैँ अयबा-जयबा लेल रस्ता। एत' सँ ओत' धरि पाँति-पाँति मे कुम्भकोपरिदधिचिपटान्नशर्करालवणव्यंजनानिम-धुराणि च सँ जूझैत लोक सभ...। चलैत मुँहक चपर-चपर...। बारिक लोकनिक 'ई लाबह हौ', 'ओ लाबह हौ' केर गुंजित स्वर...। सघन भ' गेल अन्हार सँ लड़ैत जेनरेटरक पचासो ट्यूब-लाइट...जगमग...जगमग...सभ किछु जगमग...।

समाजक पैघ-पैघ नाकवला लोकसभ मे अपना कैँ अग्रगण्य बुझनिहार अल्लाँ बाबू आ फल्लाँ बाबू लोकनि पहिल खेप मे नहि बैसलाह अछि। ओ लोकनि दोसर वा तेसर खेप मे बैसताह। एखन तँ ओ सभ पाँति सबहक मध्य मे टहलैत कखनहुँ भोज खयनिहार सभ सँ दहीक स्वाद वा डालना मे नोनक मात्राक मादे पूछि रहल छथि, तँ कखनहुँ बारिक लोकनि कैँ कोनो खास जगह पर खास वस्तु ल' क' पहुँचबाक निर्देश उछालि रहल छथि...।



मूड़ी गाड़ि तन्मय भ' भोजनलीन लोक सबहक लगन देखि जेना...जेना किछु मोन पड़ि रहल अछि...। हँ...कनिञे काकी कहैत छलीह खिस्सा...। मैथिल सभक भोजनपटुताक मादे सुनि इंद्रक घमंड फड़कि उठल रहनि। बड़का भोजन भट्ट छथि मैथिल सभ तँ हमरा ओतय आबथु। हम नोत दैत छियनि। हमर व्यवस्थानुरूप भोजन क' कय देखाबथु तँ हम इन्द्रासन हारि जायब। स्वीकार करताह? अप्पन पसिन्नक क्षेत्र मे आबि फँसल शत्रु कैँ देखि जेना योद्धा कैँ हँसी लागि जाइत छै तहिना उर्ध्व अहंकारी देवराजक एहि मूर्खतापूर्ण चुनौती पर मुसकिया देलनि मैथिल लोकनि। स्वीकार क' लेल गेल चुनौती...।

परंच इन्द्रो तँ पक्का खिलाड़ी छलाह। भोजक जबरदस्त आयोजन कयलनि। अपार खाद्य-सामग्री। मुदा, आहि रौ बा! ई की? परम्परानुसार सम्मुख पाँति बनाक' बैसल मैथिल लोकनिक दहिन हाथ पर काँखि सँ ल' क' पहुँचाधरि बाँसक फराठी राखि जउड़ सँ लपटि क' बान्हि देल गेलनि। आब भोजन क' देखाबथु...। मुदा वाह रे मैथिल! ओ मैथिल केहन जे कोनहु परिस्थिति मे भोजन क' कय नहि देखाबय? सम्मुखक पाँति सभ कनेक लगीच घुसुकि आयल आ आमने-सामने बैसल मैथिल लोकनि एक दोसरा कैँ एक-दोसराक पात पर सँ खाद्य-सामग्री ल' बिनु दहिन हाथ मोड़ने खोआबे लगलाह...। जल पीबाक लेल वाम हाथ तँ मुक्त छलनिहेँ। इन्द्र चारू नाल चित्त! भोजनोपरान्त गर्वित मैथिल लोकनिक समक्ष ठाढ़ नतशीश इन्द्र अपन इन्द्रासन ग्रहण करबाक निवेदन कयलथिन...। मैथिलक उदार गर्वोक्ति भेलनि, "इन्द्रासन अपनहि राखल जाओ। हम सभ ल' क' की करब? मुदा, स्मरण रहय जे पुनः हमरा लोकनिक भक्षण-सामर्थ्य कैँ चुनौती देबाक भूल नहि होअय। ई हमर सबहक क्षेत्र थिक। एहि क्षेत्र मे हम सभ अजेय छी।..."

से आइ एक कात मे ठाढ़ हम एहन अजेय योद्धा सभक पराक्रम देखि रहल छी...। नजरि भोजस्थलक कात मे पाँति सभक छोर पर स्थित सड़क दिस जाइत अछि...। ओत' समाजक दीन-हीन वर्गक महिला, पुरुष, छौंड़ा, छौंड़ी

सभ अलम्यूनियमक थारी आ बट्टा नेने प्रतीक्षा मे ठाढ़ अछि...जे कखन लोक सभ भोजन समाप्त क' कय उठत आ ओकरा सभ केँ अघायल लोकक अँइठ उठयबाक अवसर भेटतै...। भूखक मारल लोकक एहि भीड़ मे सेहो कैक टा छोट-छोट वर्ग छै...। अपना सँ तथाकथित निम्न वर्गक लोक केँ कनेक फराके रहबाक निर्देश देबाक प्रकृति एहू वर्गक लोक सभ मे छै—से स्पष्ट देखाइ पड़ि रहल अछि...।

पच्छिम भर अकास मे लौका लौकब शुरू भ' गेलैए। नहू-नहू मेघ ऊपर उठि रहल अछि...। रहि-रहि क' लौकति लौका भोज खयनिहार आ खुयनिहार दुनू पक्ष केँ कनेक हड़बड़ा देलक अछि। किछु गोटे लोक सभ केँ शांतिपूर्वक भोजन करबाक आग्रह क' रहल छथि। लगैए इन्द्र फेर आइ गड़बड़ी पर उतारू छथि...।

ओम्हर गाम भरिक एकत्रित कुकुर सभ आपस मे कटाउझ क' रहल अछि। कटाउझ मे जे कुकुर हारि जाइत अछि से कनेक हटि क' विचित्र विलम्बित स्वर मे भूक' लगैत अछि... जेना कानि रहल हो...। ओह! ओहने सन...। जेना ओहि राति कानि रहल छल...। ओहि रातुक सघन निस्तब्धता केँ चीरैत कुकुर सभक रुदनक ओ थरथराइत बिझायल छुरी...।

आगि-पानि-लोह-पाथर...

ओही रातुक बाद आयल छल ओ जेठक एक टा पचपचायल भोर...। उसीन क' राखि देब'वला तौसायल कारी रातुक बादक ओ भोर...।

साँझहि सँ सड़ल गुमकी छलै...। पसेना-पसेना देह...कखनो सुखयबाक नाम नहि...। ऊपर सँ लाखनि सँ भरल डबराक मच्छरक प्रकोप...। एम्हर-सँ-ओम्हर दौगैत...गुम्हरैत...भूकैत...कनैत कुकुर सभ...। एक्को रत्ती चैन नहि...। छटपट-छटपट करैत राति बहुत नहू-नहू बीति रहल छल...। कखनो-कखनो डबरा महक जलमुर्गी सभ चियों-चियों क' उठैत छल। ककरो चैन नहि...। कोना होइतै? जेठ खतम होब' मे प्राय: छओ दिन रहि गेल रहै परंच बुन्न पड़बाक नाम नहि...। भरि दिन अकास सँ आगि बरिसैत छलै आ साँझहि सँ जे बोकर' लगैत छल पृथ्वी छेहा तौस से राति भरि उसिनाइत रहैत छल प्राणिमात्र...। पता नहि कहिया बुन्न पड़तै...?

हम ठेकानि नहि सकलियै जे कतेक राति भेल हेतै...। प्राय: डेढ़...नहि दू...। कनेक पुरबा सिहकलै...। पसेना सँ भीजल देह ठंडायल आ प'ल भरिआय लागल...। कुकुर सभक तेज झौहटि सँ निन्न टूटल...। एतेक किऐ लागि रहल छै...? भक्क! कुकुरो के कोनो ठेकान छै? जरूरी छै जे कोनो चोरे केँ देखि क' भूकल होअय? भ' सकैए दोसर टोलक कुकुर पर नजरि पड़ल हेतै कि शुरू भ' गेल हैत...। सोचैत-सोचैत फेर प'ल भरिआय लागल...। कखन बरखा अयलै...हम किछु नहि बूझि सकलियै...।

जेना एक टा झटका खाक' निन्न टूटल होअय...। बाहर सड़क दिस गुलगाल भ' रहल छलै...। क्रमश: तेज होइत...। कोठली सँ बाहर दलान पर अयलहुँ। भोर भ' चुकल रहै मुदा एखन सूर्योदय हेबा मे किछु विलम्ब रहै। हमर घरक पूब द'क' जे रेल लाइन गेल अछि—दखिन-पूब सँ उत्तर-पच्छिम दिस—तेम्हरे लोक सभ जा रहल छल...। की बात छै? हम किछु आगाँ बढ़लहुँ...। ओकील ककाक दलान पर किछु लोक ठाढ़ भेल रेल लाइन दिस इशारा करैत बतिया रहल छलाह...। हुनकर सभक तर्जनी केँ पाछाँ करैत हमर नजरि देखलक जे रेल लाइनक आस-पास किछु महिसवार, हाथ मे लोटा नेने 'पोखरि दिस' जयबा लेल बहरायल, किछु भलेमानुस आ ज'न-बोनिहार केँ अढ़यबाक लेल विदा भेल, किछु कृषक लोकनि विस्मय आ दु:खक मुद्रा मे बहस क' रहल छथि...। एतेक फरकी सँ बात बूझब कठिन छल...।

"की भेलैए?" हम पुछलियै।

"लगैए क्यो कटि गेलैए।"

"के?"

"हौ, हमरा तँ लगैए जे काल्हि मैट्रिकक रिजल्ट बहार भेलै। कहाँदन बड्ड खराब रिजल्ट भेलैए। अबस्स कोनो फेल केलहा छौंड़ा कटि गेल हेतै।"

"नहि हौ, कोनो विद्यार्थी नहि रहल हेतै ओ। आइ-काल्हि ट्रेनक छत पर चढ़बाक बड्ड चलन भ' गेलैए। ओही मे सँ कोनो अगत्ती टपकि पड़ल हेतै।"

"ई अहाँ कोना कहैत छियै भाइ? ईहो तँ भ' सकैए जे कोनो तड़िपिब्बा वा गँजपिब्बा औंघरा गेल हैत रेल लाइन पर...आ...।"

जतेक मुँह ततेक बात। ओम्हर ओकील कका एहि सभ सँ निरपेक्ष मनोयोगपूर्वक अपन बड़द केँ सानी खुआ रहल छलाह।

"की कका, के कटि गेलैए?"

"पता नहि!" ओ हमरा दिस तकबो नहि कयलनि। नादि पर नजरि गाड़ने रहलाह। हुनक ई निरपेक्षता हमरा कनेक विचित्र जकाँ लागल। लागल जे हिनका जरूर बूझल छनि। कदाच् जानि-बूझि क' अपना केँ कोनो काज मे ओझरा क' रखने छथि। हम रेल लाइन दिस बढ़लहुँ।

"हौ बौआ, तों ओम्हर नहि जाह। तोहर करेज एतेक मजगूत नहि छह...बर्दाश्त नहि हेतह...।" ई हमर माय छलि जे पता नहि कखन सहटि क' पाछाँ-पाछाँ एत' धरि आबि गेल छलि।

"तों चिन्ता नहि कर। हम तुरंत आबि जायब। आ हमरा किछु नहि हैत। आब हम दस वर्खक ओ समीर नहि छी जे शोणित देखिक' रद्द भ' जायत।", हम आगाँ बढ़ि गेल छलहुँ।

हमर पाछाँ-पाछाँ लछमी सेहो ओही दिस जा रहल छलि। ओकर यैह रस्ते छलै। एही द' क' ओ नित्त हीरा बाबूक ओत' बर्तन-बासन कर' जाइत छलि। सामने सँ पप्पू आबि रहल छल। पूछलियै तँ ओ कहलक, "एतेक तँ निश्चित अछि जे कोनो स्त्री कटल अछि। पैघ-पैघ केस छै। हमर हिम्मत नहि एलाउ कयलक जे लग जाक' देखियै। देखै नञि छियै जे ककरो लग जयबाक साहस भ' रहल छै? सभ दस हाथ फटकिए सँ देखि रहल अछि...आ देखिक' अपन-अपन बाट ध' रहल अछि...। एहन भयानक दृश्य नहि देखल भाइ...। हमर तँ मोन कोनादन क' रहल अछि...। हमरा जाय दिय'...।" पप्पू घर दिस बढ़ि गेल।

तावत लछमी हमरा सँ आगाँ निकलि रेल लाइन पर घटनास्थल लग पहुँचि चुकल छलि...। आगाँ बढ़ैत हम देखलहुँ जे ओ पुरुष सभक गोल केँ चीरैत भीतर गेलि...। "अरे बाप रे बाप! दैबा रे दैबा! ई की भेलै रे दैबा। कनिञा काकी अय कनिञा काकी! ई की कयली अय कनिञा काकी?", लोकसभक गोल मे घेरायल लछमी भोकरि रहलि छलि...। ओ देखाइ नहि पड़ि रहलि छलि, मुदा ओकर करुण-तीक्ष्ण स्वर गूँजि रहल छलै...। आब कोनो संदेह नहि रहि गेल छलै...। हम लपकलहुँ...। गोल मे पैसलहुँ...। हे भगवान! हिला क' राखि देब'वला भीषण वीभत्स दृश्य छल...।

कनिञा काकी, ओ कनिञा काकी, जे वृद्धावस्था दिस डेग बढ़ा चुकलाक बादो सबहक लेल कनिञे काकी छलीह...जे बाट पर चलैत काल एना लगैत छलीह जेना धरती सँ पूछि-पूछि क' डेग बढ़ा रहलि होथि...। जे धरतीए जकाँ सर्वसहा आ अन्तर्मुखी छलीह...जे प्रत्येक जूड़शीतलक भोरे टोल भरिक नवयुवक लोकनिक चानि ठंडा देब' लेल बासि जलक लोटा नेने आबि जुमैत छलीह...। जे तिला सँकराँति दिन सभ केँ ताकि-ताकि क' तिल-चाउर हाथ मे थमा दैत पूछैत छलथिन, "बौआ तिल बहब' ने?" से कनिञा काकी आइ रेलक पटरीक आस-पास रोड़ा सभक ढेर पर खंड-खंड भेलि छिड़िआयल पड़लि छलीह...। ओह! हे भगवान!

रेलक पुबरिया पटरीक ओइ पार दुनू टाँग...दुनू पटरीक बीच मे धड़ आ पछबरिया पटरीक एहि पार मुंड...। आन-आन अंग जत' छिड़िआयल छलै ओतहि मुंडक स्थिति कनेक

विस्मयजनक! लगैत छलै जेना केओ ठोढ़ीक नीचाँ सँ सटाक' घेंट कटने होइक आ ओरिया क'रोड़ाक ढेर पर राखि देने होइक—उर्ध्वमुख। मुंडक केस माथ सँ एकदम सटल छलै...। चँछायल पीयर चेहरा पर सामने देखैत पथरायल निर्जीव निर्वाक आँखि मे उदासी जेना जमि गेल हो...। केम्हरो सँ कोनो कोण सँ देखतियै तँ हरायल आँखि जेना सोझे अहीं केँ देखैत अनुभव होइत...। उपरका चारि टा दाँत निचला ठोर मे धँसल...। आश्चर्य! शोणितक दर्श नहि...। लगैए बरखा बाद मे आयल रहल हेतै...। धोल-पखारल लहास आर भयावह लागि रहल छलै...।

आनन-फानन मे खबरि पसरि गेलै। कनिञा काकीक दुनू पुत्र आ पुतोहु माथ-छाती पीटैत आबि चुकल छलथिन। दुनू भाँइ रेलवे पर ओंघरा-ओंघरा क' कानि रहल छलाह। ओम्हर दुनू देयादिनी सेहो छाती पर दुहत्थड़ मारैत घ'ना क' रहल छलीह...। लछमी आब दुनू केँ सम्हार' पर लागलि छलि...। बहुत कारुणिक दृश्य छलै...।

आब जखनकि स्थिति प्राय: स्पष्ट भ' चुकल छलै तँ त्वरित निर्णय लेब' मे माहिर लोक सभक विचार भेलनि जे एहि सँ पहिने कि थाना मे खबरि होइक आ गुंडा बैंकक मैसेन्जर जकाँ दारोगा सदल-बल आबि जुमय, दाह संस्कारक काज सम्पन्न क' लेल जाय...। एक बेर जँ लहास छाउर भ' गेल तँ फेर दारोगा की क' लेत? चलू आब जे भेलै से भेलै। शीघ्रता करै जाउ...।

फेर जल्दी-जल्दी मे लोक सभ लहासक टुकड़ी सभ केँ बीछि-बीछि क' बोरा मे ठुँसलक...खाट पर लादि उठौलक...मटिया तेलक कंटर लेल गेल...बाड़ी-झाड़ी मे जे बाँस-राहठ भेटलै से उठबैत गेल...आ भागल श्मशान। आनन-फानन मे डेढ़-दू घंटा मे कनिञा काकी केँ फूकि-फाकि क' सुड्डाह क' देल गेलनि...। पँचकठिया फेंकलाक बाद कठियारी सभ बाधे-बाधे बढ़ल...खिरोइ दिस...धूर पकड़ने...आगाँ-पाछाँ...पंक्तिबद्ध। ''देखै जाइ जइह'। सम्हरिक'। दोसराक पयर पर पयर नहि लाग'। ...आ केओ गोटे घुरिक' तकिह' नहि। अकाल मृत्युक मामिला छै...नहि तँ अपनहि बझिह'...।'' बड़का कक्काक निर्देश केँ सभ चुपचाप सुनि लेलक...। कुल्लम पन्द्रह गोटे तँ रहबे करी। दुनू भाँइ सरबन बाबू आ बाकी हम सभ तेरह गोटे। ककरो मुँह फोलबाक साहस नहि भ' रहल छलै...। जोश मे, संस्कार मे सम्मिलित होयबाक लेल, आबि तँ गेल छल लोक मुदा आब एक टा विशेष प्रकारक अदंक करेज केँ दलकौने छलै...। सभ खेते-खेते धूर पकड़ने जा रहल छल...। सड़क पकड़बाक साहस नहि भ' रहल छलै। यदि पुलिस आबि गेल होइक तखन...? ओना नेता



जी सोझे मोटरसाइकिल सँ थाना भागल हेताह। सरबन बाबूक आग्रह पर भमरपुरा सँ सोगारथ यादव केँ सेहो संग क' नेने हेथिन। एक नम्बरक खच्चड़ अछि चौकीदार। तुरंत साइकिल सँ थाना लेल विदा भ' गेल हैत। मुदा नेता जी तँ मोटर साइकिल सँ गेलाह अछि। ओ अबस्स पहिनहि पहुँचि गेल हेताह...। तथापि यावत् ओ घुरिक' नहि अओताह तावत् की कहल जाय...।

कतेक समय भेल रहल हेतै? बेसी-सँ-बेसी दस...। मुदा बरखाक बाद स्वच्छ भ' गेल अकास सँ एखनहि तिक्ख रौद बरस' लागल छलै। लागि रहल छलै जेना चानि चनकि जेतै...। सभ गोटे एक टा गाछी मे विलमि गेल। केओ ककरो सँ नजरि नहि मिला रहल छल...। वर्तमान प्रसंग पर केओ चर्च नहि करय चाहैत छल। अनर्थक भीषण विशिष्टता आ मात्रा केँ सभ अटकारि रहल छल। दाह-संस्कारक गैर-कानूनी पक्षो केँ सभ जानि रहल छल...। ''चलै जाह हौ। शीघ्रता करै जाह। आब सोझे खिरोइ पर!''

जेठक कड़कड़ायल रौद मे लहालोट भेलि खिरोइ पस्त पड़लि छलि...। धार कहाँ छलै...। एक तँ ओहिना प्रतिवर्ष बाढ़िक संग आयल बालू सँ भथैत-भथैत ओ उत्थर भ' गेल छलै। दोसर एहि साल एखन धरि ठीक सँ बरखा कहाँ भेल छलै...। पुलक दक्खिन एक टा पैघ सनक खाधि मे जे जल छलै सैह...बाकी कतहु जलक निशान नहि। खाली नामे टा धार...। रातुक बरखा सँ पेटी महक बालुका-राशि जँ भिजलो रहल हेतै तँ से आब एखन हालक नाम नहि। एखनहि बालु उड़ि रहल छलै...। भोरे जे महिसबार सभ महिस केँ धोबाक क्रम मे खाधि महक जल केँ घोंकने छल से एखनो साफ नहि भेल छलै। ...ओहिना घोर मट्ठा। ओही जल मे सभ गोटे नहाइत गेल...। कनिञा काकी केँ तिलांजलि देलक...। पन्द्रह टा लोक तिल बहि देलक कनिञा काकीक...।

घुरैत काल हम बाट मे सोचैत रही...। की तिल बहबाक यैह अर्थ होइत छै? नजरिक समक्ष लोक तरसैत रहओ...तड़पैत रहओ...बेल तरक मारल बबूर तर जाइत रहओ...अनुचित अवांछित कलंक आ दंश सहैत रहओ...मुदा समय पर केओ कल्ला अलगाब'वला नहि...सभ अपना-अपना मे लिप्त आ जखन ओ टूटि जाय...टूटिक' छिड़िया जाय तँ ओकरा फूकि-फाकि क' सुड्डाह क' दियौ आ एक चुटकी तिल माथ पर ल' डुबकी द' दियौ...बस भ' गेलै तिल बहब...। तिल बहबाक अर्थ आर की होइत छैक?

कारी मड़र सूचना ल' क' आयल छल जे नेता जी आपस आबि गेलाह अछि। सभ टा मैनेज भ' गेलै...। चिन्ताक कोनो बात नहि...। सूचना द' ओ नरौछ लेल विदा भ' गेल...। महापात्र केँ सेहो खबरि करबाक छलै ने! मैनेज भ' गेलै। माने ई जे आब कोनो डर नञि। निधोख गाम जायल जा सकैत छल। तथापि पता नहि किएक कठियारी लोकनिक समूह मूड़ी गोंतने सड़क धयने गाम दिस जा रहल छल। खेत मे काज करैत ज'न-बोनिहार सभ ठमकि क' पन्द्रहो पराक्रमी व्यक्तिक समूह केँ देखि रहल छल...मुदा हमरा सभ मे सँ केओ एम्हर-ओम्हर देखय नहि चाहैत छल...। पता नहि के किछु पूछि देअय! रौद बड्ड तिक्ख भेल जा रहल छलै...। सबहक फेर चानि चनकय लागल छलै...। ओम्हर पता नहि किएक एक टा टिटही बड्ड व्याकुल स्वर मे टिटिया रहल छल...।

सरबन बाबूक आँगन मे राखल आगि-पानि-लोह-पाथर केँ छुबैत काल देखल जे टोल भरिक स्त्रीगण सभ जमा छलीह आ दुनू देयादिनी ओंघरिया दैत चिकरि-चिकरि क' लयात्मक ढंगें कानि रहलि छलीह...जेना कोनो हृदयविदारक करुण गीत गाबि रहलि होथि...। गीतक प्रत्येक पाँति मे श्रद्धेया सासु माक विशिष्ट दुर्लभ गुण आ ताहि सँ आब सदाक लेल वंचित भ' जयबाक अफसोसक मर्मस्पर्शी वर्णन आरोह-अवरोहक संग भ' रहल छल...। कोनहु सहृदय केँ द्रवित क' देबा मे समर्थ एहि रोदनाक यथेष्ट प्रभाव त्वरित-रुदन मे प्रवीण जनी-जाति सभ पर स्पष्ट गोचर भ' रहल छल...। ओ सभ कनितो छलीह आ दुनू देयादिनी केँ भरोस तथा साहस रखबाक परामर्शो द' रहल छलीह...। सघन उदासी आ करुण स्वर केँ अनुभव करैत कठियारी सभ आगि-पानि-लोह-पाथर छूलक...। कर्ता दुनू भाँइ केँ छोड़ि सभ अपन-अपन आँगनक लेल विदा होइत गेल...।

नवारी दुःख कि बुढ़ारी दुःख...?

''जय हो...जय हो...महो-महो भ' गेलै...'' दही तेबारा परसल जा रहल अछि। जे चुक्की मारने छलाह से पलथी मारि लेलनि अछि आ जे पलथी



मारने छलाह से चुक्की मारि लेलनि अछि। आसन बदलि क' सभ दही सुड़कि रहल छथि...।

"अरे के खुअबैत अछि आइ-काल्हि, एतेक हृदय खोलिक'?"

"कनिञा काकी छलीह मुदा भागमंत!"

"आह! ताहू मे कोनो संदेह? एहन सपूत सभ केँ जन्म देनिहार भागमंत नहि तँ आर की कहल जयतीह?"

"देखियनु पुण्यक प्रताप जे मर' सँ पहिने ककरो सेवा करबाक कष्टो देलथिन?"

"हँ यौ ठीके कहैत छी। एक तँ उत्तरायणक समय, दोसर मृत्यो कोना क्षण मे क्षणाक भेलनि। कोनो कष्टो तँ नहि भेलनि...।"

एक कात मे ठाढ़ हम चौंकि पड़ैत छी...। मोन होइत अछि जे किछु बाजी। मुदा, एखन बाजिक' लाभे की? आ ई टिप्पणी तँ मगन मोनक असहज टिप्पणी अछि। एहि पर प्रतिक्रिया की करब? आ कोन फूसि कहलकै? ठीके ने कहलकै...। की कष्ट भेल हेतनि...? दू सँ चारि मिनट मे सभ समाप्त...। नहि! हुनका कष्टे कहिया भेलनि? यदि भेलो होनि तँ ककरो कहलथिन नहि...। कहबो कयलथिन तँ कष्टक मादे नहि—निसाफ करय लेल...आ से...।

ओहि दिन अंत्येष्टि-संस्कार सँ घुरल रही। आँगनक मुँह पर माय भरि लोटा जल, नीमक पात आ ललका सुखायल मिरचाइ राखि देने रहय। मिरचाइ केँ दाँत सँ काटि...थुकड़ि...नीमक पात चिबा जल सँ कुरुड़ कयलहुँ आ पयर धोलहुँ। चापाकल पर जाय फेर सँ स्नान कयलहुँ...। जाह! दतमनि तँ आइ करबे नहि कयलहुँ...। कखन करितहुँ? छोड़! कोन भोजन करबाक अछि? ककरा धँसतै? मायक करेज! ओ किछु खा लेबाक हठ करय लागलि रहय। ओकरा टारय लेल अनेरे कनेक कठोर होइत हमर कंठ अवरुद्ध भ' गेल रहय आ आँखि मे नोर सेहो ढबढबा गेल रहय...। कहुना ओ अपन हठ छोड़ि देलक। हमरा ककरो सँ गप्प करबाक मोन नहि होइत रहय। ...एहि मन:स्थिति मे जखन हम अपन कोठली मे आबि पड़ल रही तखन कनिञा काकीक एहि अनपेक्षित आ भीषण परिणति पर सोचैत-सोचैत लागि रहल छल जे माथ फाटि जायत...। ई होयबाक नहि चाहैत छलै...। काकी एतेक दुर्बल तँ नहि रहलीह कहियो...। किछु सुनल आ किछु देखल छल जे जिनगीक हिंसक आँखि मे आँखि गड़बैत कनिञा काकीक मुखाकृति पर कहियो संभावित पराजयक आशंकाक लेशो धरि नहि झलकल छलनि...। तखन ई काज? कहीं एहन तँ नहि...?

एतनी टा रहथिन कहाँदन जहिया व्यास कका बिआहि क' अनने रहथिन हुनका। हुनका सँ पैघ तँ जाउत-जइधी सभ छलथिन। साड़ी धरि नहि सम्हारि पबैत छलीह। बेर-बेर लटपटाक' खसि पड़थि। जाउते-जइधी सभ नाम देलकनि—कनिञा काकी। फेर तँ सभक ओ कनिञे काकी बनि गेलीह। नेनपन मे हमरा आश्चर्य लागय जे हम तँ हुनका कनिञा काकी कहिते छियनि हमर बाबूजी सेहो सैह कहैत छथिन। ई कोना भ' सकैत छै? ई तँ पछाति जा क' स्पष्ट भेल रहय जे वस्तुत: टोलक संबंधे ओ हमर बाबुए जीक काकी लगथिन। जेँकि हमर घरक बगलवला आँगन मे ओ रहैत छलीह तेँ सभ केँ कनिञा काकी कहैत देखि हमरो वैह कहबाक अभ्यास भ' गेल रहय। हमरे किऐ? देओर-भैंसुर केँ छोड़िक' प्राय: सभ केँ सैह अभ्यास भ' गेल छलनि...।'

दाइ (दादी) कहैत छलीह जे कनिञा काकी पाँच बहीन छलीह। भाइ एक्को टा नहि। दरिद्र पिता बड्ड स'ख सँ नाम रखने रहथिन, जानकी। ओ पाँचो बहिन मे सभ सँ पैघ छलीह। अपना पाछाँ चारि गोट बहिन केँ ल' अनबाक दोखी छलीह। खिसिआयलि माय सदिखन दुरजरु कयने रहैत छलथिन, "अलच्छी! केहन जरल भाग ल'क' आयल जे...।"

जानकीक जीवन-संघर्ष छठमे वर्ख मे प्रारंभ भ' गेल रहनि। पिता भोरे स्नानक बाद शालिग्राम पूजन क' निकलि जाइत छलथिन जजमानक गाम। वंशी चौक लग भीष्मक टोलक वासी श्यामानंद पुरोहित केँ जजुआर गाम धरि नित्य पयरे जाय पड़ैत छलनि। हुनक दिनचर्या चारि बजे भोर सँ शुरू भ' जाइ छलनि...आ संगहि दिनचर्या शुरू भ' जाइ छलनि जानकीक...। भोरे उठिक' फूल लोढ़ब...पूजाक बासन माँजब...ठाँव करब...। आ तकर बाद मायक काज। रतुका अपैत-अँइठ बासन सभ माँजब...। घर-आँगन बहारब...चूल्हि नीपब...तरकारी काटब...चाउर बीछब...। एतेक भेलाक बाद माय तँ लागि जाइत छलथिन भानस-भात मे...एम्हर छोट-पैघ काज सभ जानकीए केँ कर' पड़ैत छलनि—जेना इनार पर सँ जल भरि क' आनब...छोट-छोट बहिन सभ केँ सम्हारब...। घरक लगे मे प्राइमरी स्कूल रहनि तथापि ओ कहियो स्कूलक मुँह नहि देखि पौलीह...।

जानकी केँ दू गोटे सँ भरपूर सिनेह आ वात्सल्य भेटलनि...। एक तँ पिता बड्ड मानैत रहथिन। नाम रखने रहथिन जानकी, मुदा आवेशेँ कखनो वैदेही तँ कखनो मैथिली कहि सेहो सोर करथिन। दोसर गोटे छलथिन बड़की पितिआइन। गाम भरि मे कथकहिनी आ गितगाइनक रूप मे प्रसिद्ध। कनेक कड़गड़ सुभावक। मायो अपन एहि बड़की देयादिनी सँ कनेक डेराइत छलथिन। तेँ जानकी पर तनल बड़की काकीक स्नेह-सुरक्षा-क्षत्र केँ देखि मोनहि मोन सुनगैत तँ बड्ड छलीह, मुदा प्रकटत: लहकि नहि पबैत छलीह। कनिञे काकीक मुँहें हम सुनने रही जे गीत गयबाक लूरि आ जितिया, सप्ता-विपता, बड़साइत, मधुश्रावणी आदिक कथा कहबाक आकर्षक-मोहक ढंग ओ अपन ओही बड़की काकी सँ सिखने रहथि...।

हुनका स्परण नहि रहनि जे नेनपन मे कहियो कनिञा पुतरा, सतघरा वा कितकित खेलबाक अवसर भेटल होनि। जनमिते परिस्थितिक हाथेँ वयस्क बना देल गेल छलीह। धूआ बालिकाक आ मोन वयस्कक। प्राय: एगारह वर्खक रहल

हेतीह तँ पंचपुत्रीक पिता केँ हुनक बिआहक चिन्ता सवार भेलनि...। जजमान परमेश्वर ठाकुर लग चर्च कयलथिन तँ किछु दिनुका बाद ओ कहलथिन, "मुरैठ मे हमर पिसियौतक टोल मे एक टा लड़का छै। दू भाइक भइयारी। पैघ भाइ विवाहित। छोट कुमार छै। कनेक पंडित प्रकृतिक अछि। सत्यनारायण पूजन, मूड़न, उपनयन, बिआह करा लैत अछि। देख'-सुन' मे बड़ बेस। थोड़ेक जमीनो छै। यदि पसिन्न होअय तँ हम प्रयास करी। हम जनैत छी जे अहाँ केँ कँचाक दिक्कति अछि। तँ चिन्ता नहि कयल जाओ। बिआह रातुक खर्चो देया देब...। श्रीविहीन संत्रस्त श्यामानंद पुरोहित केँ लागल रहनि जेना केओ थापड़ मारने होनि। मुदा निरुपाय ओ 'बेटी बेचना' कहयबाक संभावित कलंक केँ अवधारैत जानकीक बिआह क' देलथिन। आ एहि तरहेँ बालवधू बनि जानकी उर्फ कनिञा काकी एहि गाम मे अयलीह...।

मायक उमिरक जेठ देयादिनी आ सिनेही पतिक छत्रछाया मे कनिञा काकीक जीवनक ई नव अध्याय पहिलुके अध्याय जकाँ छलनि। फेर वैह कड़ाचूर मेहनतिक दिनचर्या...निरन्तर...। प्राय: बारह बर्खक बाद देयादिनी केँ लाग' लगलनि जे भीन होयब जरूरी छनि। हुनको सँ बेसी हुनक पुतोहु सभ केँ। निरन्तर कलहक परिणति अन्तत: भीन-भिनाउज मे भेलै। जेठ जन जेठांशक नाम पर नीक-नीक खेत-पथार सभ चुनि लेलथिन। कनिञा काकी छटपटा क' रहि गेलीह...। मुदा, पैघ भाय केँ पिताक आदर देनिहार धैर्यक धनी व्यास कका हुनका एतबे कहथि, "अहाँ किछु नहि बाजू। भगवान पर भरोस राखू। सभ ठीक भ' जेतै।"

आर की कयलनि कनिञा काकी? अप्पन मेहनतिक अतिरिक्त भगवाने पर तँ भरोस कयलनि। कड़ाचूड़ मेहनति क' अपन गृहस्थी केँ सम्हारलनि। तीन साढ़े तीन बीघा जमीन... बाढ़िक मारल। उपजाक नाम पर नामे लेल अन्न...। कने-मने पड़िताइ सँ होइत पतिक आमदनी...। एहन स्थिति मे गृहस्थीक गाड़ी ससरब मोश्किल रहनि। किछु करब जरूरी छलनि। हारिक' लाज-धाक केँ ताख पर रखलनि ओ। बड़की काकी सँ सीखल विद्या काज देलकनि। अँगने-अँगने जाक' कथा-पिहानी कहब...गीत गायब...दनौरी, तिलौरी, चरौड़ी पाड़ि देब...अहिपन-पुरहर-कोबर लिखि देब...धान-गहूम फटकि-बना देब आदि-आदि काज सँ किछु आमदनी भ' जाइत छलनि...। गाड़ी कहुना क' ससर' लागल रहनि।

ओहि दिन कोठली मे पड़ल-पड़ल हमरा आँखिक आगाँ कथा कहैत कनिञा काकीक छवि नचैत रहल...। गोर दपदप छौंकी सन छरहर धूआ...छूरी सन पातर ठोर...कनेक भरल-भरल गाल...पैघ-पैघ किछु बजैत जीवन-रस सँ भरल आँखि...अँउठिया केस...कुल मिलाक' सोहनगर चेहरा...। हुनका कहियो हम लहक-चहक वला कपड़ा पहिरने नहि देखलियनि...। भ' सकैए कम उमिर मे पहिरने होथि। मुदा, हुनक जे पुरान-सँ-पुरान छवि हमर मानस मे अंकित अछि ओहि मे एक्को टा एहन नहि अछि जे ओ एकपढ़िया छोड़िक' कोनो दोसर साड़ी मे होथि...। जजमनिका मे कहियो काल पति केँ ढंगगर रंगीन साड़ी भेटि जाइन तँ पेटी मे जोगा क' सैंति लैत छलीह—ई सरबन बाबूक कनिञा लेल...ई राघव जीक कनिञा लेल...आ ई गुंजाक लेल...।

अप्पन इच्छा-अभिलाषा-लालसा केँ अनठियबैत दबवैत भोर सँ राति धरि अखंड मेहनति करैत ओ कोनो तरहेँ अपन घर केँ सम्हारैत रहलीह...पाइ-पाइ केँ जोड़ैत रहलीह ...आ संतान सभ केँ पढ़यबाक प्रयास करैत रहलीह। बड़का बी.ए. क' ट्रेनिंग कयलथिन आ हाइ स्कूल मे शिक्षक बनि गेलथिन। अध्यापन सँ बेसी प्रखंडक राजनीति मे रुचि लैत अनौपचारिक रूपेँ सक्रिय रहनिहार सरबन बाबू केँ आइ के नहि चिन्हैत छनि? छोटका राघव मुदा दिशा भटकि गेलथिन। हाइए स्कूल मे रहथि कि गामक गँजेड़ी सभक संपर्क मे आबि गेलाह। पढ़ाइ मे कम आ चिलम सँ एक बीत ऊँच धधरा उठाब' मे बेसी मोन लाग' लगलनि...। मैट्रिको नहि क' सकलथिन। एखन ठीकेदारी मे लागल रहैत छथिन। बेटी गुंजा बेस चंसगर रहथिन। फर्स्ट डिवीजन सँ सप्तम बोर्ड कयलथिन, तथापि बेटी रहथि। इच्छा रहितो पाँच किलोमीटर दूर कमतौल बालिका उच्च विद्यालय मे पढ़य नहि जा सकलीह...। आब तँ सासुरो बसना कतोक बर्ख भ' गेलनि...।

नहि जानि कनिञा काकी हमरा एतेक नीक किऐ लगैत छलीह? भ' सकैए हुनक वत्सल सुभाव हमरा अपना दिस टनैत होअय। खाहे कोनो आन कारण होइक, मुदा हमरा हुनका सँ पटैत खूब छल। हुनका सँ नहू-नहू स्वर मे कोनो लोकगीत वा कोनो कथा सुनब हमरा बड्ड नीक लगैत छल। एकर अतिरिक्त हुनक नेनपनक स्मृति हुनके मुँहेँ सुनैत हमरा लगैत छल जेना कोनो रहस्यमय प्रदेशक यात्रा क' रहल होइ...। एहन प्रसंग मे कखनो क' हुनक जीवन-संघर्ष आ वर्तमान मानसिक स्थितिक झलक सेहो भेटैत छल...। जेना-जेना धिया-पूता सभ पैघ भ' रहल छलनि...पढ़ि रहल छलनि... तेना-तेना हुनका लाग' लागल रहनि जे आब किछु बर्ख आर! तकर बाद सभ किछु ठीक भ' जायत। सबहक दिन फिरै छै। सभ दिन कतहु दुक्खे होइ? सप्ता-विप्ताक कथा मे सेहो रानी सँ पुछने रहथि देवी, "नवारी दु:ख लेबैं कि बुढ़ारी दु:ख? दु:ख तँ कोनहु हालति मे भोगहि पड़तहु। अपराध भेल छौक तोरा पति सँ। मुदा, तोहर आत्मा छौक शुद्ध। तेँ इच्छा पूछि रहल छियौक। बाज! नवारी दु:ख लेबैं कि बुढ़ारी दु:ख?", देवीक प्रकोप सँ भयभीत रहितहुँ रानी बुधियारी सँ सोचैत विनम्र-चिंतित स्वर मे चयन कयने रहथि, "नवारी दु:ख तँ सहियो लेब मुदा बुढ़ारी दु:ख तँ सहलो ने जायत।" सप्ता-विप्ताक कथा मे रानी केँ तँ 'तथास्तु' कर आश्वस्ति भेटि गेल रहनि, मुदा कनिञा काकी केँ? ओ स्वयं कहैत छलीह, "बौआ, हमरा लगैत रहय जे आब किछु बर्ख आर... जीवनक अभिशप्त दीर्घ कालखंड बीतय वला अछि...। मुदा, कहाँ जनैत रही जे कथा कथा छैक आ जीवन जीवन...। कहाँ जनैत रही जे बसात केँ मुट्ठी मे पकड़बाक प्रयास...!!"

सत्ते! कनिञा काकी कहाँ जनैत रहथि जे फसिल लगा क' संभावित उपजाक सपना देखैत मिथिलाक कृषक लोकनिक सपना जेना प्रतिवर्ष बाढ़ि मे बहि जयबाक लेल अभिशप्त छनि, तहिना हुनको सपना मात्र सपने भ'क' रहि जयबाक लेल अभिशप्त छनि...। से जनितथि तँ जेठ पुत्र केँ शिक्षक बनैत आ छोट केँ पेट्टी कान्ट्रेक्टरक रूप मे आगाँ बढ़ैत देखि एक टा मृगतृष्णा मे नहि फँसितथि...।

पोता-पोती केँ तेल मालिश करैत...स्नान करबैत...सुग्गा कौर, मैना कौर खुअबैत...रंग-बिरंगक खिस्सा-पिहानी सुनबैत ओ निरंतर मगन रह' लागल छलीह। आब तँ हुनका एक्के टा लालसा छलनि। बस...किछु दिन नीक जकाँ सुख भोगि ली...। आ तकर बाद सिऊँथ मे सेनुर नेने आँखि मूनि ली...। सुनिक' एक दिन कतेक कातर भ' उठल रहथिन व्यास कका...। जेना कोनो बच्चा केँ अपन माय सँ बिछुड़ि जयबाक आशंका त्रस्त क' देने होइक...।

प्राय: सत्तर वर्षक एहि बच्चा केँ की कहल जाय? दिन-राति जानकी-जानकी रटैत रहयवला ई बच्चा कोना रहि पाओत हमरा बिना? एगारह बर्खक उमेर सँ ओ देखैत आबि रहल छथि अपन एहि बच्चा केँ। दुनियादारी सँ प्राय: अनवगत ई बच्चा कथू लेल कहियो चिन्तित नहि भेल। किछु जरूरी होइक तँ जानकी! कतहु सँ घुरिक' आबय तँ जानकी! बड़की पुतोहु केँ बड्ड अनसोहाँत लगनि। बुढ़ारी मे कतहु लोक एतेक...। जानकी...जानकी...जानकी! वाह रे जानकी! कहलकै जे हम सुनरी कि पिया सुनरा गामक लोक बनरी-बनरा! पुतोहु केँ जे मोन

होनि से सोचथि आ बाजथि। मुदा, ओ स्वयं जनैत छथि जे प्राय: दसे बर्ख मे टुग्गर भ' गेल ई बच्चा पुन: टुग्गर भ' जयबाक आशंका सँ ग्रस्त अछि...। ओहि दिन पतिक भीतर सँ हुलकी दैत आ फेर सम्पूर्ण मुखाकृति पर पसरैत एक टा टुग्गर कातरता केँ देखि हुनका लागल रहनि जेना फेर सँ ब्लाउज भीजि गेल होइन आ एक टा दुधिया सुगंध पसरि गेल होइक...।

फेर कहियो व्यास कका लग ई बात बजबाक साहस नहि भेलनि...। आ एक दिन माघ मासक कुहेसल भोर मे व्यास कका अपनहि आँखि मूनि लेलथिन। हुनका आँखि मुनिते जेना कनिञा काकी अपना केँ कटाह एकाकीपनक हिमगीत चाँगुर मे फँसल अनुभव कयलनि। ओह! ओहि दिनुका हुनकर कानब...! तुलसी चौरा लग व्यास ककाक शव पर माथ पटकि-पटकि क', करेज फाड़ि कनैत कनिञा काकीक ओ छवि...।

एम्हर पतिक शव केँ लोक श्मशान ल' गेलनि आ ओम्हर ओ अचाँचके मौन भ' गेलीह...। जेना एकदम निस्पंद...जड! टोल-भरिक स्त्रीगण सभ जे-जे करबैत गेलथिन ओ करैत गेलीह। चूड़ी फोड़ि देल गेलनि...। मौन निर्विकार चेहरा नेने ओ सहयोग दैत गेलथिन...। फेर कोना-कोना अस्थि-संचय सँ ल'क' श्राद्ध धरिक ओरिआओन भेलै, काकी केँ किछु बूझल नहि भेलनि। दुनू भाँइ केँ जेना जे फुरयलनि... लोक सभ जेना जे परामर्श देलकनि...करैत गेलाह...।



खिड़की पर अँटकल मुंड...

"बौआ...बौआ! उठह ने हौ! कतेक सुतबह?", माय हमर कोठलीक केबाड़ पीटि रहल छलि। हमरा लागल जेना कोनो यात्रा सँ घुरि क' आयल होइ। संभवत: माय बूझि रहल छलि जे बेटा सूतल अछि। "चाह बना दिय?", मायक एहि प्रश्नक उत्तर मे हम स्वीकृतिसूचक माथ डोलबैत...नहि जानि किएक माय सँ आँखि मिलयबा सँ बँचैत चापाकल दिस बढ़ि गेल रही...।

चाह पीबैत रही तँ माय कहने रहय, "जाह! कने घूमि-फिरि आबह। मोन बहटि जेतह...।" विदा तँ भ' गेल रही मुदा, कोम्हर जाइ से निर्णय बाधित छल। रेल लाइन दिस? नहि! खिरोइ दिस? नहि-नहि!! तखन टीसन? हँ चली...। टीसन पर चाहक दोकान पर लोक सभक चर्चक विषय वैह छल जाहि सँ हम बाँच' चाहैत छलहुँ...। हम ओत' सँ उठि अरुणक पानक दोकान लग जा ठाढ़ भ' गेलहुँ। हम नित्त जतेक भाँग खाइत रही ताहि सँ प्राय: तिगुना हमरा खाइत देखि अरुणक आँखि विस्मय सँ फाटि गेल रहै...। हम ओकरा दिस ध्याने नहि देलहुँ आ विदा भ' गेलहुँ बाध दिस। बौआइत रहलहुँ...बौआइत रहलहुँ... कहुना सम्पूर्ण प्रसंग केँ बिसरि जयबाक प्रयास करैत रहलहुँ...।

प्राय: साढ़े आठ बजे राति मे घर घुरलहुँ तँ मायक खोंचारैत प्रश्न सँ बचबाक एक्के टा उपाय छल जे चुपचाप दू-चारि टा सोहारी खाक' अपन ओछाओन ध' ली...। आइ फेर निन्न निपत्ता छल...। क्रमश: जेना-जेना राति बीति रहल छलै तेना-तेना निसबद्ध भेल जा रहल छलै...। दूर दछिनबारी टोल दिस सँ कुकुर सभक झौहटि सुनाइ पड़ि रहल छलै... मुदा एम्हर एकदम निस्तब्धता...। कुकुर सभ निपत्ता...जलमुर्गी मुँह सीने...कतहु कोनो चूलचाल नहि...। पशुपति एक्सप्रेस धड़धड़ायल पास क' गेल...फेर पुन: सन्नाटा...। अचानक लागल जेना हमर कोठलीक अगुअइत मे किछु खड़खड़ायल होअय...। कथी भ' सकैए? हेतै कथू। के आँखि खोलओ?...फेर लागल जेना खिड़की दिस किछु भरिआयल सन। आँखि खुजि गेल...। नजरि खिड़की दिस उठल...। खिड़की पर कनिञा काकी छलीह...। कनिञा काकी नहि, कनिञा काकीक मुंड...। धड़ निपत्ता...। खाली मुंड...। उपरका चारि टा दाँत निचला ठोर मे धँसल...भीजल केस माथ मे सटल...चँछायल रक्तहीन धोल-पखारल निष्प्रभ चेहरा...सोझे हमरा दिस तकैत आँखि...। उँह! भ्रम थिक। भाँगक यैह लच्छन ठीक नहि। एकभगाह क' दैत अछि। झुट्ठे। कहाँ क्यो अछि? अनठिया क' सुतबाक प्रयास कयलहुँ तँ अनुभव भेल जे हृदयक गति तेज भ' गेल अछि...धक् ...धक्!...भक्! हम डरबूक नहि छी। कहाँ केओ अछि...? हमर आँखि फक् सँ खुजल...खिड़की पर अँटकल मुँड हमरा ओहिना निहारि रहल छल...। एक बेर, दू बेर, कैक बेर यैह क्रम चलल...। पसेना-पसेना भ' गेलहुँ...। तरासे कंठ सुखा रहल छल...। चौकीक नीचाँ लोटा मे जल राखल छल...मुदा हिलबाक साहस...? आँखि मूनि चिचिअयबाक प्रयास कयलहुँ, "माय...माय...!"

"बौआ...बौआ! की भेलह? डर होइत छह की?", माय केबाड़ फोलि देलक। ई केबाड़ फोलि देलाक बाद मायक कोठली सँ हमर कोठली जुड़ि जाइत अछि। ओ हमर चौकी पर आबि बैसलि। माथ पर हाथ देलक। आँचर सँ हमर माथ पोछैत जल पिऔलक।

"की भेलह?"

"माय, खिड़की पर कनिञा काकी छलीह!"

"दुर् बताह! ओ बेचारी कथी लेल अओतीह? ई तोहर अपने मोनक डर छलह...। पहिने कहने छलियह भोर मे जे रेलवे दिस नहि जाह। तों अपना केँ जतेक नहि चिन्हैत छह ताहि सँ बेसी हम तोरा जनैत छिअह। ओ किऐ अओतीह बेचारी? एहि ठाम हुनक की छनि? जँ रहितनि तँ एना जयबे कैरतीह?"

पता नहि किएक हम ओहि क्षण बिसरि गेल रही जे आब प्राय: चौबीस बर्खक भ' चुकल छी...। मायक कोर मे मूड़ी गाड़ि ठोहि पाड़ि क' कनैत रहलहुँ...।

"चलह बौआ! आब सुतबाक प्रयास करह। बहुत राति भ' गेलै। अच्छा, कने घुसकह, हमहूँ एतहि पड़ि रहैत छी।"

हमरा माय सँ अपन कोठली मे जाक' सूति रहबाक आग्रह करबाक साहस नहि भेल। हम गुबदी मारि लेलहुँ...। हमरा सूतल जानि नहू...नहू माय फोंफ काटय लागलि...। आ एम्हर हम सोचैत रही...माय कहैत अछि जे ओ हमरा हमरो सँ बेसी जनैत अछि। की सबहक माय अपन संतान केँ एहिना जनैत हेथिन? की कनिञा काकी अपन बेटा सभ केँ एहिना जनैत रहथि...?

निरर्थक योजक-चिह्न...

ओहि दिन व्यास ककाक त्रयोदशा रहनि। प्राय: दस-एगारह बाजि रहल हेतै। कनिञा काकी अपन कोठली मे पड़ल-पड़ल आब सदाक लेल अनुपस्थित भ' चुकल पतिक विगत स्मृति केँ सहेजबा मे लागल रहथि कि आँगन मे हल्ला भेलै...। दुनू पुतोहु आपस मे लड़ि रहल छलथिन। पहिने ओ लोकनि एक दोसरा केँ हीन प्रमाणित कयलनि...। फेर एक दोसराक नैहर केँ गर्हित घोषित कयलनि...। संतोष नहि भेलनि तँ एक-दोसराक भाय-बाप केँ चिबा जयबाक धमकी देलनि...। तथापि किछु कसरि रहि जयबाक संदेह भेलनि तँ एक-दोसराक अंग-विशेष केँ खच्चारि केँ अँचार भरि देबाक दावा ठोकय लगलनि...।

ऐन एही अवसर पर सरबन बाबू आ राघव ललाक प्रवेश एहि लंका कांड मे भेलनि। ओहो दुनू गोटे परस्पर वाचिक आक्रमणक क्रम मे ई बिसरैत चलि गेलाह जे एक-दोसराक सहोदर छथि...। तामसक आधिक्य मे समक्ष ठाढ़ शत्रु केँ अगम्यागमनक आरोपी घोषित करैत एक टा हिंसक संतुष्टि सँ तृप्त होइत गेलाह...। कलह बढ़ैत गेलै... बढ़ैत गेलै। नौबति मारि-पीटि धरि पहुँचि गेलै...। ई तँ रच्छ रहलै जे हल्ला सुनि किछु लोक आँगन मे जुटि गेलाह आ दुनू भाँइ केँ अलग कयल गेलनि। तथापि दुनू देयादिनी अपन नेनपन सँ ल'क' आइ धरि सिखलाहा गारि सभक बरखा करिते रहलीह...।

झगड़ा तँ कहुना शांत भेल, मुदा लोक सभ कारण जानि क' चकित छलाह। एतेक साधारण बात लेल एतेक झगड़ा? त्रयोदशा होयबाक कारणेँ आइ राति घर मे माछ वा माउस बनब स्वाभाविके छलै। मुदा माछ आनल जाय वा माउस, से निर्णय नहि भ' पाबि रहल छलै। सरबन बाबूक सार केँ माछ बेसी नीक लगैत छलनि तँ राघव ललाक ससुर केँ माउस। मामिला एतहि ओझरा गेलै आ बतकुच्चनि होइत-होइत एत' धरि पहुँचि गेल रहै...। आब तँ दुनू भाँइ अड़ि गेलाह जे चूल्हि साझी रहि नहि सकैए...। आइए आ एखनहि बाँट-चूट भ' जाय।

एहन कलह कोनो नव बात नहि छलै। पहिनहुँ कतोक बेर दुनू भाँइ टकरा चुकल छलाह। दुनू केँ एक-दोसराक नेत पर शंका छलनि। दुनू केँ होनि जे दोसर महाबेइमान अछि। एम्हर हम घर लेल खटैत-खटैत मरि रहल छी आ ओम्हर ओ चोरा-चोरा क' पाइ जमा करैत अछि। एहि शंकाक आगि केँ लहकयबाक काज दुनू देयादिनी समय-समय पर बड्ड योग्यतापूर्वक करैत आबि रहल छलथिन...। मुदा आइ, आइ तँ हद भ' गेलै। कदाचित दुनू पक्ष एहि दिनक प्रतीक्षा मे छल। कनिञा काकी अपन परिवार मे होइत एहि घिनाउन विस्फोट केँ टुकुर-टुकुर देखैत रहलीह आ सोचैत रहलीह जे की हमर खून मे एतेक स्वार्थ भरल छल...।

ओहि दिन तँ बूढ़-पुरान सभ जेना-तेना बुझा-सुझा क' दुनू पक्ष केँ शांत कयलनि, परंच भानस एक ठाम नहि भेलै। दुनू घर मे लोक सभ अपन-अपन इच्छानुसार भोजन बनौलनि। एम्हर रहि गेलीह माय। तँ ओहि दिन दुनू भाँइ जेना मातृ-भक्तिक आदर्श प्रस्तुत करय लेल तत्पर रहथि। पुतोहु सभ तँ आओर आगाँ-पाछाँ, "मा! ई एक बेर कहथुन तँ जे की खाय के मोन होइत छनि? ई निश्चिन्त रहथु मा! एकदम अमनिञा रहतनि। कनिको संदेह नञि करथु। ई जे कहथिन से बना देबनि। सेबैयक खीर बना दियनु? आकि मखानक? रसगुल्ला मँगा दियनु...?" तात्पर्य ई जे एक टा सद्य: विधवा जे-जे वस्तु खा सकैत अछि वा जे-जे उपलब्ध भ' सकैत छलै, सबहक नाम गना देल गेलै...। मुदा कनिञा काकीक एक्के रट, "नहि बौआ! नहि कनिञा! हमरा भूख नहि अछि।" ओ तँ यैह नहि बूझि पाबि रहल छलीह जे जाहि आँगन मे आइ एते अट्ठाबज्जर खसल होइक ओत' ककरो कंठ मे किछु कोना धँसि सकैत छै?

दोसर दिन भोरे अधिकांश पाहुन विदा भ' गेल रहथिन। टोलक दू-चारि टा लोक आ एक-दू टा पाहुन केँ ल' दुनू भाँइ दलान पर श्राद्धक खर्चक हिसाब-किताब करय लेल बैसलाह। मामिला फेर ओझराय लगलै। ओझराइत-ओझराइत पहिने गारिक अध्याय चललै...फेर लाठी चलबाक नौबति आबि गेलै...। आब एहन स्थिति देखि लोको सभ बाँट-चूट कइए देब उचित बुझलनि। ओहि दिन तँ नहि, मुदा दोसर दिन पंच सभ जुटलाह आ भीन-भिनाउजक प्रक्रिया प्रारंभ भेल। प्राय: सभ चल-अचल संपत्तिक बखरा लागि गेलाक उपरान्त एक टा एहन वस्तु बाँचि गेलै जकरा बाँटब असंभव छलै...। ओ वस्तु चक्कू, टेंगाड़ी, कुड़हरि वा आरी माने कोनो प्रकारक हथियार सँ काटिक' वा तराजू सँ जोखि केँ बाँटल नहि जा सकैत छलै। आखिर ओहि वस्तु केँ बाँटल जाय तँ कोना बाँटल जाय? दोसर, दुनू भाँइ मे सँ कोनो ओहि वस्तु केँ बाँटय नहि चाहैत छलाह। दुनूक इच्छा रहनि जे दोसर गोटे अपन दावा छोड़ि देअय आ ई पूराक पूरा हमरे भेटि जाय...। ओ वस्तु छलीह कनिञा काकी!

पंच लोकनि चकित छलाह! वाह रे मातृभक्ति!! आइ काल्हि एहन मातृभक्त कत' देखाइ पड़ैत अछि? पुतोहुक तँ बाते छोड़ि देल जाय। पुत्रो सभ मे एहन मातृभक्ति दुर्लभ भ' गेल अछि। बड्ड भागमंत छथि एहन माय। ठीके, व्यास जी बड्ड सोचि केँ नाम रखने हेताह अपन दुनू पुत्रक। नामक प्रभाव किछु ने किछु तँ पड़िते छै ने...वाह!

अंतत: पंचलोकनि दुनू भाँइ केँ एक दोसराक मातृभक्ति केँ सम्मान देबाक उपदेश दैत एहि बात पर राजी क' लेलनि जे ओ सभ 'पार' लगा लेथि। एक-एक सप्ताहक पार। माने ई जे कनिञा काकी बेरा-बेरी सप्ताह भरिक लेल दुनू परिवार रहल करतीह आ बेटा-पुतोहु केँ सेवाक अवसर दैत रहतीह। की? कनिञा काकी? कोनो आपत्ति तँ नहि? ओ की बजितथि? किछु बाजय लेल एक टा निष्कर्ष पर पहुँचब जरूरी छलनि। हुनक माथ पर चकरघिन्नी भेल छलनि...। ओ बूझि नहि पाबि रहल छलीह जे विगत दस-बारह बर्खक कालखंड मे बेटा-पुतोहुक व्यक्तित्वक जाहि अनपेक्षित पक्ष सँ ओ नहू-नहू परिचित भेलीह अछि ताहि सँ आजुक पक्षक सामंजस्य कोना बैसाबथि? ओ टुकुर-टुकुर तकैत रहलीह...। दुनू ठोर सटल रहलनि...। हुनक चुप्पी केँ स्वीकृति बूझल गेल...।

'पार' ओही दिन सँ प्रारंभ भेलै। पहिल पार भेटलनि जेठ पुत्र सरबन बाबू केँ, हुनके इच्छाक आदार करैत। ई घोषणा करैत पंचलोकनि पंचैती समेटबाक लेल उद्यत होइते रहथि कि आँगन दिस हल्ला उठलै...। हल्लाक केन्द्र पर नजरि पड़िते सभ स्तब्ध रहि गेलाह...। माँझ आँगन मे दुनू देयादिनी परस्पर भिड़ल छलीह...। असल मे भेलै ई जे पारक घोषणा होइतहि जेठ-जनी दुरुखाक केबाड़क पाछाँ सँ चूड़ी खनका क' सरबन बाबू केँ इशारा कयलथिन। ओ लग गेलाह तँ देखलनि जे पत्नीक हाथ मे मायवला पुरना टिनही बाकस छनि। हुनके दिया कनिञा काकी केँ अपन घर चलबाक समाद अगुतायल-हड़बड़ायल स्वर मे देलथिन जेठ जनी। समाद सुनियो क' कनिञा काकी 'की-करी, की-नहि'क सोच मे पड़ल रहलीह...। संपूर्ण घटनाक्रम हुनका लेल भीषण बेदनादायी छलनि...। एहि विखंडन केँ रोकबाक कोनो बाट नहि सूझि रहल छलनि। आब विखंडन केँ रोकबाक कोन कथा? ओ तँ भ' चुकल रहै। संपूर्ण वीभत्सताक संग! ओ स्वयं की करथि? कि एतबहि मे आँगन मे अनघोल मचल...।

प्रतिद्वन्द्वी देयादिनी जकाँ छोट जनीक सेहो नजरि प्रत्येक घटनाक्रम पर आ कान प्रत्येक स्वर पर रहनि। जेठजनी दुरुखाक केबाड़ लग सन्नद्ध छलीह छोट जनी दलानक कोठलीक खिड़की लग तत्पर! पारक घोषणा होइतहि छोटजनी जेठजनी केँ लपकि क' सासुक कोठली मे जाइत...सासुवला टिनही बाकस ल'क' धड़फड़ाइत दुरुखाक केबाड़ लग अबैत...चूड़ी खनकबैत...आ पति केँ किछु फुसफुसा क' कहैत देखलनि। निमिष मात्र मे ओ सभ बात बुझि गेलीह... 'गै दाइ! ई बात छैक? फुर्ती ने देखियौ! इह! लगैए हम छोड़ि देबै। आँखि आगाँ अपन आशा-अभिलाषाक अपहरण देखि जे चुप रहि जाय से एक बापक बेटी नहि।' ओ झपट्टा मारिक' बाकस केँ ध' लेलनि। छीना-झपटी मे दुनू देयादिनी असंतुलित भ' दुआरि पर सँ आँगन मे खसलीह। चोट भरपूर लगलनि...। पंच सभक नजरि जखन पड़ल रहनि तखन दुनू गोटे बाकसक कड़ी केँ पकड़ने अपना-अपना दिस घीचि लेबाक प्रयास क' रहल छलीह...। संगहि वाक्-युद्ध चालू छल...निरंतर। एक-दोसराक बेटा, घरवला, भाय, बाप सभ केँ सोझे गीड़ि जयबाक

धमकी देल जा रहल छल...।

अवाक् कनिञा काकी दुनू पुतोहु आ हुनका सभक मध्य योजक चिह्न जकाँ वर्तमान संदर्भ बुझबाक प्रयास क' रहल छलीह...।

पंच सभ दुनू देयादिनी कें डाँटिक' फराक कयलनि आ बाकस कें सबहक मध्य मे आनल गेल। कोन रहस्य छै एहि बाकस मे? किऐ दुनू देयादिनी एहि बाकस कें हथियाब' लेल एतेक आफन तोड़ने छथि? ई बाकस तँ कनिञा काकीक दुरगमनिञा बाकस छनि जे हुनक बाबूजी बड्ड सख सँ देने रहथिन। तहिया जेहन रहल हो, मुदा आब तँ भ' गेल अछि पुरान... बिझायल...प्राय: जर्जर सन...। ताहि लेल एतेक तमाशा।

असल मे, दुनू बेटा-पुतोहुक मोन मे एक टा अद्भूत आशा बहुत दिन सँ सुगबुगा रहल छलनि...। ई सभ जनैत अछि जे ओ सभ दिन मितव्ययी रहलीह अछि...। कहियो हाथ खोलिक' खर्च नहि कयलनि। तखन तँ ओ अवश्य किछु-ने-किछु जमा करैत हेतीह। हुनका पास अवश्य कोसलिया हेतनि। एहन गुम्मी छथि जे बेटा-पुतोहु कें हवा लागय देतीह...। जरूर बेटी लेल जोगाक' रखने हेतीह...। ओहो जे गुंजा अछि ने से माये जकाँ गहींर अछि...। मुदा ताहि सँ की? छोड़बनि थोड़े। आ गहना? भला गहना छोड़ल जाय?

राघव लला आ हुनक पत्नी कें आशा छलनि जे जेंकि राघव छोट बेटा छथि तेँ मायक कोसलिया आ गहना पर हुनके सभक अधिकार छनि। ओम्हर सरबन बाबू दुनू व्यक्तिक सोचब छलनि जे एक तँ ओ जेठ छथि, दोसर आइयो माय सरबने बाबू कें 'बौआ' कहैत छथिन तँ स्वाभाविके हुनक अधिकार बेसी मजगूत छनि। मुदा, दुनू पक्ष मे सँ कोनो एहि मादे प्रकटत: चर्च नहि क' रहल छल। दुनू पक्षक कान पर एहि आशंकाक उल्लू बैसल छलै जे जँ बात खुजि गेल तँ दोसर पक्ष अपन हिस्सा ने माँगि लेअय! चतुर कुटनीतिक जकाँ प्रयास कयल जा रहल छल जे अपार मातृभक्तिक प्रदर्शनक बलेँ माय कें अपना संग राखि लेल जाय...। एक बेर माय अपन पक्ष मे, अपन हिस्सा मे आबि गेलीह तँ बाकसो अपनहि आबि जायत...। एहि लेल दुनू पक्ष साकांक्ष, सतर्क आ सन्नद्ध छल...। जखन खिड़की लग ठाढ़ि छोटजनी देखलनि जे दुरुखाक मुँह लग ठाढ़ि जेठजनी की क' रहल छथि तँ ओ जेना सेन्हे पर चोर कें पकड़ि लेबाक अंदाज मे झपट्टा मारलनि आ पतिक कान फूकि पहिल पार अपन माथे सहर्ष स्वीकार करबाक चलल चालि खाली जाइत देखि जेठजनी पर खिसिया क' रहि गेल रहथि...।

पंच लोकनि कनिञा काकी सँ कुँजी ल' बाकस कें फोललनि। ताहि खन कनिञा काकीक चेहरा मारकीन जकाँ मलिन-मटियौन भ' गेल छलनि...नीरक्त...निर्भाव...निष्प्रभ! आँखिक चारूकात असंख्य बादुर उड़ैत...कनपट्टी पर गिरगिट चलैत...। बाकस मे सँ बहार भेलै...दू-तीन टा पुरान साड़ी...सेनुरक एक टा गद्दी जे कदाचित साड़ी मे सन्हिआयल रहि गेल रहै...। व्यास ककाक एक टा पुरान मैलछौंह फोटो, खादीक एक टा पुरान दुहत्ती चद्दरि...आ एक जोड़ा पुरना खराम जे मृत्यु सँ पूर्व व्यास कका पहिरैत रहथि...बस्स! दुनू देयादिनी कें विश्वास नहि भेलनि। दुरुखाक मुँह लग ठाढ़ि ओ लोकनि पहिने नहू स्वर मे फेर जोर सँ निर्देश देलथिन जे बाकस कें उनटि-पुनटि क' देखल जाय। मौलायल आस नेने दुनू भाँइ सेहो एहि बात पर जोर देलनि। पंच मे सँ एक गोटे ईहो क' के देखा देलथिन। किछु नहि खसलै! सभ टा वस्तु ओही मे राखि क' ताला लगा बाकस कनिञा काकी लग राखि देल गेलनि। कुँजी सेहो हुनके द' देल गेलनि। एक टा पंच आग्रह करैत कहलथिन, "जाउ सरबन बाबू, आब माय कें ल' जइयनु।" हताश सरबन बाबू मरल मोन सँ बाकस उठा माय कें ल' क' आँगन गेलाह।

"ई जंजाल किऐ उठा क' ल' अनलहुँ। फेंकि दितियै डबरा मे वा द' दितियै ओकरे सभ कें जकरा सभक करेज फटैत छलै एहि लेल।" आँगन मे ठाढ़ि पत्नी हुनका डाँटय लगलथिन। ओ कनेक थकमका गेलाह। ओम्हर छोट जनी कें ई बात खबखबा कें लगलनि। ई राँड़ी की बुझैत अछि? ओ खौंराक बेटी अछि तँ हमहू जलबारक बेटी छी। घुमा-फिराक' कूट करत तँ हम नञि बूझबै? आ हम छोड़ि देबै की?

"हमर सभक करेज किऐ फाटत? फटतै ओक्कर सभक जकरा अपन बेटाक सराध लेल ढेउआक कमी होइ आ जे निर्लज्ज जकाँ बाकस चोराक' भागय।"

एहि जोरगर आक्रमण सँ जेठजनी छिलमिला गेलीह। ओ आँचर उठाक' सूर्य दिस तकैत बजलीह, "हे दिनकर दिनानाथ! जनिह' तोंही...। जरल उगै छह...जरल डुबै छह...। धोंछी सभ हमर बेटा कें नजरि पर चढ़ौने रहैए...। तोंही निसाफ करिह'। हे नाथ! गुँहखौंकी सभ कें मुँह मे खदखद पिलुआ फरबिह' हे दिनानाथ!"

आब तँ छोटजनी कें सनसना कें लगलनि। एहन घिनौन आक्रमण! नञि। आब अप्रत्यक्ष आक्रमण सँ काज नहि चलत। प्रत्यक्ष आक्रमण बेसी चोटगर, "हमरा किऐ पिलुआ फरत? फरतौ तोरा सभ कें। तोहर बेटा कें...तोहर चाँद सन घरवला कें...भाय कें...बाप कें...आ सेहो नेडरिया पिलुआ...।"

एवंप्रकारेँ प्रत्यक्ष आक्रमणक क्रम चलैत रहल...चलैत रहल...।

अपूर्ण आशाक साइड इफेक्ट...

आ ओही दिन सँ शुरू भ' गेलनि कनिञा काकीक जीवनक एक टा नवीन क्रम...। कड़ाचूर मेहनतिक क्रम...। ओना तँ ओ अपनहि बैस क' खायवाली कहियो नहि रहलीह, मुदा आबक कथा किछु आने छलै...। जाहि बेटाक पार मे ओ रहथि, घरक कोन काज नहि करथि? चाउर बिछब, चिक्कस चालब, घर-आँगन बहारब, बच्चा सभ कें सम्हारब...माने ई जे कोनो-ने-कोनो काज मे लागले रहैत छलीह...। तैयो जँ केओ कमी निकालि-निकालि क' फज्झति कर' पर तुलल रहय तँ की कयल जाय? दुनू पुतोहु अपन-अपन पार मे हुनका पर क्षुब्ध रहैत छलथिन। हुनका सभ कें शंका नहि विश्वास छलनि जे ओ महाबेइमान छथि...नमक हराम छथि। जेठजनीक पार मे छोटजनीक दुआरि पर बैसि जायब वा हुनक बच्चा कें दुलारब तथा छोटजनीक पार मे जेठजनी सँ बतिआयब वा हुनक कोनो सौदा दोकान सँ आनि देब कनिञा काकीक बेइमानी मे गनल जाइत छलनि...। रहरहाँ घुमा-फिराक' व्यंग्य तँ कयले जाइत छलनि जे ओ अपन सभ टा कोसलिया बेटी कें द' देलनि...। एहन अवसर पर बेटी आ नातिक लेल होइत गारि-सरापक बरखा हुनक आत्मा कें हेहरु क' दैत छलनि...। उनटि क' उत्तर देब वा आपत्ति करब हुनक स्वभाव कहियो नञि रहलनि। मोनहि मोन कूही होइत ओ एतबे सोचथि जे ओइ बेचारीक कोन दोख? ओ तँ अपनहि दैवक डाँग सँ थकुचायलि अछि। एकमात्र बारह बर्खक बेटा कें कहुना क' पोसैत ओ कतेक कष्ट सँ जीवन बिता रहल अछि, से कोनो नुकायल छै? केकरा नञि बूझल छै? तैयो एतेक गारि-सराप।

जखन कखनो गुंजाक मादे सोचैत छलीह कनिञा काकी तँ लगैत छलनि जेना केओ करेज कें पकड़ि क' निचोड़ि दैत होनि...। कतेक दुलारू रहय बापक! पतिक आगाँ बेटी कें डाँटय के कहियो हिम्मति नहि भेलनि हुनका। से आइ...। कखनो क' अपन बेटी पर गर्व सेहो होइत छलनि। लगैत छलनि जे बेटी हुनको सँ बेसी साहसी छनि। अपना नवारी मे लाख कष्ट रहल होनि...कम-सँ-कम सिनेही पतिक छाँह तँ उपलब्ध रहनि...आ गुंजा कें?

ककर भाग मे की लिखल रहैत छै, से के जनैए? जहिया व्यास कका बेटीक लेल वर देखि क' आयल रहथि तहिया कनिञा काकी कें बड्ड संतोष भेल रहनि जे बेटी मात्र पौने कोस दूर

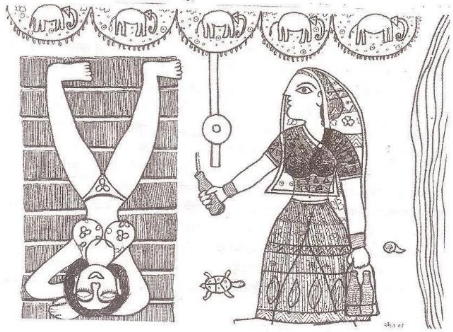
रहत। एहि गाम सँ पूब थोड़ेक दूरी पर खिरोइ आ तकर बाद ढढ़िया...। ढढ़ियाक पंडित उमाधर झा केँ के नहि चिन्हैत छनि? परोपट्टा मे नामी...प्रसिद्ध वैदिक! तिनक पोता। गोर नार चकैठ सन धूआ। बी.ए. पास। की हेतै जे एखन कोनो नोकरी नहि भेलनि अछि? तत्काल उत्साहपूर्वक खेतिए मे लागल। संगहि गामक सार्वजनिक काज सभ मे आगाँ-आगाँ रहनिहार दुस्साहसी युवक। के जनैत रहय जे यैह दुस्साहस काल भ' जेतै।

सतासीक चढ़ल बाढ़ि मे लगनमा पुल लग खिरोइक उफनैत धार मे हेलबाक दुस्साहस ढढ़ियाक तीन टा नवयुवक केँ गीड़ि गेल रहै...। ओही मे ओहो रहथि। सात दिनुका बाद जखन पानि उतरल रहै तँ कोस भरि दूर ततैला लग बबूरक झोंझ मे ओझरायल लहास भेटल रहै...फूलल-फूलल...किछु-किछु सड़ल सन। कहुना क' संस्कार कयल गेल रहै। एहीक संग गुंजाक सभ टा स'ख-मनोरथ जेना बाढ़िक संग बहि गेल रहै...। आब तँ कहुना क' बेटाक लेल जीबाक छलै...। से बस संघर्ष करैत जीबि रहल अछि...।

गुंजा केँ बड्ड प्रेम आ भरोस छलै अपन भाय सभ पर। भाय सबहक विरुद्ध ओ किछु सुन' लेल तैयार नहि रहल कहियो। नेनपनो मे झगड़ा भेला पर यदि कोनो संगी ओकरा भायक गारि पढ़ि दैक तँ ओ किटकिटा क' संगीक मुँह नोंचि लेअय। आर जे गारि देबाक हो से दे, मुदा यदि हमर भाय सभ केँ किछु कहबेँ तँ छोड़बौ नञि, से बूझि ले। भायक प्रति ई प्रेम बिआहक बादो बनल रहलै। तेँ ने ओ सभ साल दुर्गापूजा मे जे नैहर आबय तँ भरदुतिया मे भाय सभ केँ बड्ड सिनेह सँ नोतैत छलि...आ टोलक छोट-पैघ बेटी-धी सभ केँ प्रेरित करैत भरपूर ओरिआओन सँ सामा-चकेबा खेलैत छलि। कतेक विश्वास छलकै छलै ओकर आत्मा सँ जखन ओ बेस टहंकार सँ गबैत छलि—

गाम के अधिकारी अहाँ सरबन भैया यौ
अहाँ राघव भैया यौ
भैया गोठ चढ़ि पोखरि खुना दिय'
चम्पा फूल लगा दिय' यौ...।

मुदा, कहाँ सुनि सकलथिन भाइ सभ बहिनक करुण हाक केँ। बहिनोइक श्राद्ध मे जे दुनू भाँइ नोत पूरि क' अयलाह, से जेना तकर बाद ढढ़ियाक बाटे बिसरि गेलाह...। राजनीतिक काज सँ बौआइत सरबन बाबूक लिस्ट मे ढढ़ियाक नामे नहि छलनि आ राघव लाला, तँ सहजहि एक टा अलगे दुनिया मे मस्त रहैत छलाह। अभावग्रस्त गुंजा एक बेर पूसी पूर्णिमाक अवसर पर गौतम कुंडक मेला मे माय सँ भेंट क' कय कहने रहनि जे भैया सभ केँ कनी मदति करय लेल कहिअहुन...। मुदा भैया सभ तँ सुनिते मातर अपन-अपन रोदना ततेक ने पसारि बैसलथिन जे मायक मुँहक बात मुँहे मे रहि गेल रहनि...।



तैयो गुंजा साहस नञि छोड़ने अछि...। की भेलै जे नैहर आयब छोड़ि देने अछि? बापोक श्राद्ध मे नहि आयलि...। खूब जनैत छथि ओ अपन बेटी केँ। अपन दुर्दशा माय केँ देखाब' नहि चाहैत अछि...। जो गै बेटी! हम अपन अभागक अतिरिक्त तोरा किछु नहि द' सकलियौ...। यदि हमरा पास किछु रहैत तँ तोरा एना बेलल्ला नहि होब' दितियौ...।

आ एम्हर बेटा पुतोहु केँ होइत छनि जे बेइमान बुढ़िया सभ किछु बेटी केँ द' देलक...। सभ किछु? कथी-कथी? स्वार्थक आवेग मे हुनका लोकनि केँ एतबो स्मरण नहि रहैत छनि जे हमरा पास रहबे की करय? गहनाक नाम पर मायक देल एक जोड़ी माकड़ी। ओहि मे सँ एक टा केँ तोड़बा क' बड़कीक बेटा केँ हनुमानी बनवा देलथिन तँ दोसर पर नजरि गड़ि गेल रहनि छोटकीक। ओहि सँ ओ बाली बनवा लेलनि। रहल टका! तँ यदि से रहैत तखन यैह दुर्दशा रहैत हमर आ हमर बेटीक...?

सोचैत-सोचैत कनिञा काकी अपन विगतजीवनक छानबीन करय लगैत छलीह...। कत' गलती भ' गेलनि? कत' चूकि गेलीह? जे किछु जहिया आमदनी होइत छलनि तकर पाइ-पाइ ओ परिवार केँ बनाब' मे खर्च करैत रहलीह...। सख-सधोरि केँ कोठीक कन्हा पर रखने छलीह...। तीर्थ यात्रा ककरा कहैत छै ओ कहियो नहि जानि सकलीह। बड्ड भेलनि तँ गौतम कुंड, अहिल्या स्थान वा बेसी-सँ-बेसी गंडेसर... पयरे...दर्शन-पूजा क' बिनु कैंचा खर्च कयने आपस...। सदा एक्के टा लक्ष्य! धिया-पुता सम्हरि जाय...मनुक्ख बनि जाय...आर की? कत' कसरि रहि गेलनि प्रयास मे? सत्य कही तँ ओ यदि कमी कयबो कयलनि तँ बेटिए संग...। ओहन चंसगर बेटी! कतेक इच्छा रहै ओकरा पढ़बाक। मुदा कोना जाय दितथिन कमतौल...। पाँच किलोमीटर दूर...केओ संगी नहि, बेटी जाति... ओह! यदि ओ पढ़ि-लिखि गेल रहितनि तँ आइ...। दुनू बेटाक बिआह बड्ड स'ख सँ कयने रहथि। कहाँ जनैत रहथि जे बिआहक लेल प्रस्थान करैत बेटा सभ केँ परिछनक उपरान्त परम्परानुसार जे छाती सँ लगौतीह से जेना माय सँ बेटाक विमुखताक प्रस्थान-पर्व सिद्ध हेतनि...। अपना जनतबे पुतोहु सभ केँ कोनो कम सिनेह देलथिन? दुनू पुतोहु केँ हुलास सँ नव-नव नाम देने रहथिन—हीरा सुन्नरि आ फूल सुन्नरि। जेना आन-आन सासु लोकनि करैत जाइत छथि तेना ओ कहियो पुतोहु सभ केँ कसिक' नहि रखलथिन। टोलेक देयादिनी छलथिन 'अरेरवाली बहिन'। ओ कहबो करथिन, ''कनिञा एना ढील देबै तँ पछतायब। कहबी छै, हल्लुक सवार घोड़ा फउद मारैए।'' परंच एहन अवसर पर कनिञा काकी खाली हँसि क' रहि जाथि। कहियो भारी सवार होयबाक प्रयत्न नहि कयलनि। किछु-ने-किछु हेर-फेर क' कोसलिया जमा करबाक लुतुक रहैत छनि स्त्रीगण मे। कोनो-कोनो चतुरी सँ चुपचाप लहनो लगबैत छथि। मुदा ओ कहियो एहि दिशा मे सोचबो नहि कयलनि...। ककरा सँ चोर 'बितथि? आ आइ हुनका पर आरोप मढ़ल

जाइत छनि...। आरोप नहि जेना कलंकक टीका...। अपन हाड़-हाड़ निकलल देह केँ निहारैत हुनका लगैत छलनि जे कदाच टूटि क' रहि गेल अपन निराधार आशा-अपेक्षा केँ देखि ओ लोकनि एतेक खिसिया क' रहि गेल छथि जे...। कदाच एही कारणेँ जिनक पार मे ओ रहैत छथिन तिनक तामस हरदम लहरल रहैत छनि..। कदाच तेँ ओहि सप्ताह भरि ओइ घर मे भात बहुत कम बनैत छै...। आ जतबा बनैत छै से कनिञा काकीक लेल नहि रहैत छनि...। हुनका लेल मकइ वा बड्ड भेल तँ गहुमक जनहा रोटी आ तरकारीक नाम पर किच्छो वा नोन-तेल। हुनका माछ-माउस वा पियाजु-लहसुन सँ दिक्कति होइत छनि। होइत छनि तँ होइत रहनु...। ओहि सप्ताह मे उपेति क' तीन-चारि दिन बनबे करतै...।

भीन भिनाउजक बादे सँ दुनू भाँइ दनादन प्रगति क' रहल छलाह...। गामक लोक केँ देखि क' ठकमूड़ी लागि जानि। दुइए साल मे दुनू भाँइ दड़िभंगा मे लक्ष्मीसागर मोहल्ला मे छपकी पर डेढ़-डेढ़ कट्ठा जमीन ल' नेने छलाह आ एतय गाम पर तीन-तीन कोठली पक्का घर सेहो बना नेने रहथि। बस दलानवला भाग टा पुराने छलै...। माटिक भीतवला एक टा पैघ कोठली। एहि कोठली सँ आँगन दिस जाउ तँ एत' सँ ओत' धरि दुआरि जकर एक दिस एक टा एकचारी कोठली। एहि मे कनिञा काकी रहैत छलीह। दलानवला पैघ कोठली मे एक दिस चारि-पाँच टा माटिक कोठी सभ जे आब प्राय: खालिए रहैत छलै...कहियो तोड़ि क' फेंका जयबाक प्रतीक्षा मे। एहि कोठली मे केओ बाढ़नि-सोढ़नि नहि दैत छलै...। साझी चीज साँग पर...। कहियो क' मोन होनि तँ कनिञे काकी बहारि-सोहारि दैत छलथिन—पारवालीक उलहन सुनियो क'। कोठली सँ बाहर आउ तँ दलानक बरंडा पर एक टा पुरना चौकी राखल...। गर्दा सँ भरल। दलानक काजे कोन? सरबन बाबू केँ गाम-गाम राजनीति करय सँ पलखति नहि आ राघव ललाक दलान छलनि गामक टीसन वा ब्रह्मस्थान वा पंचायत भवन जतय संगी सभक जुटान होइत छलनि...। के देखैए दलान केँ? दुनू केँ अपन-अपन परिवारक बेसी चिन्ता छलनि...। कहुना प्रगति करी...। से दुनूक प्रगति देखि कनिञो काकी चकित छलीह। जे लोकनि बापक श्राद्ध मे एक बीघा खेत बेच लेलनि...। से एही बीच मे एतेक पाइ कत' सँ आनि लेलनि? एहन अवसर पर ओ अपन कान छूबि बाबा वैद्यनाथ सँ माफी माँगि लेथि...। क्षमा करब हे बाबा! हमर नजरि नहि लगौक। काकीक बेटा तँ बेटा, पुतोहु सभ तँ आर होशियार छलथिन। मुट्ठी बान्हि क' खर्च करैत जाइत छलथिन। खास क' सासुक लेल तँ हुनकर सभक मुट्ठी किछु आर कसि जाइत छलनि...। ओ सभ किछु देखैत रहैत छलीह...बुझैत रहैत छलीह आ सहैत रहैत छलीह...।

गामक स्त्रीगण सभ प्राय: एहि बात लेल नितराइत रहैत छथि जे ओ चारि-चारि टा हरिबासर कयने छथि। मुदा, एहि दू बर्ख मे कनिञा काकी कतेक हरिवासर क' चुकल छलीह, से के जानय...। अपना केँ साधिक' राखि देने रहथि ओ...। एम्हर हम कहियो हुनका मुख पर तृप्तिक लेशो नहि देखि सकल छलहुँ। सदिखन जेना गिल्ल छाउर अउँसल...। ईह! की सुन्नर अउँठिया केस रहनि हुनक। से आब धड़धड़ा क' पकैत-ओझराइत बगड़ाक खोंता भ' गेल छलनि...।

इमलीक बूढ़ भूतहा गाछ...

"हँ-हँ! चल' दियौ...चल' दियौ...।" चारिम बेर दही परसल जा रहल अछि...। दहीक बारिकक संगे चीनी, डालना, आ बुनियाँक बारिक सेहो गतिशील-सक्रिय छथि...। बेसी लोकक पेट भरि चुकल छनि। तैयो रसना मानि नहि रहल छनि...। छीलल माथ...चानन लेपल कपार...पीयर धोती, पीयर जनेउ आ भागलपुरी दोपटा सँ शोभित सरबन बाबू आ राघव लला हाथ जोड़ि-जोड़ि क' आग्रह क' रहल छथिन, "हड़बड़ाइ नहि जाइ जाउ। सभ केँ इच्छा भरि भोजन करय दियनु। कोनो वस्तुक कमी नहि...।"

जिनक पेट भरि चुकल छनि से मोने मोन अपन एहि मूर्खता पर पछता-खिसिया रहल छथि जे पहिने चूड़े बेसी ल' लेलाह। एतबे नहि, पहिले वा दोसरे बेर मे दही अहगर क' ल' लेलाह। ईहो नहि ध्यान देलनि जे गर्मीक पुरान दही खटगर होइत छै आ भोज मे तँ पहिने पुराने दही परसल जाइत छै। आब असली खायवला दही परसल जा रहल अछि...। मुदा, खाथु कोना? पेट मे जगह कहाँ छनि? आ बुनियाँ कोना खयताह? अपना केँ संसारक सभ सँ बड़का उलूकनन्दन बुझैत ओ लोकनि मुँह लटकौने किछु बेसी अग्रचेती सभ केँ देखि जरि रहल छथि जे कोना ओ सभ पहिने तँ हाथ बारने रहलाह आ आब हाथ-मुँह चारिम गेयर मे चला रहल छथि..।

हम सहटि क' कनिञा काकीक आँगन दिस बढ़ि जाइत छी। एत' अलगे अनघोल मचल अछि...। बाहर पुरुष वर्गक पहिल खेपक भोज आब लगिचायल छै। योजनानुसार स्त्रीगणक बिझो भ' गेल अछि। आब यावत पुरुष वर्ग भोजन क' कय उठत, अँइठ-कूठ उठाओल जायत, खरहरा देल जायत तावत स्त्रीगण केँ पारस देल जेतनि। पूरा आँगन भरल अछि...टोल भरिक बेटी-धी आ बूढ़-पुरान स्त्री सभ सँ...। सबहक हाथ मे थारी आ बट्टा। ककरो-ककरो हाथ मे बट्टाक बदला लोटा। पारस परसल जा रहल छै। सभ केँ पहिने ल' लेबाक हड़बड़ी लागल छै। दुनू देयादिनी अतिव्यस्त छथि।

"केओ छूटथि नहि। सभ केँ भरि इच्छा दियनु। हे दाइ सभ, पहिने पारस ल'क' अपन-अपन आँगन ध' अबै जाउ। आ हे, आँगने मे नहि रहि जायब। जल्दी सँ घुरि क' अबै जाउ आ भरि इच्छा भोजन करै जाउ। अहाँ सभ कुमारि-बारि छी...भगवती स्वरूपा छी। अहाँ सभ जे भरि पोख खा लेब आ भगवती केँ कहबनि तँ मा केँ अवस्स पइठ हेतनि...।" जेठजनी अपन बोल केँ आर मधुर बनबैत आग्रह करैत छथिन।

"हँ-हँ किऐ नहि! जीबैत रह तँ गूह भात आ मुइला पर दूध भात। इह! नाटक ने देखू!! एहने पइठ भगवान अहूँ सभ केँ देथि!!!" चउदह बर्खक मुँहफट बुचियाक टिप्पणी केँ सुनैत मातर ओकर बड़की बहिन कामिनी घबड़ा जाइत अछि। ओ बुचियाक मुँह पर तरहत्थी रखैत डँटैत अछि, "बुचिया तोरा बाज' के ठेकान नहि छौ। तोहर ठोर पर बड़ी बड्ड पाक' लागल छौक। हरदम लुबलुब करैत रहैत छें। बेसी उचितवक्ताक सारि नञि बन।" ई कहि कामिनी एक टुनका बुचियाक गाल पर दैत अछि।

ई जेना बड्ड अनसोहाँत लगैत छै गितिया केँ। बुचिया ओकर संगी छै। दुनू मे 'फूल' लागल छै। आब कामिनी केँ किछु कोना कहौक गितिया, मुदा ओकर अप्पन जीह केँ के रोकि लेतै, "अयँ यै जलबार वाली भौजी! गुंजा दीदी केँ नहि देखै छियनि। एहू बेर नहिए बजौलियनि? जाय दियौ। आबि क' की करितथि? माय केँ तँ चिबाइए गेलियनि अहाँ सभ...।" गितियाक एहि कथन पर आस-पासक सभ चौंकि पड़ैत अछि। केओ बजैत तँ नहि अछि किछु, मुदा सभ केँ तामस बड्ड होइत छै। ई दुनू धोंछी सभ लाहेब करत। जँ जलबारवाली वा खौंरावाली सुनत तँ पता नञि की हैत? भोज खाइते रहि जयतीह छिछिआहो सभ! मुदा, लगैए, दुनू देयादिनी कदाच बुचिया वा गितियाक टिप्पणी नहि सुनि पौलनि अछि। यदि सुनबो कयने हेतीह तँ संभवत: अनठिया देलनि अछि...।

हम दलान पर आबि जाइत छी। बस्स। किछु काल आर। पहिल खेपक भोज सम्पन्न भ' जेतै। आ फेर पान-सुपारी लेल घमासान मचत...। हम सहटैत-सहटैत अपन दलान पर आबि जाइत छी। आँगनक गेट बन्न अछि। माय सरबन बाबूक आँगन गेल अछि। हम दलानक

आगाँ भालसरीक छाँह मे कुर्सी ध' बैसि जाइत छी...। अकास साफ अछि...। कूदि-फानि क' मेघ सभ दखिन-भर चलि गेल अछि। भ' सकैए पच्छिम मे बरसल होअय। एहि गाम धरि अयबाक साहस नहि क' सकल। संभवत: इन्द्र केँ अपन पराजय मोन पड़ि गेल हेतनि...।

अन्हरियाक पंचमीक उदास चान रेलवेक ओइ पार आमक गाछीक उपर उगि आयल अछि। नहू-नहू रेलवे आ तकर ओइ पार बल्ला मे ठाढ़ इमलीक बूढ़ भूतहा गाछ देखाइ पड़ि रहल अछि...! नहि जानि कतोक भूत-प्रेतक बास छै ओहि गाछ पर...। ई कोनो हम नहि कहि रहल छी। कतेक लोक देखि चुकल छथि। कोनो-कोनो महिसवार केँ तँ पसर चरबैत काल घेरियो नेने रहै आ नकिआयल स्वर मे तमाकुल मँगने रहै...। सुनै छियै, ओहि इमली गाछ पर जतेक भूत-प्रेत अछि से प्राय: वैह अछि जे कोनो-ने-कोनो कारणेँ रेल सँ कटल अछि...। जहिया ई रेल लाइन बनल हेतै तहिया के सोचने हैत जे कतेक लोकक लेल अंतिम प्रस्थानक कतेक सहज-सुलभ-सस्त-साधन उपलब्ध कयल जा रहल छै...। मुदा नहि! कहाँ प्रस्थान क' पबैत अछि केओ? कहाँदन सभ केँ ओही इमली पर वास लेब' पड़ैत छै...। की कनिञा काकी सेहो ओही पर...? मुदा, एहि ग्यारह-बारह दिन मे कहाँ कतहु नजरि आयल अछि हुनक धूआ? खाली ओहि राति...।

एक मुट्ठी भात...

ओहि राति हमरा लग सूतलि माय फोंफ कटैत रहय। बेटा केँ वात्सल्यक सुरक्षा दैत...। की हम सुरक्षित भ' गेल रही? खिड़की पर सँ कनिञा काकीक मुंड जरूर निपत्ता भ' गेल रहनि...परंच मोन मे सन्निआयल हुनक आँखि ओ बेधक दृष्टि...। की कहय चाहैत रहय ओ दृष्टि...? की अर्थ रहै ओकर...? ओना किऐ देखने रहथि कनिञा काकी हमरा ओइ दिन?

ओइ दिन कनिञा काकीक नाति आयल रहनि—नानी केँ देखय। माय सँ जिद् क' कय। कतबो मजगूत हृदयक होथि गुंजा परंच मायक लेल दरेग तँ छलनिहें ने। की करितथि? नहि रोकि सकलथिन बेटा केँ। कहने रहथिन जे नहि मानबेँ तँ जो मुदा साँझ धरि घुरि अबिहेँ।

तहिया काकी छोटजनीक पार मे छलीह। भोरे-भोर आबि जुमल ओहि बारह बर्खक पाहुन केँ देखिते छोटजनीक पारा चढ़ि गेलनि। फल भोग' पड़लनि धिया-पुता केँ। अनेरे माय सँ मारि खाइत ओ सभ हकबका गेल जे ओकर सभक अपराध की छै? तामसे छोटजनी बहुत कम मात्रा मे भात बनौलनि। एतबहि जे हुनक अपनहुँ नेना सभ लेल अपर्याप्त रहनि...। ओ ओहि बारह बर्खक पाहुनक आगाँ मकइक रोटी आ रामतरोइक तरकारी परसि देलथिन आ नहाय लेल बाड़ी मे चलि गेलीह...। एम्हर ओ बच्चा कहुना क' दू कौर खयलक आ नानीक मुँह ताकय लागल...। काकीक करेज मे हूक उठलनि...। हुनक आत्मा कलपि उठलनि...। हुनका लगलनि जेना अन्तस मे जमल कोनो वस्तु पिघलि रहल होनि आ गरा बकौर लागि रहल होनि...। ओ अपना क' कहुना क' सम्हारलनि आ एक टा निर्णय लेलनि...। लाज तेयागि क' जेठजनीक दुआरि दिस बढ़लीह...कनेक थकमकयलीह...आ चढ़ि गेलीह दुआरि पर...।

"हीरा सुन्नरि, एक मुट्ठी भात देब?" ई सुनिते हीरा सुन्नरि किटकिटा उठलीह।

"केओ कमा क' राखि गेल छै की? हुँह! अंगोर राखिक' पटपटा नहि देबै जे भात देबै?"

"कनिञा, हमर जे दुर्दशा करबाक होअय, से क' लेब...मुदा ओहि अबोध केँ...?" पहिल बेर कनिञा काकीक स्वर मे आपत्ति प्रकट भेल रहनि।

"अरे, वाह रे अबोध! ककरो बापक किछु धारने छियै की? केओ खराँत राखि गेल अछि की? एतबे दरेग छनि तँ निकालथुन ने कोसलिया आ खुअबथुन रसगुल्ला...।"

देयादिनीक चिकरब सुनि छोटजनी बाड़ी मे सँ प्रकट भेलीह...सद्य:स्नाता...सही अर्थ मे एकवस्त्रा...भीजल केस नग्न पीठ पर लहराइत... साया केँ छाती पर वामा हाथेँ सम्हारने...। स्थिति केँ अँटकारैत-अँटकारैत हुनक कान मे जेठजनीक संवादक अंतिम अंश नीक जकाँ पड़लनि,

"...बनैत जायत सभ धन्ना सेठ...आ...एक टा पाहुन केँ दू मुट्ठी भात खुअबैत हींग चूब' लगैत छै!"

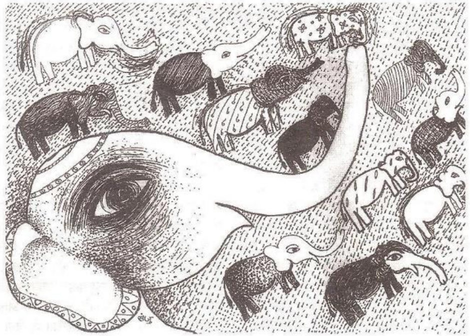
छोटजनी केँ लेसि देलकनि। तरबाक लहरि मगज पर चढ़ि गेलनि...। ओ खरमासक आगि जकाँ लहकि उठलीह...। ओ जल्दी-जल्दी सायाक डोरी केँ छाती पर कसलनि आ कनिञा काकी संग व्यास ककाक सात पुश्तक उद्धार करैत लपकलनि। हुनक झौंटा पकड़ि क' घिचलनि। कनिञा काकी तलमला क' खसि पड़लीह...। आब ओ दुनू हाथेँ कसि क' झोंटा केँ ध' लेलथिन आ घिसिअबैत-घिसिअबैत अपन दुआरि लग आनि पटकि देलथिन...।

"आइ आब' दे मुन्ना के पप्पा केँ तँ भात खुअबैत छियौ...। तोरो आ तोहर नाति केँ सेहो...। गै राँड़ी...बुढ़ौरी! तोँ गेलय की करय मुदइ के दुआरि पर? हमरा बदनाम करय लेल? आइ तोहर भथियन ने चहका देलियौ तँ हमहू भोला मिसरक एक बूँदक नहि...।"

एवं प्रकारेँ सासुक इलाज कय ओ अपन घर मे कपड़ा पहिरय चलि गेलीह आ ओत्तहि सँ गरियबैत रहलीह...।

चटुआ पर भोजन लेल बैसल नाति नानीक दुर्दशा देखि पहिने तँ हकबकायल...फेर किछु नहि फुरयलै तँ कानय लागल...। आ कनिञा काकी! ओ ने किछु बाजि रहल छलीह आ ने कानि रहल छलीह। बस चितांग पड़ल शून्य दृष्टिएँ अकास दिस तकैत रहलीह...। नातिक कानब सुनि चेत भेलनि...। जेना-तेना उठलीह आ नाति केँ पँजिया क' कानय लगलीह...।

ओही दिन बेरू पहर नाति अपन गाम चलि गेलनि। संयोग सँ हम खरदाहाक खेत देखि



आपस होइत रही तँ देखलियै जे रेलवेक ओइ पार जे गाछी सभक बाद डिस्ट्रिक्ट बोर्डवला साबिकक सड़क छै ततहि कनिञा काकी नाति केँ विदा क' रहल छथि...। विदा करबाक ढंग कनेक विचित्रे सन...। भरि पाँज क' नाति केँ पकड़ने ओकर मुँह, आँखि, कान, कपार सभ केँ धड़ाधड़ चूमि रहल छलीह। नानीक पाँज मे फँसल नाति कसमसा रहल छल, मुदा ओ ओकरा जेना मुक्त कर' लेल तैयार नहि रहथिन...। कननमुँह भेल नाति केँ गसियाक' पकड़ने विह्वल भेलि कनिञा काकी अचक्के हमरा समक्ष मे ठाढ़ देखि ठमकि गेल रहथि...। नाति मुक्त भ' पैघ-पैघ साँस लेब' लगलनि...। तखन कनिञा काकीक आँखि विचित्र छलनि। नजरि झुकि गेल रहय हमर...। नाति विदा भ' गेलनि। हमरा लागल जे ओ आब गाम घुरतीह। पुछलियनि तँ ओ हमरा बढ़ि जयबाक संकेत कयलनि आ अपने जाइत नाति केँ पाछाँ सँ देखैत रहलीह...देखैत रहलीह...। की ओ वस्तुतः नातिए केँ देखि रहल छलीह वा आर किछु...? हम पच्छिम दिस अपन गाम जा रहल छलहुँ...। कतेक बेर घुरिक' तकलहुँ तँ देखल जे ओ ओहिना ठाढ़ पूब दिस देखि रहल छथि...लगातार...।

ओहि दिन जखन ओ गाम पर घुरि क' अयलीह तँ अपन दुःख की कहितथि बेटा सँ? ओ तँ पहिनहि सँ तैयार भेल बैसल रहनि स्वागतक हेतु। एक टा हाथ छोड़ब रहि गेलै नहि तँ कोन दुर्दशा बाकी रखलकनि राघव लला! बेटाक मुँहें ओहन घिनौन-घिनौन गारि सुनिक' काकी केँ लागि रहल छलनि जे हाड़ टा रहि जायत नहि तँ देहक माउस गलि गलि क' खसि पड़त...। इच्छा भेलनि जे जँ एहि काल धरती फाटि जाइत तँ ओहि मे समा जइतहुँ...। मुदा से संभव कहाँ छलनि...?

सरबन बाबू एहि सभ सँ निरपेक्ष। हुनक प्रत्येक भंगिमा जेना यैह कहि रहल छलनि, "हमरा नहि कह किछु। हमर पार मे तोँ एखन नहि छेँ। ओकरे कही जकर पार मे छही...।"

अगत्या ओहि दिन कनिञा काकी साँझ सँ ल'क' राति धरि टोल-पड़ोस आ गामक कोन अल्लाँ बाबू आ फल्लाँ बाबूक ओत' नहि गेलीह...किनकर-किनकर खुशामद नहि कयलनि..."हमर निसाफ करै जाउ...!" मुदा, कोनो गोटे दोसराक घरेलू मामिला मे बजबाक जरूरति नहि बुझलनि...। दिन भरि दोसराक घरेलू बात केँ कौचर्यक स्थायी विषय बना क' मजा लेनिहार स्त्री-पुरुष प्रत्यक्षतः हिनक मामिला मे हस्तक्षेप करब अनुचित बुझलनि...। असल मे सरबन बाबूक ब्रह्मपेंच आ राघव ललाक लंठइ सँ सबहक पिल्ही चमकि रहल छलनि...। के उपकार क' कय फँसत ग'। जाय दियौ। फेर तँ माय-बेटा, सासु-पुतोहु एक्के हैत...। बुड़बक बनब हम सभ। छोड़ह-छोड़ह। हमरा सभ केँ कुकुर कटने अछि की? जानय जौ जानय जाँत। हमरा सभ केँ अपने कोन कम समस्या अछि? आ जत' दू टा बासन रहैत छै ओतहि ने ढनमन होइत छै...। तखन घरक बात ल'क' दरबज्जे-दरबज्जे अँगने-अँगने बौआयब...। ई कोन नीक बात भेलै? नञि अपने चैन सँ रहतीह आ ने हमरा सभ केँ रह' देतीह गुंजाक माय। लगैए ईहो सनकल जाइत छथि...।

भोर जे कहियो नञि भेलै...

सनकि तँ गेले रहथि ओ। तखन ने ओहन विचित्र रूप धारण क' नेने रहथि...। ओहि राति ओ घुरिक' आँगन नहि गेलीह। दलानवला कोठली मे कोठी सभक दोग मे जाक' पड़ि रहलीह...। एक दिन...दू दिन...तीन दिन...। हम एहि बीच मे दड़िभंगा गेल रही। तेसर दिन जखन चारिबजिया ट्रेन सँ गाम अयलहुँ तँ ज्ञात भेल जे तीन दिन सँ ओ ओही अवस्था मे बिनु खयने-पीने ओही ठाम कखनो बैसल, तँ कखनो पड़ल रहैत छथि...। ने तँ किछु बजैत छथि आ ने ककरो बातक उत्तर दैत छथिन। निकासो लेल बाहर जाइत केओ नहि देखलकनि अछि। भ' सकैए रातिक' एकांत मे जाइत होथि। सभ समझा-बुझा क' हारि गेल अछि...हुनका पर कोनो असरि नहि...।

हम जखन पहुँचल रही तखन तुरंत सूर्य अस्त भेल छलाह। दलानक कोठली अपेक्षाकृत फइल रहलाक बादो किछु भरिआयल सन आ अन्हार सन लागि रहल छलै। कदाच् कोठी सभक कारणें...। आँखि गड़ाक' देख' पड़ल रहय हमरा...। हम मृदुल स्वर मे टोकलियनि, "कनिञा काकी!" दू-तीन बेर टोकलाक बादो ओ उठिक' देबालक सहारा ल' बैसलीह... आ नजरि उठाक' तकलनि...। चाड़क घसकल खपड़ा सँ बनल छिद्र सभ द'क' तुरंते डूबल सूर्यक ललौन प्रकाश कोठली मे जत'-तत' आबि रहल छलै...। प्रकाशक एहने एक टा टुकड़ा कनिञा काकीक बगल मे देबाल पर पड़ि रहल छलै...। ओहि मद्धिम होइत ललौन प्रकाश मे नोनी लागल देबाल आ कोठी सभक जर्जर स्थिति पर नजरि गेल... संगहि नजरि गेल कनिञा काकीक चेहरा पर...। जनम-जनम के उदासी जेना हुनक आँखि मे जमि क' रहि गेल रहै...। नहुए कंपित ठोर जेना किछु कहय चाहैत होअय, मुदा कहि नहि पाबि रहल होअय...। हम आग्रह कयने रहियनि जे अनशन तोड़थि। जे भेलै से भेलै। ओ तँ माय छथिन। बिसरि जाथु सभ किछु। हमरा विश्वास रहय जे ओ हमर बात मानि जयतीह...। मुदा, ओ टस-सँ-मस नहि भेलीह। हारिक' हम पुनः भोर मे अयबाक बात कहि चलय लगलहुँ...। अचानक देखल जे हुनक ठोरक कंपन बन्न भ' गेल रहनि आ आँखि एक टा विचित्र प्रकारक चमक सँ चमकय लागल रहनि...।

रोगाह इजोरिया सँ झँपाइत गाम...!

"एह! थइ-थइ भ' गेलैक...। महो-महो भ' ग्रेलैक...। कनिञा काकीक दुनू बेटा कमाल क' देलनि...। कतेक नीक जकाँ अपन कर्तव्य निमाहि देलनि...।" भोज खयनिहार लोकनिक अघायल टिप्पणी चलि रहल अछि...। खुशीक आवेग मे किछु गोटे अँइठे मुँहे नारा लगाब' लगलाह अछि...।

"कनिञा काकीक?"
"जय!"
"सरबन बाबूक?"
"जय!"
"राघव बाबूक?"
"जय!"
"धर्म केर?"
"जय हो!"
"अधर्म केर?"
"नाश हो!"
"प्राणी सभ मे?"
"सद्भावना हो!"
"विश्व केर?"
"कल्याण हो!"...

पहिल खेपक भोज समाप्त भ' गेल अछि। चन्द्रमा नहू-नहू अकास मे चढ़ि रहल छथि...मुदा इजोरिया साफ नहि अछि...। धूसर मटिआह रंगक...जेना रोगाह होअय...जांडिस सँ पीड़ित...। एहि रोगाह इजोरिया सँ आच्छादित गाम क्रमशः शांत भ' रहल अछि...।

ओम्हर सरबन बाबूक दलान पर पहिल खेपक ब्राह्मण-लोकनि पान-सुपारी ल'क' जा चुकल छथि...। खरहरा देल जा रहल अछि...। आ दोसर खेप मे बैसबाक लेल प्रतीक्षारत बुभुक्षु ब्राह्मण लोकनि तत्पर छथि...।

आ एत' हम एहि कुर्सी पर जेना जमि क' रहि गेल छी...की करी? जाइ कि नञि जाइ?

संपर्क : द्वारा-डॉ. पी. के. झा
पी.जी.टी. (हिंदी), केंद्रीय विद्यालय,
कटिहार, बिहार-854105
मो. 9430038969

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.६.मुन्नी कामत- समकालीन चित्रकार संजू दास



मुन्नी कामत

समकालीन चित्रकार संजू दास

कोनो कला सिखबाक लेल गुरु सँ बेसी लगन आऽ सतत् अभ्यास आवश्यक अछि।ई कहब अछि मिथिलाक धिया श्रीमति संजू दासक। हिनकर यैह हुबा हिनका सबल सफल बनौलक। १५ जनवरी १९७२ में जनमल ग्राम कमरौलीक (दरभंगा) श्री प्रभु नारायण आऽ श्रीमती देवकी दासक पुत्री गामक माटि सँ खेला आय राजधानीमे बैस सातो रंगक चितेरी बैन गेली। मिथिला संस्कारमे पोषित संजू दासक सफलताक पहिल अंश हुनकर मिथिलानी हेनाय अछि। मिथिलाक धिया जन्म संगे लुरी, व्यवहार, गुण विरासत मऽ लऽ अबैय य'।मुज -सिक्की कला,कुरुसिया,सब पाबैन -त्योहार मऽ घर -आंगन मऽ बनाओल अरिपन ,घरक देबाल पर आंकल विभिन्न कलाकृतिक दर्शन मिथिला में सहज अछि। संजू दास अहिसब कलामे निपूर्ण छलीह पर कहियो ई नै सोचने रहि जे अहि आधार पर ओऽ देशक नामी -गामी चित्रकार संगे अपनो स्थान सुनिश्चित करथिन।

गामक परिवेश मऽ पलल संजू दासक जीवन तखन दोसर मोर लेलक जखन हुनकर विवाह सन् १९९५में हाटी भोआर ग्रामक श्री रवीन्द्र दास सँ भेल।जे पटना आर्ट कॉलेज के प्रशिक्षित आधुनिक चित्रकार छल।यैह हिनकर गुरु आऽ सफलताक मूल कारण अछि।
जखन हाथ पकैर बाट देखबैय लेल हमसफर संग होय तँ फेर मंजिल कहाँ दूर रहैत अछि ओकरा हासिल करैयक जुनून और बैढ़ जाइत अछि। संजू दास जी जखन महानगर में बसली तँ घुमैयक नाम पर पति संगे चित्रकला प्रदर्शनी मेँ बेसी जैत छलीह।कलाक बिया तँ हुनका भीतर अंकुरैल पहिने सँ छल बस ओहि अंकुरैल बिया कैँ माटि आऽ प्रकाशक आवश्यकता छल जे पति श्री रवीन्द्र दास सँ प्राप्त भेल।आय पतियक संरक्षण मऽ वैह बिया प्रस्फुटित भऽ पौधक निर्माण केलक जकर उंचाई हमरा सबकें गौरवांवित करैत अछि।

संजू दास द्वारा बनाउल नीला आऽ हरियर पृष्ठभूमि पर हर उम्ररक आकृति मऽ प्रयोग कैल चटकिला रंगक कलाकृति अहाँ के अपना दिस खिचत। किछ देर लेल मात्र नै ,ठहरबाक बादों मनन लेल मजबूर करत। मिथिला कलाके आधुनिक कला सँ जोड़ि एगो अलग तरहक सृजन मात्र हिनके चित्रकला मऽ भेटैत अछि। हिनकर यैह शैली हिनका सबसँ विशेष बनबैत अछि। मैथिला शैलीक आत्मा अछि चटक रंग,बारिक रेखा,अलंकारिक झार-बूटि , आऽ प्रकृतिक चित्रण अहि शैलीकें आधुनिकताक आभूषण पहिरा संजू जी अपन कैनवास पर उतारैत रहलि।

हिनकर कला मात्र प्राकृतिक आऽ मानवीय सुंदरता तक सिमित नै अछि। चित्रकलाक अर्थ मात्र देबालक खुबसूरती नै बल्की ह्रदयक मनोभावके दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कलाक विभिन्न रूपक माध्यम सँ प्रकट कैर ओकरा रंग द्वारा सुन्दर आऽ सजीव बनेनाइ कला अछि। हिनकर कला किछ एहने सन अछि।जहि मऽ स्त्रीक श्रम, स्त्रीक स्वप्न, स्त्रीक संघर्ष, स्त्रीक मनक उड़ान, स्त्रीक शोषण आदि एगो स्त्री सँ बेसी सजीवता ओयमे और के आनि सकत। हिनकर मनन दृष्टि बहुत गंभीर अछि जे

हिनकर कलाकृति मऽ हम महसूस कऽ सकैत छी।

आदरणीय संजू दास २०बरख सँ लगातार पारिवारिक जिम्मेदारीयक निर्वाह करैत समाज मऽ प्रतिष्ठा प्राप्त कलैथ। हिनकर कला आब ग्राम आऽ राज्ये टा मऽ नै देश आऽ विदेशो मऽ शोभनीय अछि। अखन धैर ६टा एकल प्रदर्शनी हिनकर भेल अछि भारत कला संस्थानक संग्राहलय मऽ हिनकर कला संग्रहित छैन।
विभिन्न संस्था द्वारा सम्मानित श्रीमति संजू दास अखन बस उठि ठार भेलखिन आगा चैल हुनका अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर अपन गाम,राज्य आऽ देशक नाम स्थापित करैयक अछि। बिहार सरकार द्वारा वरिष्ठ महिला कलाकार सँ सम्मानित अहि कलाधर्मी केँ स्वस्थ तन आऽ शसक्त मनक उड़ान लेल हमर ढ़ेरों शुभकामना।
हिनका प्राप्त सम्मानक विवरण:-
2017-18 कुमुद शर्मा पुरस्कार (बिहार सरकार वरिष्ठ कलाकार पुरस्कार)
एकल
1999 ग्रैंडलेज़ बैंक गैलरी (चाणक्यपुरी दिल्ली)
1999 रवींद्र भवन, ललित कला अकादमी, दिल्ली
2000 रवींद्र भवन, ललित कला अकादमी, दिल्ली
2002 नंद लाल बसु कला दीर्घा, पटना
2012 कॉन्वेनसन लॉबी हैबिटेट सेंटर
2013 कन्वेंशन लॉबी हैबिटेट सेंटर
चयनित समूह प्रदर्शनियां
2022 नारी नारायणी तृतीया वसंत राव परियोजना
2022 गैलरी पायनियर द्वारा बिहार का विहंगम दृश्य
2021 राजेश चंद द्वारा क्यूरेट कैलऑनलाइन ड्राइंग प्रदर्शनी
2021 AIFACS अखिल भारतीय चित्रकला प्रदर्शनी
2000 पेस समूह प्रदर्शनी
2018 महिला चित्रकारक सामूहिक प्रदर्शनी एनजीएमए
मैथिली भोजपुरी अकादमी द्वारा 2010 रंगपूर्वी समूह प्रदर्शनी
2003 अनशेकल्ड स्पिरिट

2001 उनकी कहानी (फ्रीडम आर्ट गैलरी द्वारा समूह प्रदर्शनी संगठन)
2001 एएन इवनिंग विथ फिगर्स ओआरजी बाय आर्ट जंक्शन
भागीदारी
उमा शंकर पाठक द्वारा संवर्धित 2021 समूह प्रदर्शनी एनआईवी आर्ट गैलरी
2018 डाइसिटी के हस्ताक्षर
2003 यूपीएलकेए द्वारा इंटर स्टेट एक्सचेंज प्रदर्शनी ओआरजी
2001 उत्तर प्रदेश राज्य प्रदर्शनी
2001 उत्तर प्रदेश राज्य ललित कला अकादमी द्वारा पश्चिमी क्षेत्र प्रदर्शनी संगठन
2001 लघु कला प्रदर्शनी गढ़ी
1997 ललित कला अकादमी द्वारा कला मेला संगठन
1997 AIFACS अखिल भारतीय चित्रकला प्रदर्शनी
एआरटी शिविर
2022 यूपी ललित कला अकादमी और एमएसएम ट्रस्ट द्वारा अखिल भारतीय शिविर पटनातो पी जम्मू ओआरजी
2022 अर्थशिला कला संवाद बिहार कला शिविर प्रिवार्थन द्वारा आयोजित
रवींद्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय द्वारा 2021 अखिल भारतीय शिविर संगठन
1998 ऑल इंडिया कैंप ओआरजी बाय पेस ग्रुप नोएडा
2007 ऑल इंडिया आर्ट कैंप देहरादून ओआरजी बाई रीच
2009 साहित्य कला परिषद दिल्ली द्वारा अखिल भारतीय शिविर संगठन
कार्य संग्रह: एनजीएमए दिल्ली, आईटीडीसी दिल्ली, परिवर्तन बिहार और भारत और विदेश में कई निजी गैलरी
स्लाइड शो संगोष्ठी और प्रस्तुति
भारत की लोक कला यूपी ललित कला द्वारा आयोजित
आईजीएनसीए दिल्ली में मैथिली साहित्य उत्सव
2002 पटना (पुनाश पटना द्वारा ओआरजी)
2018 मिथिला पेंटिंग पर लखनऊ ललित कला अकादमी।

प्रकाशन
कवर पेज (आउटलुक अंग्रेजी और हिंदी, हंस, वर्त्तमान साहित्य और गृहशोभा) आदि
सामकालीन कला (हिंदी), दैनिक जागरण, सखी पत्रिका, जनसत्ता, राष्ट्रीय सहारा, पटना हिंदुस्तान में लेख

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.७.मुकेश दत्त- अपन शैली आ तकनीकक बलेँ आधुनिक कला मे अलग पहचान बना रहलीह संजू दास



मुकेश दत्त

अपन शैली आ तकनीकक बलेँ आधुनिक कला मे अलग पहचान बना रहलीह संजू दास

मिथिला प्रदेशक दरभंगा जिलाक कमरौली गाम मे जनमल, आधुनिक शैलीमे अपन कलाकृतिक लेल चर्चित, पहिल लोक कलाकार संजू दास भारतक चर्चित चित्रकार छथि। एहि कलाकारक कलाकृतिक समीक्षा आइ देशक चर्चित पत्र-पत्रिकामे छपैत रहल अछि। हिनक एखन धरि छह गोट एकल प्रदर्शनी आयोजित भऽ चुकल अछि अओर हिनक कलाकृति देशक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घामे सेहो संग्रहित अछि। बिहार सरकारक प्रकाशित 'बिहार की समकालीन कला' आ 'सौ साल मे बिहार की कला-कला और कलाकार' दूनू पुस्तकमे हिनका नव पीढ़ीक प्रतिभावान कलाकारक रूपमे उल्लेख कएल गेल छैन्ह। बिहार सरकारक वरिष्ठ महिला कलाकारक सम्मान 'कुमुद शर्मा पुरस्कार' सँ सम्मानित संजूजीक प्रदर्शनी एखन बिहार सरकारक पटना स्थित बिहार म्यूजियममे लागल छैन्ह। समकालीन कलामे हर कलाकारक अपन खास शैली होइत अछि, मिथिला पेंटिंगक दुनियासँ आधुनिक कलाक दुनियामे

कदम राखयवाली पहिल कलाकार संजूजीक पेंटिंगकेँ क्यो आसानी सँ चिन्ह आ वर्गीकृत कऽ सकैत छथि।

हिनक चित्रमे ग्राम्य जीवनक व्यथा आ नारी जातिक आंतरिक करूण गाथाक झलक भेटैत अछि। संजूजी वएह चित्र बनएवा मे रूचि राखैत छथि जकर सीधा सम्बन्ध मानवीय मूल्य आ वास्तविकतासँ होए, प्राकृतिक विषय पर चित्र बनाएब हिनका सेहो खूब पसिन्न छैन्ह। एकटा ग्राम्य जीवनसँ अपन शुरूआत आ स्वप्रशिक्षित चित्रकार भेलाक वावजूदो हिनक कलाकृति मे नारीवादी कलाकार जेना धार सेहो देखबा मे आबैत अछि। ऑल इंडिया फाइन आर्ट एंड क्राफ्ट्स सोसाइटी, ललित कला अकादमी आदि कतेको प्राइवेट गैलरी सबमे हिनक कलाकृति प्रदर्शित भऽ चुकल छैन्ह। हिनक चित्रकेँ एकटा नवीन तरहक शैली कहल जा सकैत अछि जाहिमे मॉडर्न आर्ट आ पारम्परिक मिथिला शैली दूनूक नीक प्रयोग देखबामे आबैत अछि। उखरि-मूसर, सोन चिरईया, दौनी-ओसौनी, नदी-नाला, खेत-खरिहान, धन-रोपनी, झूमर-टिकुली, चौपाल-पंचायत सभ किछु एकटा कैनवस पर उपस्थित कऽ दैत छथिन संजूजी। हिनक सौम्यता आ कलाक प्रति समर्पण हिनक प्रसिद्धिक मुख्य कारण बुझना जाइत अछि।

माए देवकी देवीसँ लेल प्रेरणा हिनक ऊर्जा थिकैन्ह जे स्वयं एकटा गृहस्थ महिला छलीह मुदा कला-कौशलमे निपुण। हुनके सँ ई सुजनी कला, अरिपन देनाय आ मिथिला पेंटिंग बनेनाय सिखलीह। हिनक पिता श्री प्रभु नारायण दास ब्लॉक मे ग्रामसेवक छलाह। जतय धरि हिनक शिक्षा-दीक्षाक गप्प अछि तऽ अपन गामेक स्कूलमे पढ़ी आ गामेमे रहि प्राइवेट सँ ग्रैजुएसन केलैन्ह। विवाह हाबीभौआर निवासी आधुनिक चित्रकार रवीन्द्र दाससँ भेलैन्ह। दूइ पुत्रीक माए संजूजी गृहस्थाश्रम सम्हारैत अपन कलाक प्रति सदिखन समर्पित रहैत छथि।

बाल्येकालसँ मिथिला पेंटिंग बनबैत आबि रहलीह संजूजीक रंग लगेबाक तरीका आ संयोजनमे सेहो आब परिवर्तन देखबामे आबैत अछि। आब हिनक आकृतिमे रेखाक नहि बल्कि रंगक प्रमुखता होइत छैन्ह। पहिने ई लोककला शैलीमे काज करैत छलीह मुदा विवाहक बाद लोक-कलासँ प्रभावित आधुनिककला शैलीमे काज करय लगलीह। ई बदलाव दिल्ली एलाक किछु दिन बाद राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घामे महिला कलाकारक

प्रदर्शनी देखलाक बाद अयलैन्ह। ओहि प्रदर्शनीमे कतेको आधुनिक कलाकार सभहक काजमे लोककलाक प्रभाव छल, तऽ ई सोचय लगलीह जे हमहुँ तऽ एकटा लोककलाकार छीहे हमरा तऽ मात्र आधुनिककलाक किछु बारीकी टा सीखबाक जरूरत अछि। ओकर बादे सँ हिनक आधुनिककलाक यात्रा शुरू होइत छैन्ह। हिनक सभ कलाकृतिमे विषय स्त्रीक जीवन आ हुनक आकांक्षा होइत छैन्ह जे मात्र आकृतिमूलक कले मे संभव भऽ सकैत अछि। ग्रामीण जीवन तऽ रंग-बिरंगा होइते छैक, शायद तैँ हिनका चटख रंगसँ किछु बेसी स्नेह छैन्ह। आइ एकटा स्वप्रशिक्षित कलाकारक रूपमे अपन कला यात्रासँ बेहद खुश भऽ कहैत छथिन, "जाहि कला महाविद्यालयमे हमर नामांकन नहि भेल आइ ओतुका छात्र-छात्रा आ शिक्षक लोकनि सेहो हमरा एकटा कलाकारक रूपमे सम्मान दैत छथि, हमरा लेल एहिसँ बढ़ि कऽ आर खुशी की होयत।" देशक लगभग सभ महानगरमे हिनक काज प्रदर्शित भऽ चुकल अछि आ कतेको कला शिविरमे हिनका आमंत्रित कएल जा चुकल छैन्ह। हिनक पहिले प्रदर्शनीसँ काम बिकय लागल छलैन्ह, दोसर प्रदर्शनीक बाद हिनकर कलाकृति आधुनिक कला दीर्घामे संग्रहित भेलैन्ह। प्रिंट आ इलेक्ट्रानिक मीडियामे हिनका आ हिनक कलाकेँ खूब जगह भेटैत छैन्ह। हिनका नजरिमे कला जीवनक प्रतिबिम्ब अछि, तैँ हिनक किछु कलाकृतिमे साहित्यक प्रभाव देखल जा सकैत अछि। किएक तऽ हिनका कविता आ नाटक सेहो खुब पसंद छैन्ह। हिनक शुरूआती कलाकृति सब बेसी ग्रामीण जीवनशैली पर आधारित होइत छल, मुदा आइ-काल्हि ई नारी मनक आकांक्षा पर काज कऽ रहल छथि। अणुशक्ति सिंह, अनामिका आ केदार नाथ सिंह केर कविता हिनका खुब पसंद छैन्ह।

कला हिनका लेल आम दिनचर्या छल किएक तऽ मिथिलाक हर स्त्री कलाकार होइ छथिन, मुदा ई कहियो ई नहि सोचने रहथि जे आगाँ चलि ओ स्वयं एकटा कलाकार बनतीह। चूँकि हिनकर पति सेहो एकटा प्रसिद्ध कलाकार छथिन तऽ हिनको मनमे भेलैन्ह जे हिनको कलाक विधिवत शिक्षा लेबाक चाही मुदा से संभव नहि भऽ सकलैन्ह। हिनका जनतबे दुनिया भरिक कोनो आर्ट कॉलेज कलाकृति बनेनाय नहि सिखाबैत छैक। एकटा कलाकार बनबाक लेल तकनिकी शिक्षाक अलावे निजी

चिंतन आ सामाजिक-राजनीतिक स्थितिक जानकारी सेहो जरूरी होइत अछि।

दिल्लीसँ प्रकाशित होएवला मैथिली त्रैमासिक पत्रिका 'मिथिलांगन' लेल देल अपन एकटा साक्षात्कार मे पुछल प्रश्न "अहाँकेँ कलाकारे बनकाक मन किएक भेल?" केर उत्तर मे कहने छलीह, "जेना मिथिलाक आम स्त्रीगण विवाह आ पर्व-त्यौहारक अवसर पर कागज, कपड़ा आ दीवार पर थोड़-बहुत चित्रकारी करैत छथि तहिना हमहुँ करैत रही। मुदा कहियो हम सोचने नहि रही जे हमहुँ एक दिन कलाकार बनब, किएक तऽ तखन हमरा ई बात नञि बूझल छल जे शहर मे गामक एहि कलाकेँ लोक एतेक पसिन करैत छथि आ कलाकार लोकनिक एतेक सम्मान आ पाई देल जाइत छैन्ह। शुरूआत मे हम कागजे पर जलरंगसँ छोट-छोट पेंटिंग बनाबी ताहि पर आयल पेस्टल लऽ कऽ ओकरा फिनिशिंग टच दैत रही। जलरंग आ आयल पेस्टलकेँ बाद हमरा ऐक्रेलिक रंगसँ कैनवास पर काम करबाक मन भेल। मुदा हम छोटे आकार मे बेसी पेंटिंग बनौलहुँ। मात्र एकटा पैघ आकारक बनौलहुँ जेकरा पहिल एकल प्रदर्शनी मे प्रदर्शितो कएलहुँ। किछु पेंटिंग बीकायल जाहिमे ओ बड़का पेंटिंग सेहो छल, ओहिसँ हमर आत्मविश्वास बढ़ल। तकर बाद हम पैघ-पैघ आकार पेंटिंग बनेनाय शुरू कऽ देलहुँ। हमर पति हमरा सदिखन सहयोग केलैन्ह आ उत्साह बढ़ौलैन्ह। दिल्लीक खुलल माहौल हमर कलात्मक अभिरुचिकेँ नव दिशा देलक।"

एहिये साक्षात्कारमे "आधुनिक कलाक प्रति कोना आकर्षित भेलहुँ?" केर जवाब दैत कहलैन्ह, "चूँकि हमर विवाह एकटा आधुनिक कलाकारसँ भेल तैं विवाहक बाद हमरा बेसी भेंट-घाँट कलाकारे लोकनिसँ भेल। एतेक धरि जे घूमनाई-फिरनाइयो बेसी कलादीर्घे आ कला प्रदर्शनिये मे भेल। ओहि समय राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय मे भारतीय महिला कलाकार सभहक एकटा प्रदर्शनी देखबाक अवसर भेंटल ओकरे बाद हम आधुनिक कलाक प्रति आकर्षित भेलहुँ। हम सोचलहुँ किएक नञि मिथिलाक लोक कलाकेँ आधुनिक कलासँ जोड़ल जाए। तकर बाद हमर कलामे एकटा निखार आबि गेल। जखन हमर पेंटिंग राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय लेल चयनित भेल तखन कतेको कलाकार कहलाह जे आब अहुँ आधुनिक कलाकार भऽ गेलहुँ।"

अपन सबल पक्षमे, नव-नव क्षेत्रक लोक सबसँ गप्प केनाए हिनका नीक लागैत छैन्ह, तऽ स्त्रीक शोषण वा स्त्रीक बुराई पसंद नहि छैन्ह। अपन पेंटिंग मे सेहो एहि विषयकेँ ओ प्रमुखतासँ चित्रित करैत छथि। साहित्य आ नाटक खूब पसंद छैन्ह जकर उपयोग ओ अपन कलाकृतिक पात्र-चित्रण करबामे करैत छथि। तऽ दोसर दिश दुर्बल पक्षमे हुनका कजोट छैन्ह जे, हमरा अंग्रेजी नहि आबैत अछि आ कला क्षेत्रमे बेसी किताब, सेमीनार आ खरीददारक वार्ता अंग्रेजी मे हेबाक कारणें दिक्कत होइत अछि।

अपन पेंटिंगक बारे मे बताबैत कहैत छथि, "पॉल गोगवां आ मार्क शैगालक रंग योजना हमरा बड्ड पसिन अछि, हमर पेंटिंगकेँ देखलासँ अहाँकेँ ई बुझा जायत। हमर शुरुआती प्रदर्शनीक चित्र सबमे मिथिलाक ग्राम्य जीवनक सुन्दर झलकी छल, ताहि मे बेसी ग्रामीण महिला सभहक दैनिक क्रियाकलाप पर आधारित चित्रण छल। ओकर बाद स्त्री मनक संवेदना आ आकांक्षाक चित्रण केनाए शुरू कएलहुँ मुदा प्रतीक आ बिम्ब गामक स्मृतिये पर आधारित छल। हालाँकि अपन चित्रक संयोजन मे हम कोशिश करैत छी जे मधुबनी पेंटिंगक खुशबू बाँचल रहय, जेना- पूरा सतह पर अलंकारिक बेल बूटा, रेखांकन आ छोट-छोट आकार सबकेँ सजावट जकाँ उपयोग करैत छी। बेसी चित्रकार स्त्री देहक सुंदरताक चित्रण करैत छथि। मुदा, हम एकटा स्त्री छी तैं हमर कोशिश रहैत अछि जे स्त्रीक श्रम, ओकर प्रेम, ओकर आकांक्षा आ ओकर मोनक भावना आदिकेँ सेहो चित्रित कएल जाए। हमर कलाकृति पहिल नजर मे लोककला जकाँ आभास दैत छै मुदा, ओकर संयोजन, रंग लगाबयकेँ तरीका आ विषय समकालीन होइत छैक। वएह कारण छैक जे हम समकालीन कलाक सब मुहावरा इस्तेमाल करैत छी खासकर उत्तर आधुनिकतावाद आ नारीवादी कलाकृतिक। एतेक धरि जे डिजिटल कला मे सेहो बड्ड संभावना देखि रहल छी।"

मिथिला पेंटिंग आ आधुनिक कलामे फरक करैत कहैत छथि, "देखबा मे जरूर अलग लगैत छै, मुदा सब कला एक्के रंगक छैक। हमरा जनितबे आधुनिक कला आ लोक कलामे बेसी फरक नहि छैक खाली माध्यमक फरक छैक। आधुनिक कला फाइन आर्टक विकसित रूप कहल जा सकैत अछि। बेसी लोक यथार्थवादी शैली मात्रकेँ फाइन आर्ट बूझैत

छथिन आ हुनका कठिन बूझना पड़ैत छैन्ह आ किछु गोटे आधुनिक कलाकेँ उटपटांग काज बुझैत छथि। आधुनिक पेंटिंग मे अमूर्तता आनबक प्रयासमे एक रंगमे कतेको रंग आ आकारकेँ ऊपर आकार देखबा मे भेटत। ओना आधुनिक कलाक बेसी प्रयोग शैली आ माध्यमक भेल छैक। महासुंदरी देवीकेँ रेखांकन देखिक कतेको कलाकार पिकासोसँ तुलना करय लागैत छथि। कोनो कलाकारकेँ अपन शैली छैन्ह आ नव विषय पर काजो कऽ रहल छथि खाली माध्यमक फरक भेलासँ कोना नहि हुनका आधुनिक कलाकार कहबैन्ह। रहल बात समकालीनताक तऽ मिथिला पेंटिंगमे आब कतेको कलाकार दहेज, आतंकवाद, स्त्री-पुरुखक संबंध, भ्रूण हत्या, पर्यावरण सन आजुक समसामयिक विषयसँ जुड़ल नव सोच आ नव संयोजनमे काज कऽ रहल छथि। समकालीन कलाकारो सब एहने विषय पर काज करैत छथि।"

मिथिला कलाक मिथिलामे स्थिति पर ओ कहैत छथि, "कहल जाइत छैक जे संपूर्ण मिथिलाक जन-जनमे ई कला रचल-बसल छैक। मुदा हमरा देखबामे एहेन बात नहि आयल। मात्र मधुबनी शहरकेँ नजदीकवला गाम सब व्यावसायिक रूपसँ सफल भेलाक कारणेँ पूरा गामक लोक चित्रकारीमे लागल छथि। आन गाम सबकेँ बेसी प्रचार-प्रसार नहि भेलै। तैं ओ लोकनि मात्र पाबनि-तिहार धरि एहि कलाकेँ सीमित केने छथि। शहरकेँ दिश बेसी आकर्षण भेलाक कारण आबक लोक एहि कलाकेँ नहि सीखय चाहैत छथि। शहरमे जे मैथिल परिवार रहैत छथि हुनको ड्राइंग रूममे मिथिला पेंटिंग नहि भेटत, एतबै नहि गामो-घरमे आब देवाल पर सीनरी भेट जाएत, मुदा मिथिला पेंटिंग नहि भेटत। एखन धरि एहि कलाक लेल संग्रहालयक मिथिला आ देशक आन भागमे कमी अछि। दोसर कारण अछि मिथिला कलामे रोजगारक संभावना, सम्पूर्ण मिथिला तऽ नहि मुदा किछ गाममे अवश्य ई कला रोजगारक प्रमुख साधन बनि गेल अछि। कोनो कलाकेँ रोजगार बनेबाक लेल कलाकारकेँ लगातार काज करय पड़ैत छैन्ह आ अपनाकेँ कलाकार जकाँ प्रचारित सेहो करए पड़ैत छैन्ह, एतबै नहि ओकर बिक्री लेल सेहो प्रयत्नशील रहय पड़ैत छैन्ह।"

संजू जी मिथिला पेंटिंगक व्यवसायीकरण पर अपन विचार राखैत एकटा संगोष्ठी मे कहने छलीह जे, "व्यवसायीकरण शब्दकेँ लोक गलत नजरिसँ

व्यवहार करैत छथि। मुदा हमर अपन विचार जे कोनो कलाक विकासक लेल व्यवसायीकरण जरूरी छैक। व्यवसायीकरणक लाभ छै, तऽ किछु हानि सेहो छै। लाभ ई भेल जे मिथिलाक स्त्रीगण आर्थिक रूपसँ सबल भेलीह बिनु पढ़लो-लिखलो स्त्रीगण देश-विदेश घुमि एलीह। हानि ई भेल जे आब बेसी कलाकार मौलिक काज नहि कऽ कऽ नकल करैत छथि। बेसी चर्चित कलाकार लोकनि दोसरासँ काज कराबय लगलाह। किछु कलाकारक नीक स्थिति छैन्ह जिनका संपर्क छैन्ह, मुदा बेसी कलाकार एकरा मजदूरीसँ नीक बुझिक काज कऽ रहल छथि आ कलाकार बला सम्मानो भेटैत छैन्ह।"

एकटा परिचर्चामे, एहि क्षेत्र मे आबय लेल आवश्यक प्रशिक्षण आ संस्थानक विषयमे अपन विचार राखैत कहने छलीह, "अपन समाजमे सभहक माए-बहीने एहि कलाक प्रशिक्षण दैत छथिन। मुदा, एखन धरि मधुबनी स्थित मिथिला आर्ट इन्स्टीच्यूट नीक कला संस्थान मानल जाइत छैक। किएक तऽ ओतय नीक शिक्षक, कलाक सामग्री आ नीक कलाकारक चित्र खरीदबाक व्यवस्था सेहो छैक। सिखबा लेल कोनो नीक कलाकारसँ सिख सकय छी मुदा सरकारी नौकरी लेल कला महाविद्यालयमे शिक्षा आवश्यक अछि। ओतय पाँच सालक डिग्रीक संग बेसी कलाकारक ज्ञान लेबाक मौका भेटैत अछि। भारतमे सभ राज्यमे तऽ नै मुदा पटना, बनारस, लखनऊ, मुंबई, बड़ौदा, शांति निकेतन आदिमे एकर नीक पढ़ाई मानल जाइत अछि।"

मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्लीक त्रैमासिकी पत्रिका 'परिछन' के देल अपन साक्षात्कारमे "अपनेक चित्रमे बेस चटख रंगक प्रयोग देखबामे अबैत अछि। अहाँ अपन कलाक अन्तर्वस्तुक संबंधमे बतबियौक?" प्रश्नक उत्तर दैत कहलैन्ह, "हमर कलाकृतिमे स्त्रीक भूमिका बेस सकारात्मक रहैत अछि। किछु दिन पहिने स्त्री-मनोदशा आ ग्रामीण स्त्रीक सक्रिय भूमिका पर एकटा प्रदर्शनी आयोजित कयने छलहुँ। हमर मान्यता अछि जे जौँ पुरुष आर्थिक जिम्मेवारीक निर्वाह करैत अछि तऽ स्त्री सेहो सामाजिक जिम्मेवारी निर्वाह करबामे सहयोग दैत छथि। गाम-घरक अशिक्षित स्त्रीगण सेहो शहरक कामकाजी स्त्री लोकनि जकाँ आर्थिक सहयोग दैत छथि। एकर अतिरिक्त हम स्त्री-पुरुष संबंधक जटिलताकेँ सेहो अपन चित्रक विषय बनौने छी। आरम्भ भनहिं हम

पारंपरिक अरिपन आ कोहबर आदिक रचनासँ कयलहुँ मुदा एखन धरि हम कतेको श्रृंखला (सीरीज) पर काज कयलहुँ अछि हमर पहिल प्रदर्शनी ग्रामीण जीवनक क्रिया-कलाप पर केन्द्रित छल। हमर 'मिड नाइट टॉक' चित्र बेस चर्चित रहल। जकरा जर्मनीक एकटा कला संग्राहक खरीदने छलाह। छटम प्रदर्शनीमे हम 'श्वेत-श्याम चित्रक प्रदर्शनी लगौने छलहुँ। आइ-काल्हि ग्रामीण दृश्य पर आधारित चित्र बना रहल छी। कुल मिला कऽ अहाँ कहि सकैत छी जे हमर कला ग्रामीण जीवनक सकारात्मक पक्षकेँ चित्रित करैत अछि, कारण जीवनक आरंभिक बीस साल हम गामे मे रहलहुँ जकर प्रभाव आइ धरि हमर काज पर अछि। अहाँ चाहि तऽ हमर कलाकेँ 'यादि मे बसल गाम' कहि सकैत छी।

हम मूलतः आकृतिमूलक चित्रे बनबैत छी। चित्र बनयबासँ पहिने रेखांकनक रूपमे कोनो दृश्य वा आकृतिक रचना करैत छी। फेर कतेको रेखांकनक संयोजनसँ संपूर्ण चित्रक कल्पना करैत छी। किछु कला मर्मज्ञ लोकनि हमर चित्रकेँ देखि कऽ जिज्ञासा प्रकट कयलैन्ह जे कैमरा सँ सेहो एतेक दूर अओर एतेक निकटतम चित्र एक संगे नहि झीकल जा सकैत अछि तऽ अपनेक व्यू-प्वाइंट की होइत अछि। हम हुनका बतौलियैन्ह जे दरअसल हम कलाक दृश्यकेँ एक संगे क्रममे जोड़ैत छी। बस यात्राक क्रममे देखल गेल दृश्य हमर व्यू-प्वाइंट होइत अछि। एखन धरि हम जलरंग रेखांकन, एकेलिक व मिश्रित माध्यम सबसँ काज कयलौंह मात्र आयल कलरमे काज करब बाँकी अछि। अनुमान लगा सकैत अछि जे मिथिलाक लोक-कला से हमर आत्यांतिक जुड़ाव अछि हमर चित्रमे मानवाकृतिक आँखि आ मुखमंडल बनावटि मिथिला पेंटिंगसँ प्रभावित अछि। चिड़ै, पशु इत्यादि हम मिथिला चित्रकलाक मूल स्वस्पहिं जकाँ बनबैत छी। हँ, रंग भरबाक ढंग व संयोजन आधुनिक कलासँ प्रभावित अछि। विषयक झुकाव संपूर्ण पुरबिया संस्कृति दिस अछि। कोनो कला संपदाक संरक्षण व्यक्तिक स्तर पर नहि होइत छैक। व्यक्तिगत स्तर पर अहाँ अपन कलाकेँ निखारू आ ओकरा विकसित करत रहियौ तऽ निश्चित रूपसँ क्षेत्र विशेषक कला संपदा समृद्ध हेतैक आ ओकर विकास स्वतः हेतैक।"

तऽ एकटा आन प्रश्न, "समकालीन भारतीय कला परिदृश्ये संबंधमे अपने

किछु कहय चाहब? अहाँक कला-रचना समकालीन कला परिदृश्यमे कोन तरहें हस्तक्षेपऽ रहल अछि?" केर प्रतिउत्तर मे कहलने छलीह, "समकालीन परिदृश्य मे भारतीय कला संपूर्ण विश्वक केंद्र बिंदु बनय जा रहल अछि। विश्वक सबसँ पैघ नीलामीमे भारतीय कला आ पारंपरिक कलाक नीलामी जोर-शोर सँ भऽ रहल अछि। दुनिया भरि मे भारतीय कलाक प्रति उत्सुकता बढ़ल अछि। दुनियाक सबसँ पैघ संग्रहमे मिथिला कला अओर पुरबिया क्षेत्रक कलाकार लोकनिक कलाकृति संग्रहित कएल जा रहल अछि। हमर कला समकालीन कला परिदृश्यमे हस्तक्षेप करैत अछि, एहि संबंधमे हम की कहू, ई तऽ कला समीक्षक बतौताह। मुदा हमरा पहिल बेर अपन काजक महत्त्व तखन बुझबा मे आयल, जखन कलाकृति नेशनल गैलरी मॉर्डन आर्ट द्वारा खरीदल गेल। किछु विदेशी कला समीक्षक लोकनि सेहो हमर कलाकृति खरीदलैन्ह। माधवी पारेख, पिलोपोच खानवाला सन कतेको महिला कलाकार जे स्वयं प्रशिक्षित छथि, हमर कलाकृति सँ प्रेरणा भेटैत छैन्ह से जतौलैन्ह। हमर किछु रेखांकन हंस आ समकालीन भारतीय साहित्य सन साहित्यक पत्रिका मे प्रकाशित भेल अछि।"

आजुक कलाक ट्रेंड केर बारे मे पुछला पर कहैत छथि जे हमरा बुझने आइ-काल्हि दू तरहक कलाक ट्रेंड छैक - फोटो रियलिज्म आ दोसर इंस्टॉलेशन कला। एकटाक कारण बाजार छैक तऽ दोसरक बाजार मे अपनाकेँ स्थापित करब। समकालीन कलाक दुनिया मे बाजार हावी छैक। जे कलाकारक कृति जतबा मे बिकैत छैक ओ ओतेक पैघ कलाकार मानल जाइत छैक। हालाँकि हम बाजारवादकेँ नीक मानैत छी, किएक तऽ जौँ हमर कलाकृति नहि बिकल रहैत तऽ भरिसक हम अपन छटा एकल प्रदर्शनी नहि कऽ पबितहुँ।

अखन किछु दिन पहिने सोशल मिडिया पर हिनक कलाकृति बेस चर्चामे रहल, कारण छल हिनक कलाकृतिकेँ अश्लील वा कलाकृतिमे अश्लीलता। एहि मादे हमर एतबे कहब अछि जे कोनो कलाकारक कलाकृति वा रचना पर अपन विचार रखनाय अति उत्तम विषय अछि, मुदा अपन विचार राखब सँ पूर्व ओहि विषयक जानकार भेनाय अति आवश्यक अछि। जाहि विषय मे ज्ञान नै अछि ओकर ज्ञान आ जानकारी लेलाक बादे अपन विचार राखब उचित। संजु दास जीक पेंटिंग कैँ

ष्व्नजसववाष् सदृश्य अंतरराष्ट्रीय पत्रिका अपन कवर पर स्थान देलक (जकर चहूँदिश प्रशंसा कएल गेल), ई अपना सभ लेल गौरवक बात अछि। रहल अश्लीलताक बात, तऽ प्रत्येक व्यक्तिक नजर, देखबाक-सोचबाक-विचारबाक अपन-अपन दृष्टिकोण होइत अछि। जखन कियो अपन माएकेँ, अपन बहिनकेँ, अपन प्रेमीकेँ, अपन पत्नीकेँ, अपन बेटीकेँ देखैत छथि तऽ आँखि तऽ एक्के रहैत अछि मुदा सबकेँ देखबाक नजरि बदलि जाइत अछि। एक्के आँखिसँ लोक अपन माए, अपन पत्नी दूनूकेँ देखैत छथि, मुदा हृदय मे माए लेल श्रद्धा आ सम्मान तऽ पत्नी लेल प्रेम आबैत अछि।

ई हमर व्यक्तिगत माननाय अछि जे अश्लीलता प्रकृति वा रचना मे नै व्यक्तिक दृष्टिकोण मे होइत अछि। अपन दृष्टि नीक तऽ संसारक सभ वस्तु नीक। संगहिं नीक कामक सदिखन प्रोत्साहन हेबाक चाहि, नै की ओहिमे नीम-नुक्स निकालबाक चाहि। जेना कोनो चित्रकार साहित्यिक रचना पढ़ि कऽ चित्र बनाबैत छथि, तऽ ओहि रचनामे समायल भावकेँ ओ अपन तूलीका सँ गढ़ैत छथि। ठीक तहिना कतेको रास कवि कोनो चित्र आ मूर्तिशिल्प देखि अपन कविताक रचना करैत छथि आ अपन रचना मे ओहि मूर्तिशिल्पक हुबहु वर्णन प्रस्तुत करबाक प्रयास करैत छथि, तखने तऽ हुनक रचना ओकर (चित्र आ मूर्तिशिल्पक) प्रतिरूप बनत। संभवतः संजूजी सेहो अपन चित्रकारी मे सएह गुण आनय लेल एहि तरहक प्रयोग करैत हेतीह।

-मुकेश दत्त, मो 9910952191

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.८.गोविन्द चन्द्र दास- कामसूत्र के बिना कोनो चित्र शैली नहि छैक- लोककला के साक्षात विश्वविद्यालय गुमनाम नायक कृष्ण कुमार कश्यप (आ शशिबाला)*



गोविन्द चन्द्र दास

कामसूत्र के बिना कोनो चित्र शैली नहि छैक- लोककला के साक्षात विश्वविद्यालय गुमनाम नायक कृष्ण कुमार कश्यप (आ शशिबाला)*





मिथिला लोककला आर संस्कृति केर महान केन्द्र थीक। मुदा एकरा वैश्विक पटल पर अनबा मे कृष्ण कुमार कश्यप कें विशिष्ट योगदान छन्हि। ओना त ई एकटा समाज सुधारक, नारी उत्थान केर संस्कृति दूत छलाह, मुदा विवाद सेहो हिनक संग लागल रहल। कश्यप जी आई कोनो परिचयक मोहताज नहि छथि। मिथिलाक संस्कृति विशेष क कला के संदर्भ मे हिनक अवदान के कोई बिसरि नहि सकैछ आओर नहि बिसरबाक चाही। एकर बावजूद समाज आर समालोचक कश्यप जीक संग न्याय नहि केलनि। हिनक मूल्यांकन उचित ढंग सं नहि कएल गेल। हिनका प्रति समाजक दृष्टिकोण बेस कठोर रहलैक। ओना त मिथिला कला संस्कृति अखनो समालोचनाक दृष्टि सं वंचित जकां अछि। मुदा सोशल मीडिया केर युग मे यदा-कदा नीक-बेजाय के विमर्श होमय लागल अछि। हालांकि कश्यप जी कें कामकाज केर आलोचना त भए सकैछ, मुदा ताहि स्तरक कोनो अथॉरिटी नहि बुझना जाइछ, जे हिनक उचित आकलन कए सकैथ।समाजक वास्ते कश्यप जी कें कतेक पैघ योगदान छन्हि से बुझनाई अत्यंत आवश्यक अछि। मुदा से नहीं, हिनक बनाओल चित्रकारी मे बेस सहजता सं अश्लीलताक अन्वेषण क लेल जाइछ। मुदा एतबे बात नहि छैक। पहिल बात जे कला रसविहीन नहि भए सकैछ। भारतीय मानस मे नवरसक अवधारणा छैक। ताहि कोनो कलाकार रस सं विरत भए नहि सकैछ। दोसर बात जे प्रत्येक कलाकार आर कथाकार के अपन शैली होइत छैक आ तेकर पहचान समाज के करय पड़तै।

बातचीत के क्रम में एक बेर हम कश्यप जी कें कथित आपत्तिजनक पेंटिंग पर प्रश्न केलियन्हि त हुनक कहनाम रहैन जे बहुजन के जनतब मे

मिथिला चित्र तखन एलै जखन एकर बाजार शुरू भेल रहैक। चाहे कोनो जाति के महिला एकरा बनबथि होथि चाहे कायस्थ समाज मे एकर बेसी चलन छैक त सबके बुझबा मे तखने एलैक जखन 30-35 बरख पहिने बाजार मे समान गेलैक। एकर मतलब ई नहि छैक जे एकर परम्परा मे कामसूत्र नहि छैक। कामसूत्र के बिना कोनो चित्र शैली नहि छैक। हुनक कहनाम रहनि जे पहिने कोहबर घर मे जाहिठाम कोठी राखल रहए ताहिठाम एकटा पार्टीशन होइत रहैक। सुनै छियै जे शब्द अछि कोनी-खोन्ही। ओ खोन्ही कोहबर घरक एकटा गुप्त भाग छैक। जाहिठाम सबहक आवाजाही नहि रहैत रहैक तेकरे खोन्ही कहल जाएत रहैक। ताहि खोन्ही मे नवरस कामदेवक चित्र रहैत रहैक। त कामसूत्र जे छैक ताहि सं वंचित कोनो कला शैली नहि छैक। आओर जखन मिथिला चित्र के बाजारीकरण भेलैक त एकरा बाजार मे अनलथिन के?... गंगा देवी, सीता देवी, जगदम्बा देवी। ओ सब वृद्ध स्त्री, विधवा स्त्री चाहे ताहि एज मे जे श्रीरामक भजन बेसी आओर दोसर चीज के चर्च-बर्च बेसी नहि कए सकैत छलथिन।

कश्यप जी कें नाम सं विवाद कें वितंडावाद ठाढ़ कएल गेल से उचित नहि। जाहि मिथिला चित्रकला कें ओ आजीविका आओर उपयोगितावाद सं जोड़बाक प्रयास केलैथ ओकरा नजरंदाज नहि कएल जा सकैछ। हिनक कृतित्व मे प्रतीक आर बिम्ब के माध्यमे निर्भीकता आर आत्मविश्वास सं चित्रण साहस के बात छैक। कश्यप जी कें लेखन वा चित्रकारी पर प्रश्न उठाओल जाइत अछि, मुदा ओ समाजक सच छैक। आर सत्य केर प्रकटीकरण केनाइ कोनो कलाकारक अधिकार छैक। ताहि विषय पर वाद विवाद भए सकैछ, मुदा एहि मे केवल अश्लीलता देखनाइ कोनो कलाकार के संग अन्याय छैक। ताहि कश्यप जी कें काम कें अश्लीलताक संज्ञा दए खारिज नहि कएल जा सकैछ। यदि इएह बात छैक त कालिदास केर कालजयी रचना कुमार संभव आओर काशीनाथ सिंह कें "काशी का अस्सी" के खारिज कएल जा सकैछ की?

कश्यप जी जाहि पृष्ठभूमि सं छथि, ताहि मे ई बड़ साहसक बात छै। जाहि अभावक जिनगी (फीस जमा नहि करबाक कारणे स्कूल सं निकालि देल गेला) सं गुजरलाक बादो निजी स्वार्थ कें छोड़ि क समाज कें जे देलखिन ओ स्वयं मे एकटा उपन्यास छथि। हुनक मोन मे ई एकदम

स्पष्ट रहनि जे नारी उत्थानक आ ओकरा स्वावलंबी बनेबाक काज करब। ओ गाम गाम घूमि मिथिला पेंटिंग के केंद्र स्थापित कए महिला सब कें जोड़ि हुनका सब के स्वावलंबी बनौलनि। पेंटिंग कें महज सजावटी वस्तु केर सोच सं बाहर निकालि क ओकरा उपयोगिताक सामग्री के रूप मे मान्यता दियाब केर प्रयोग हिनके देन छनि आर ई प्रयोग मिथिला केर बहुत परिवार कें संबल बनल। एहि सच के क्यो नकारि नहि सकैछ। बाद मे ओ आत्मकथा लिखला बासमती जाहि कें अध्ययन केला पर लोकक भृकुटी तनि सकैछ मुदा एतेक बेबाकी आर ईमानदारी सं अपन सच लिखनाई बड़ हिम्मत के बात छैक।

लोकतांत्रिक समाज मे आलोचना केर अधिकार त सबकें छैक, मुदा आलोचना आओर आरोप मे फर्क होइत छैक। एतबा धरि नहि, कश्यप जी जाहि पहचान आओर सम्मान कें हकदार छलाह, ओ हुनका नहि भेटलनि। मुदा मोनक कोनो कोण मे टीस रहबे करैत छैक। सौराठ मे पहिल मिथिला लोक कला विश्वविद्यालयक स्थापना कएल गेलैक। विश्वविद्यालय त बनि गेल, मुदा सबसं पैघ संकट रहै जे एकर पाठ्यक्रम की होयत आओर के बनेता? त कश्यप जी कें योग्यता आओर अनुभव के देखैत ई काज हिनके सुपुर्द कएल गेल। एकर अलावा गरीब बच्चा या भिखमंगनी सबहक बच्चा के पढ़ेनाई हिनक लक्ष्य रहनि। ताहि मे सेहो विरोधक सामना करऽ पड़लनि। कुल मिलाकऽ कहल जा सकैछ जे महिला, दलित, पिछड़ल आर वंचित कें उत्थानक लेल सदिखन अथक प्रयास करैत दुनिया सं विदा भए गेलाह।

***(आ शशिबाला)*- सम्पादक द्वारा जोड़ल गेल। ऐ आलेखमे जतऽ जतऽ कश्यप जीक नाम अछि ओतऽ *आ शशिबाला सेहो पढ़ल जाय, कारण कश्यप जीक जिबैत कोनो चित्र एहेन नै अछि जे मात्र कश्यप जी आ शशिबाला संयुक्त रूपे नै बनेलनि।-सम्पादक**

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.९.रवीन्द्र कुमार दास- परिवारक सहयोग सबसऽ जरूरी



रवीन्द्र कुमार दास

परिवारक सहयोग सबसऽ जरूरी

कहबी छैक “जे हर सफल पुरुष के पाछू कोनो नै कोनो स्त्री के हाथ छैक“ एहि कथन स हम सहमत छी मुदा स्थिति एकर विपरीत सेहो देखबा मे आबि रहल अछि। संजू के कहानी हमरा जीवन मे हमर बियाहक लेल चर्चा सों शुरू होइत अछि। हमर बाबूजी कमरोली गामक एकटा कथा फ़ाइनल केलनि तेकर मूल आधार छल कन्या चित्र लिखैत छलखिन। हमरो सेहन्ता छल जे लड़की चित्र बनबैत होइथ नहि त कम स कम चित्रकार स घृणा नहि करैत होइथ कियैक त एखनहु अपन समाज मे चित्रकार के लोक पागल बुझैत छथिन। द्विरागमन के बाद हमर मौसी संजू दिस ताकि क हमरा कहलीह जे अपने जकाँ पागल नै बना दिहेन। जहांतक पागलपन आ जूनून के गप्प छै

त आई हुनका मे अपन कलाक लेल जूनून देखिक मोन हर्षित होइत अछि। आई हमरा ख़ुशी होइत अछि जखैन क्यो कला लेखक वा चित्रकार हिनका स भेंट घाँट करबा लेल अबैत छथिन आ पुछैत छथिन चित्रकार संजू दास एतय रहैत छथिन हुनका स भेंट करबाक अछि। हमरा जनितबे मात्र पढ़ाइये मे नहि बल्कि चित्र ,अभिनय ,संगीत ,नृत्य वा साहित्य कोनो विधा मे सफलताक लेल जूनून भेनाइ जरूरी छै। हमरा मोन अछि जे प्रथम मिलन मे हम हिनका स्केचबुक पेन्सिल आ कलर बॉक्स भेंट केने रही कोनो गहना जेवर नहि।

विवाह के किछ दिन बाद संजू हमरा कहलैन हमरो मोन होइत अछि जे हमहू आर्ट कालेज मे पढि क कला के विधिवत शिक्षा ली। हम कहलियैन तैयारी करू ,टेस्ट दियौ एड्मिसन भय जाइत अछि त पटने मे रहू ,डेरा डांटा त अछिये। टेस्ट देलनि मुदा एड्मिसन जोकर तैयारी नहि छलैन एड्मिसन नहि भेलैन । हम कहलियैन जे अहाँ दुखी नहि होऊ कलाकार बनबा लेल मात्र जूनून आ लगातार प्रैक्टिस चाही। दुनिया भरि मे आ एहि देश मे कतेको कलाकार आर्ट कालेज स नहि छथि। एतेक पद्मश्री सम्मान स सम्मानित मिथिला पेंटिंग के कलाकार सब कोनो आर्ट कालेज मे थोड़े ने पढ़ने छथिन।

संजू दिल्ली एलीह तेकर बाद स्थिति बदलल। हम पटना आर्ट कालेज स फ़ाईन आर्ट के कोर्स केलहुँ आ एकटा अखबारक कला विभाग मे नौकरी जॉइन केलहुँ। तखन हम नोयडा मे रहैत रही। हमर जतेक मित्रगण छथि ताहि बेसी आधुनिक कलाकार छथि। घर मे बैसल छोट छोट पेंटिंग बनबैथ आ मित्रगण के देखबैथ। हमरा घर मे बेसी आधुनिक कला पर चर्चा होइत छल। नहु नहु हिनको आधुनिक कला मे रूचि लैत देखलहुँ। मॉडर्न आर्ट गैलरी मे एकटा भारतीय समकालीन महिला कलाकारक प्रदर्शनी देखलाक बाद ई निर्णय केलनि जे आब हम आधुनिक कला शैली सीखब आ ओहि शैली मे काज करब। धीरे धीरे करय लगलीह आ प्रदर्शनी सब मे पठबय लगलीह। मित्र लोकनि कहलैन जे नीक काज करैत छथिन अहाँ हिनकर एकल प्रदर्शनी आयोजित करू। दुनू गोटे विचार केलहुँ आ हिनक पहिल प्रदर्शनी निशुल्क भेटलाक

कारण ग्रीनलेज बैंक के चाणक्यपुरी शाखा मे लगाओल गेल I ओतय प्रसंशा त खूब भेलनि मुदा एकहु त पेंटिंग बिकल नहि मुदा हम दुनू गोटे निराश नहि भेलहुँ I एक साल तक किछु आर पेंटिंग केलीह जाहि मे एकटा बड़का कैनवास सेहो छलैन I सबटा पेंटिंग के दोसर प्रदर्शनी मंडी हॉउस स्थित रवींद्र भवन ललित कला अकादमिक गैलरी मे आयोजित भेल I एहि प्रदर्शनी मे पहिल दिन हिंदुस्तान टाइम्स के रंगीन पेज मे हिनकर पेंटिंग छपल आ साँझ तक मे बड़का कैनवास बला पेंटिंग बिका गेल I कोनो कलाकारक लेल ओकर पेंटिंग बिका जाए एहि स बड़का ख़ुशी आर की हेतैक I तेकर बाद हिनका मे हम अद्भुद उत्साह देखलहुँ I आई धरि कतेको पुरस्कार भेटलैंन ,कतेको प्रदर्शनी आ कला शिविर मे भाग लेने हेतीह मुदा पहिल पेंटिंग के बिकनाई जीवन मे बहुत महत्पूर्ण होइत छैक I आई अपन सर -कुटुंब नैहर आ सासुरक लोक गर्व स हिनका स भेंट करैत छथिन फोटो खिंचबैत छथिन I हमरा यद् अछि जहिया पहिल बेर ई टेलीविजन के समाचार मे आयल रहैथ जेकरा देखिक हिनक मां खुश भय गेल रहथिन I हम दुनू गोटे सेहो क्षण नहि बिसरि सकैत छी जहिया हिनका बिहार सरकारक वरिष्ठ महिला कलाकार सम्मान भेटलैन हमर बाबूजी आ मां दुनू गोटे ओहि कार्यक्रम मे जेबाक लेल उत्साहित रहैथ IXZ

* एक त अपन समाज मे कला ,रंगमंच ,साहित्य ,संगीत आ नृत्य के सबस अधलाह काज बुझल जाइत छैक एहि विषय पर चर्चो केनाइ सेहो अधलाह बात अछि I हमर विचार स हर स्त्री मे कोनो ने कोनो प्रतिभा अवश्य होइत छैक आ हुनको मे लालसा होइत छनि जे हमरा मौका भेटैत त हमहू किछु करितहुँ मुदा अपन समाज मे आइयो धरि हुनकर परिवार आ पतिदेब स सहयोग नै भेटैत छनि I हाल मे हिंदी आउटलुक पत्रिका के पूरा अंक स्त्री देह विशेषांक छपल छल ताहि मे सँजुके कतेको रेखांकन छपलइन I पूरा अंक फेसबुक पर शेयर केलनि त किछु लोक लिखलाह जे जानि बुझिक संजू चर्चा मे एबाक लेल अश्लील चित्र बनबैत छथि I एम्हर किछु दिन पहिने 2008 के मैथिली पत्रिका अंतिका मे छपल एकटा रेखांकन पर खूब चर्चा भेल I किछु गोटे लिखलाह जे संजू दास आ कृष्ण कुमार कश्यप दुनू मिथिला कला मे अश्लीलता पसाइर रहल छथि I किछु गोटे लिखलइन जे मात्र चर्चा मे एबाक लेल एहि

तरहक चित्र बनबैत छथि l हम संजू के एक्के त गप्प कहैत छियैन जे लोक पिकासो आ फ्रांसिस न्यूटन सूजा के कलाकृति देखते त पता नै की कहते l भारत के सबस प्रतिष्ठिक महिला कलाकार अमृता शेरगिल अपन सेल्फ न्यूड बनौने छथि मैथिल समाज के सेहो देखबाक चाही जे दिल्ली मे राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा मे संग्रहित अछि l

-रवीन्द्र कुमार दास, मो. 9811712398

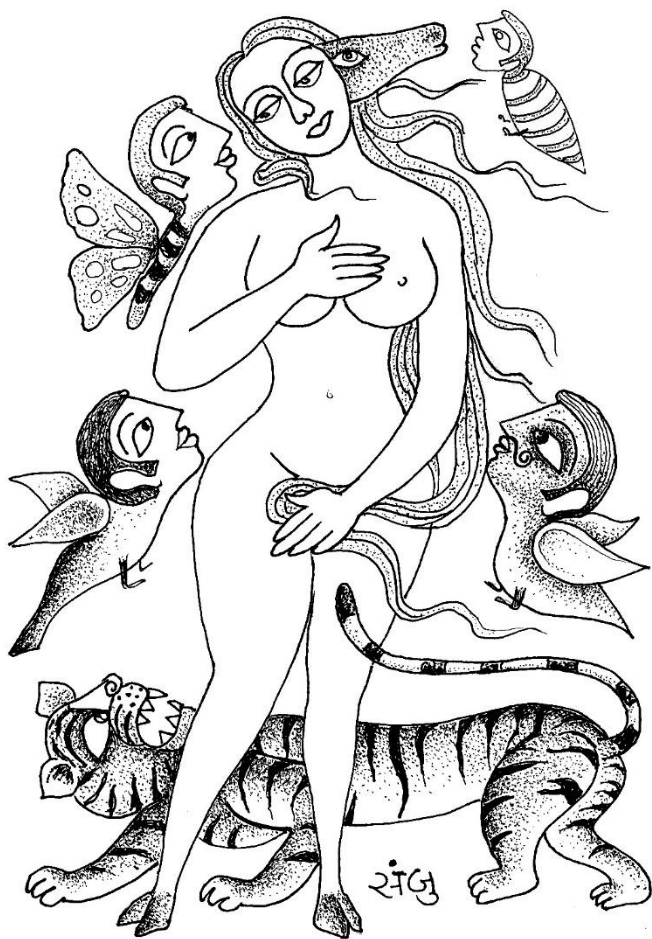
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१०.संजू दासक किछु बीछल कलाकृति

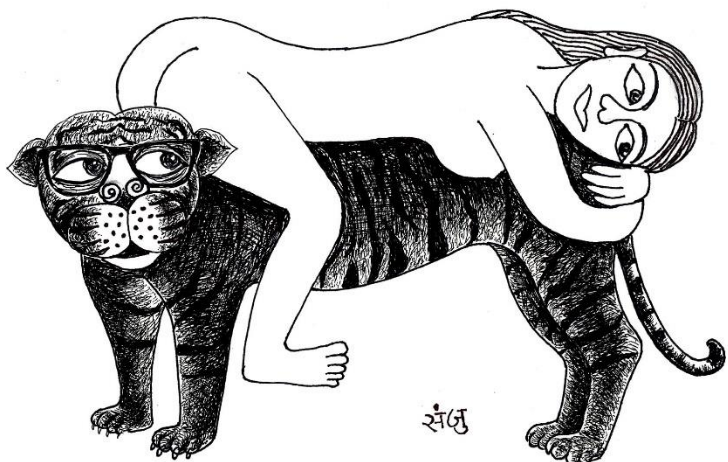







संजु


संजु


संजु





अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.११.गजेन्द्र ठाकुर- कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला- एकटा परिचय



गजेन्द्र ठाकुर

कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला- एकटा परिचय



कृष्ण कुमार कश्यप- जन्म १५ सितम्बर १९४९ ई.। मृत्यु- १२ अगस्त २०२० ई.। पिता- कवि-उपन्यासकार स्व. इन्द्रनारायण लाल "सँवलिया"। जनबरी १९६५ ई. मे नेना सभ लेल "नाइट स्कूल", १९८१ ई. मे "कला आधारित जीवन आ शिक्षण पद्धति"क प्रवर्तन आ तकर कार्यान्वयन लेल शिवा कश्यप आ शशिबालाक सहयोगसँ "भारती विकास संस्था"क स्थापना। रचना: शशिबालाक संग "मेघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद; माछ-भात; मिथिला चित्र प्रवेशिका भाग-१-२; मिथिला चित्र-कोर, भाग-३; मिथिला अरिपन भाग-४; गोदना

चित्र-शैली- भाग-५; मिथिला लोकचित्र।



शशिबाला- पिता श्री उग्र नारायण लाल, पति श्री उमेश कुमार कण्ठ (बिसहथ)। रचना: कृष्ण कुमार कश्यपक संग "मेघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद; माछ-भात; मिथिला चित्र प्रवेशिका भाग-१-२; मिथिला चित्र-कोर, भाग-३; मिथिला अरिपन भाग-४; गोदना चित्र-शैली- भाग-५; मिथिला लोकचित्र।

कृष्ण कुमार कश्यप जी सँ लेल हमर साक्षात्कार साक्षात्कार-२ मे कृष्ण कुमार कश्यप जी कलाक विभिन्न पक्षपर अपन विचार रखने छला। मिथिला चित्रकलाक नाम मधुबनी चित्रकला करबापर ओ चिन्तित छला। जितवारपुर स्कूल आ आन ठामक मिथिला चित्रकलाकारक बीचक फाँटि सेहो उजागर भेल।

"जखन लोक बाहरसँ अबैए तँ पूछैए जे अहाँक गाम कोन जिलामे अछि, आ से बुझने जे हम सभ मधुबनी नै दरभंगा जिलाक छी ओ बजैए 'यू आर नॉट फ्रॉम द ओरिजिनल प्लेस'- माने ओकरा होइ छै जे हमर चित्रकला असली मधुबनी चित्रकला नै छी आ से जितवारपुर स्कूलकेँ सूट करै छै।"

नरेन करुणाकरण अपन आलेख "मिथिलाज वूमन पेण्ट देयर वे आउट ऑफ पोवर्टी" मे लिखै छथि- "बिहारक बरहेता गाममे भारती विकास मंच गरीब महिलाकेँ चित्रकलाक मिथिला पद्धति सिखा रहल अछि,

जइसँ बहुत रास महिला गरीबी भगेबामे अपनाकेँ समर्थ कऽ सकल छथि।"

नरेन करुणाकरण लिखै छथि जे कृष्ण कुमार कश्यपक पहिल शिष्या शशिबाला, जे आब ओत्तै शिक्षिका छथि, हुनका कहलखिन जे "एकटा गरीब मुशहर समुदायक हाथीक थीम आधारित चित्र अति सुन्दर होइत अछि।" शशिबाला हुनका ईहो कहलखिन्ह जे जोन बोनिहार महिलाक हाथ कने करगर होइ छै आ जखन ओइमे सँ किछु गोटे कोमलतासँ कुच्ची नै प्रयुक्त कऽ सकली तँ हुनका चित्रसँ अलग दोसर कला जेना टोकड़ी, टेबुलक्लॉथ आदि बनेनाइ मे लगाओल गेल। मुदा बहुत गोटे आस्तेसँ कुच्चीक प्रयोग केनाइ सीखि गेली।

क्षिति जल पावक गगन समीरा आधारित पाँच टा रंगक अतिरिक्त दलित-आदिवासीक कलाक रेखा आ काट संग ओकर थीमक प्रवेश मिथिला चित्रकलामे गोधना शैलीकेँ प्रवेश दियेने अछि।

कृष्ण कुमार कश्यप अपन स्कूलमे एकटा डोम छात्राक प्रवेश देने छलखिन्ह, दोसर छात्रा सभ हुनकर सहयोग केने छलखिन्ह मुदा गौँआ सभ हुनकर विरोध केने छलन्हि। हुनकर स्कूलमे किछु मुस्लिम छात्रा सेहो रहथि आ ओ लोकनि हिन्दू थीमक चित्रांकन करबामे कहियो संकोच नै केलन्हि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१२.जितेन्द्र झा, जनकपुर- मिथिला चित्रकला- नेपाल प्रसंग



जितेन्द्र झा, जनकपुर

मिथिला चित्रकला- नेपाल प्रसंग

१

अपने घरमे उपेक्षित मिथिला चित्रकला

मिथिलाञ्चलक घरक भितमे बनाओल जाएबला मिथिला लोकचित्रकला विश्वभरि ख्याति कमओने अछि । मुदा एखत अपने भूमिमे एकरा पहिचान खोजबाक स्थिति छैक । मिथिला चित्रकलाके सरकार बेवास्ता कएने अछि, तें ई व्यवसायिक रुप नहि लऽ सकल अछि । एकर व्यावसायिक प्रबद्र्धन नहि भऽ सकल अछि । ग्रामीण क्षेत्रक महिलाके जीवनस्तर सुधार करबाक लेल बडका साधन भऽ सकैत अछि ई चित्रकला । कियाक त खासकऽ मैथिल ललनेक हाथमे नुकाएल रहैत अछि ई चित्रकलाक जादुगरी । आर्थिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक समृद्धिक अथाह सम्भावना अछि मिथिला चित्रकलामे । लोकचित्रकलाके व्यवसायिक स्वरुप देलासं आर्थिक आ सांस्कृतिक दुनू लाभ उठाओल जा सकैत अछि । परम्परागत मिथिला चित्रकला जीवनक अंग अछि मिथिलामे । लोकचित्रकला संस्कारक द्योतक सेहो अछि । मुदा बढैत आधुनिकताक कारणे विस्तार प्रभावित भेल छैक । राज्य मिथिला चित्रकलाके एखनधरि चिन्ह नई सकल आरोप

चित्रकारसभक छन्हि । नेपाल सरकार कलाके बढावा देबालेल ललितकला प्रज्ञा प्रतिष्ठान खोलने अछि । जत्तऽके प्राज्ञ परिषद्मे मिथिला चित्रकलास सम्बद्ध एक्कहु गोटे नहि अछि । ई एकटा प्रमाण मात्र अछि, आन बहुतो ठाम मिथिला चित्रकलासंग सौतिनिञा व्यवहार होइत आएल छैक । एना ललितकला प्रज्ञा प्रतिष्ठानक कुलपति किरण मानन्धर कहैत छथि जे मिथिला चित्रकलाके विशेष स्थान देने छी । मिथिला चित्रकलामे विशेष दखल भेनिहारि महिलाके स्थान देल जाएत से कुलपतिक कहब छन्हि । हिनक कथनी आ करनीमे कतेक समानता अछि, आबऽ बला दिने बताओत । जत्तऽ समग्र कलाक उन्नतिक बात होइक ओत्तऽ मिथिला पेन्टिङक चित्रकार नईं अछि, एकरा विडम्बने कहबाक चाही । मिथिला चित्रकलासं सम्बद्ध चित्रकारके उचित अवसर भेटबाक चाही । नेपाल पर्यटन वर्ष २०११ मना रहल अछि, एहनमे मिथिला चित्रकलाक मादे सेहो पर्यटकके आकर्षक कएल जा सकैत अछि । एहिबीच काठमाण्डूक बबरमहलस्थित सिद्धार्थ आर्ट ग्यालरीमे एस. सी. सुमनक मिथिला चित्रकला प्रदर्शनी मिथिला कसमस हालहि सम्पन्न भेल अछि । एहि प्रदर्शनीमे कलाप्रेमी मिथिला चित्रकलाक आधुनिक आयामसभसं परिचित भेलथि । सिद्धार्थ आर्ट ग्यालरीमे हुनक ११ म् प्रदर्शनी छल ई । मिथिला क्षेत्रक जीवनशैलीक झल्काबऽ बला चित्रकलासभ देखलासं ग्यालरी मिथिलामय भऽ गेल छल । एस. सी. सुमन मिथिला चित्रकला क्षेत्रमे परिचित नाम छथि । हिनक चित्रकलासभ बेस प्रशंसा पओलक । मिथिला चित्रकला सम्बन्धमे अध्ययन अनुसन्धानक सेहो बहुत खगता छैक । मिथिला लोक चित्रकलाक कुनो खास नियम वा सिद्धान्त नहि होइत अछि । तें ई स्वच्छन्दताक पर्याय सेहो अछि । मिथिलाक समृद्ध संस्कृतिक परिचायक सेहो अछि ।

२



एस.सी सुमन, चित्रकार, मिथिला चित्रकला

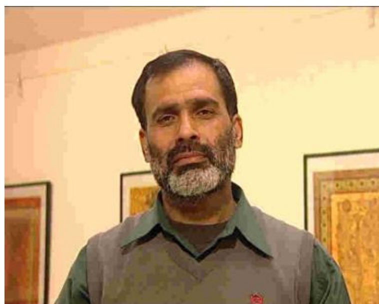
सरकार कएलक सौतिनिआ व्यवहार



मिथिला पेन्टिङ परम्परागत कला अछि, ई कला कोनो पाठशालामे नहि सिखाओल जाइत अछि । पीढीदर पीढी ई अपने आप सिखबाक काज होइत छैक । हमहु अपन दाइसऽ सिखलहु । कतउ सासुसऽ पुतोहु

सिखैत अछि त कखनो मायसऽ बेटी । ताहि परिवेशमे हमहुं अपन दाइसऽ मिथिला चित्रकला सिखलहु ।मिथिला पेन्टिङके अन्तर्राष्ट्रिय बजारमे बहुत माग अछि । ई त हट केक अछि । कलाकारके कलाकारितामे निर्भर करैत छैक ओकर मोल । जेना हमर पेन्टिङ १७ हजारसऽ लऽकऽ ८० हजारधरिक अछि । जे सहजे बिका जाइत अछि । मिथिला पेन्टिङ व्यावसायिक रुप लेबा दिस उन्मुख अछि । कमर्सियल मार्केटमे देखी त सेरामिकमे, ब्यागमे कपडा आदिमे एकर प्रयोग भऽ रहल अछि । तें नीक बजार छैक एकर । जऽ अपन बात करी त जहन हम बजारमे अबैत छी त प्रदर्शनी लऽ कऽ हमरा कोनो दिक्कति नई होइत अछि । मिथिला चित्रकलाक विकासके जे आधारसभ अछि से किछु कमजोर भऽ रहल अछि जेना पहिने माटिक घर होइत छलै । भितके घरमे मिथिला चित्रकलाके नीक अभ्यास होइत छलै । माटिक घरक ठाममे आब क्रंक्रिटके जंगल अछि भऽ गेल । सामाजिक संस्कार आदिमे सेहो भितमे लिखबाक चलन छलै । मुदा आब बच्चा जऽ पेन्सिलसऽ देबाल पर किछु लिखि दैत छैक त मायबाप डांटिदैत छैक । तें भितमे लिखबाक चलन प्रभावित भेल अछि । तैइयो तराईक मुसहर वस्ती, थारु आ झांगड जातिक वस्तीमे माटिक घरमे मिथिला चित्रकला देखल जा सकैत छैक । नेपाल सरकार एखनधरि किछु नई कऽ सकल अछि, मिथिला पेन्टिङके लेल । मिथिला पेन्टिङ जत्तऽ अछि अपने बुतापर, अपन स्थान अपने बनौने अछि । मिथिला चित्रकलामे लागल कलाकारसभ अपने मेहनतिसऽ आगु बढल अछि । ललितकला प्रज्ञा प्रतिष्ठानके गठन करैत काल प्राज्ञ परिषदमे मिथिला चित्रकलासऽ सम्बद्ध एक्कहु गोटेके नहि राखल गेल । नामके लेल सभामे मिथिला पेन्टिङसं जुडल एकगोटेके जगह देल गेलै, बादमे विवाद भेलै आ ओहो पद छोडि देलनि । व्यक्तिगत रुपमे हमरा पुछी त राज्य मिथिला चित्रकलाक लेल ने किछु कएने अछि आ ने किछु कऽ सकैया । *(सुमनकसंग जितेन्द्र झा द्वारा कएल गेल बातचीतपर आधारित)*

३



धीरेन्द्र प्रेमर्षि- साहित्यकार

प्रगतिक पथपर मिथिला चित्रकला

गुणँत्मक दृष्टिकोणसं सेहो मिथिला पेन्टिङमे बहुत काज भऽ रहल अछि । परम्परा आ आधुनिकता दुनूके जोडिकऽ एच.सी सुमन मिथिला पेन्टिङके आगू बढा रहल छथि । मदनकला देवी कर्ण, श्यामसुन्दर यादवसहितके व्यक्तिसभ परिमाणात्मक आ गुणात्मक दुनू तरहें मिथिला पेन्टिंगके आगू बढा रहल छथि । सुमनक पेन्टिङ आधुनिकताक आकाशमे सेहो भरपुर उडान भरने अछि मुदा धर्ती बिन छोडने, जे एकदम महत्वपूर्ण बात अछि । मिथिला पेन्टिंगके साधनाके रुपमे लऽ कऽ आगु बढनिहार सभ अपने आप आगु बढि रहल छथि ।राज्यके दिससऽ मिथिला पेन्टिङके लेल कोनो खास काज नहि भऽ सकल अछि । राष्ट्रिय स्तरमे चित्रकारसभके मूल्यांकन करैत काल मिथिला पेन्टिङसऽ जुडल व्यक्तित्वके जे स्थान आ सम्मान देल जएबाक चाही, से नहि भऽ सकल अछि । जनस्तर आ अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमे मिथिला पेन्टिङ नीक सम्मान पओने अछि । देशमे मिथिला पेन्टिङके स्थापित कएल जाए । खास कऽ महिला सभ एकरा जोगाकऽ रखने अछि । मैथिल महिलासभ किशोर अवस्थेसं अरिपन लिखब शुरु करैत अछि । तुसारी पावनि आदि सभ सेहो मिथिला पेन्टिङ सिखएबाक अवसर अछि । विविध पूजाक माध्यमे ओ सभ चित्रकलामे प्रवेश करैत छथि । राज्यके

दिससऽ मिथिला पेन्टिङके स्वीकार्यता बढाएब, व्यावसायीक सम्भावनाके खुला करब, एहिमे लगनिहारसभके सम्मानके वातावरण बनएबाक काज करबाक चाही । तहन ई राष्ट्रिय स्तरमे स्थापित भऽ सकत । एहिमे अन्तरनिहीत वैशिष्टय जे अछि ताहिसऽ ई अपने अन्तर्राष्ट्रिय रुपमे स्थापित भ जाएत, व्यापक भऽ जाएत । *(जितेन्द्र झा द्वारा कएल गेल बातचीतपर आधारित)*

(विदेह सदेह ३६)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१३.गजेन्द्र ठाकुर- श्वेता झा चौधरी- एकटा परिचय



गजेन्द्र ठाकुर

श्वेता झा चौधरी- एकटा परिचय



श्वेता झा चौधरी, *गाम सरिसव-पाही, ललित कला आ गृहविज्ञानमे स्नातक। मिथिला चित्रकलामे सर्टिफिकेट कोर्स। कला प्रदर्शिनी: एक्स.एल.आर.आइ., जमशेदपुरक सांस्कृतिक कार्यक्रम, ग्राम-श्री मेला जमशेदपुर, कला मन्दिर जमशेदपुर (एक्जीवीशन आ वर्कशॉप)।*

कला सम्बन्धी कार्य: एन.आइ.टी. जमशेदपुरमे कला प्रतियोगितामे निर्णायकक रूपमे सहभागिता, २००२-०७ धरि बसेरा, जमशेदपुरमे कला-शिक्षक (मिथिला चित्रकला), वूमेन कॉलेज पुस्तकालय आ हॉटेल बूलेवार्ड लेल वाल-पेंटिंग। प्रतिष्ठित स्पॉन्सर: कॉरपोरेट कम्युनिकेशन्स, टिस्को; टी.एस.आर.डी.एस, टिस्को; ए.आइ.ए.डी.ए., स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, जमशेदपुर; विभिन्न व्यक्ति, हॉटेल, संगठन आ व्यक्तिगत कला संग्राहक। हॉबी: मिथिला चित्रकला, ललित कला, संगीत आ भानस-भात।

१

ई चित्र धानक कटनी कालक मिथिलाक गामक चित्रण करैत अछि। पुरुख-पात खेतसँ फसिल घर अनैत छथि तँ महिला ओहि फसिलकेँ तैयार कऽ चाउर बनबैत छथि। अपन दैनिक जीवनसँ हटि कऽ एहि अवधिमे महिला एकट्ठा होइ छथि आ गप-सरक्का करै छथि।



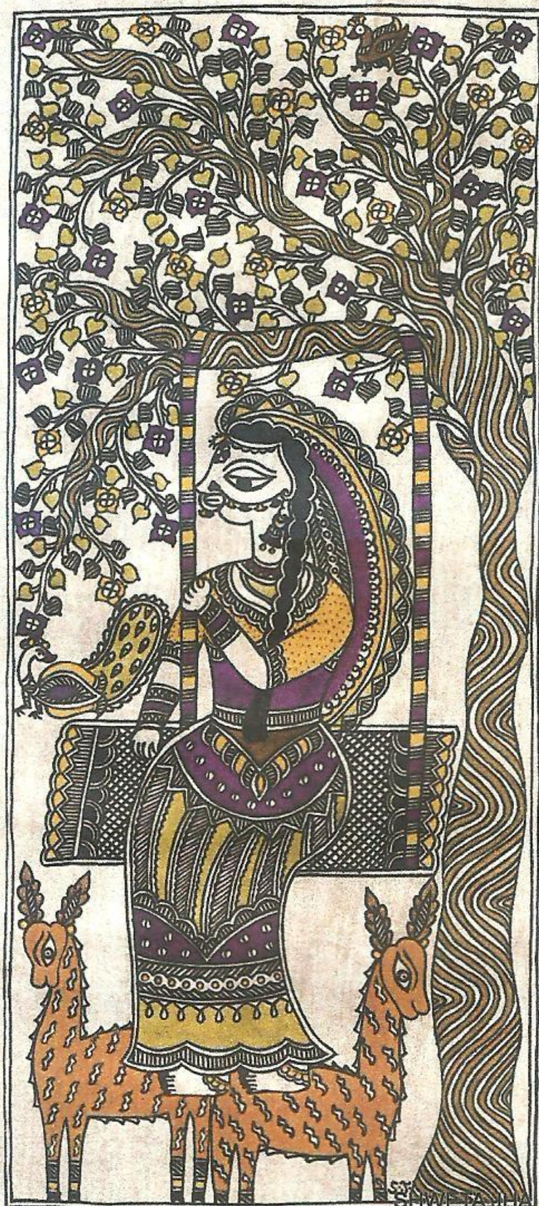
२

जखन कखनो प्रेमक गप अबैत अछि तखन सभसँ पहिने मोनमे राधाकृष्णक ध्यान आबि जाइत अछि। ई चित्र ओहि प्रेमकेँ देखेबाक एकटा प्रयास..।


SHWETA JHA.
'06

३

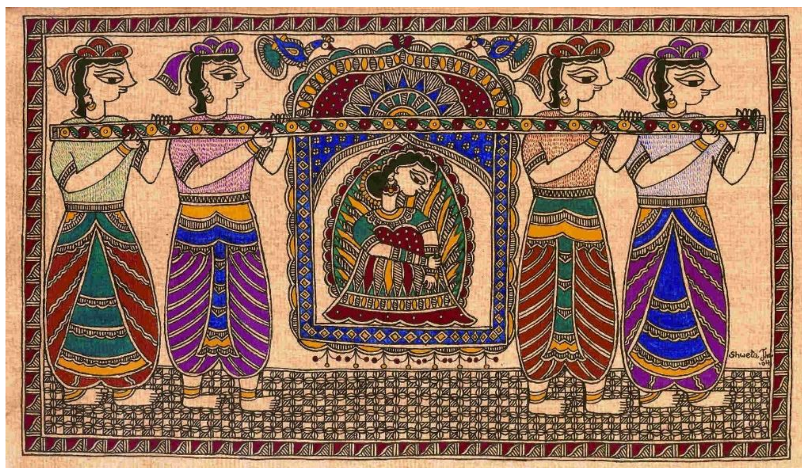
सावन मासमे बरखाक फूहीसँ भीजल माटिक सुगन्ध लैत झूला झुलैक आनन्दक कोनो सीमा नहि ..।


SHWETA JHA

४

डोली कहार

सासुर जाइत काल नव कनियाँक मोनक दुविधा- नैहरक छुटैक दुख आ नव जीवनक उत्साह। ई सभसँ अनजान कहार सभ उमंगपूर्वक कनियाँकेँ सासुर पहुँचाबैत...



५

करिया झुम्मरि

मिथिलाक लड़की सभमे करिया-झुम्मरि खेलक खूब चलनि अछि। छोट आ पैघ सभ एहि खेलक आनन्द लैत छथि...



६

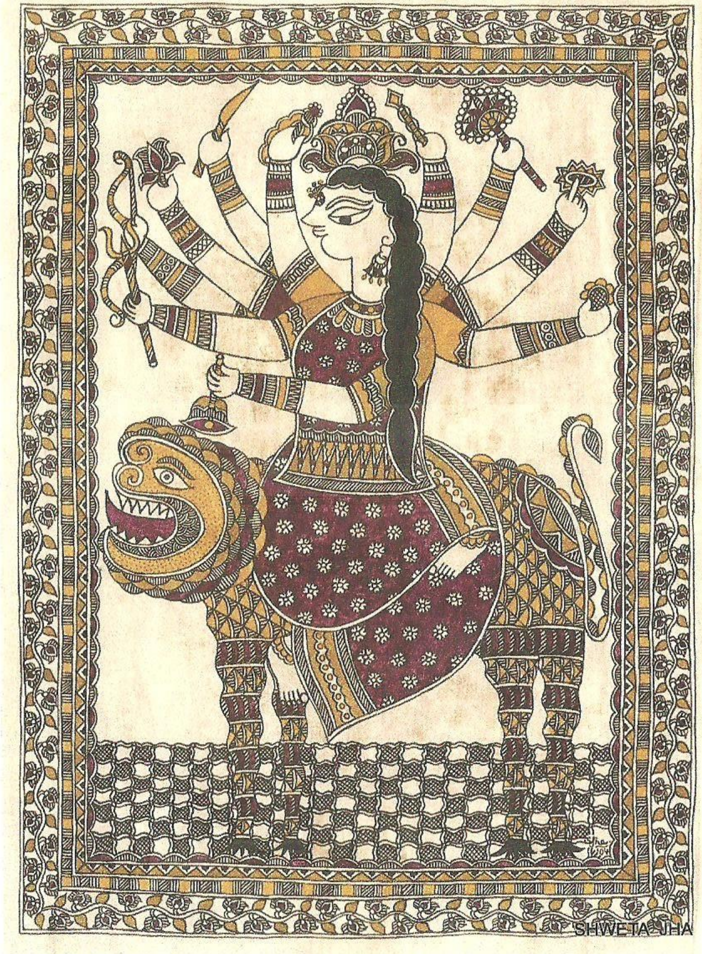
साधुबाबा

साधुबाबाक चित्रण मिथिला चित्रकलामे आधुनिक रूपेँ करबाक प्रयास...



७

दुर्गापूजा



८

काली माँ



९

पनिभरनी



१०



११



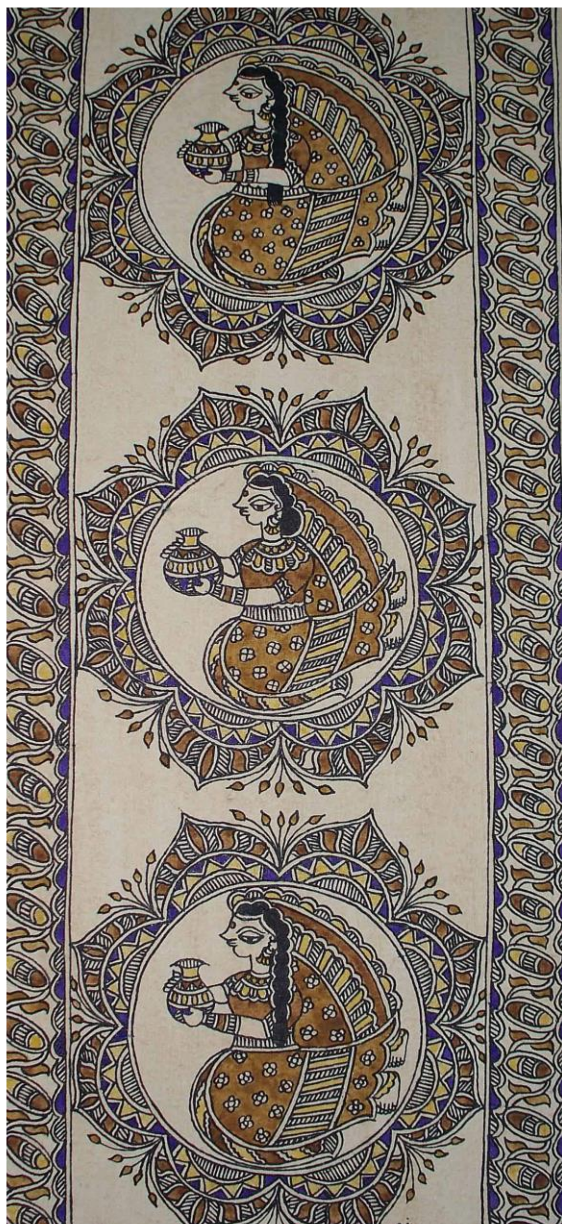
१२

चित्रक विषयमे: सूर्य आशाक आ संकल्पसिद्धिक प्रतीक अछि, अन्हारक बादक प्रकाशक प्रतीक अछि। ई पृथ्वीक जीवनक जड़ि अछि, दैवत्वक आशीर्वादक प्रतीक अछि। तेँ विश्वक सभ संस्कृतिमे ई पूजित अछि, खास कऽ मैथिल संस्कृतिमे (छठि आ मकर संक्रान्ति)। ई चित्र ऐ सभकेँ चित्रित करबाक प्रयास अछि।

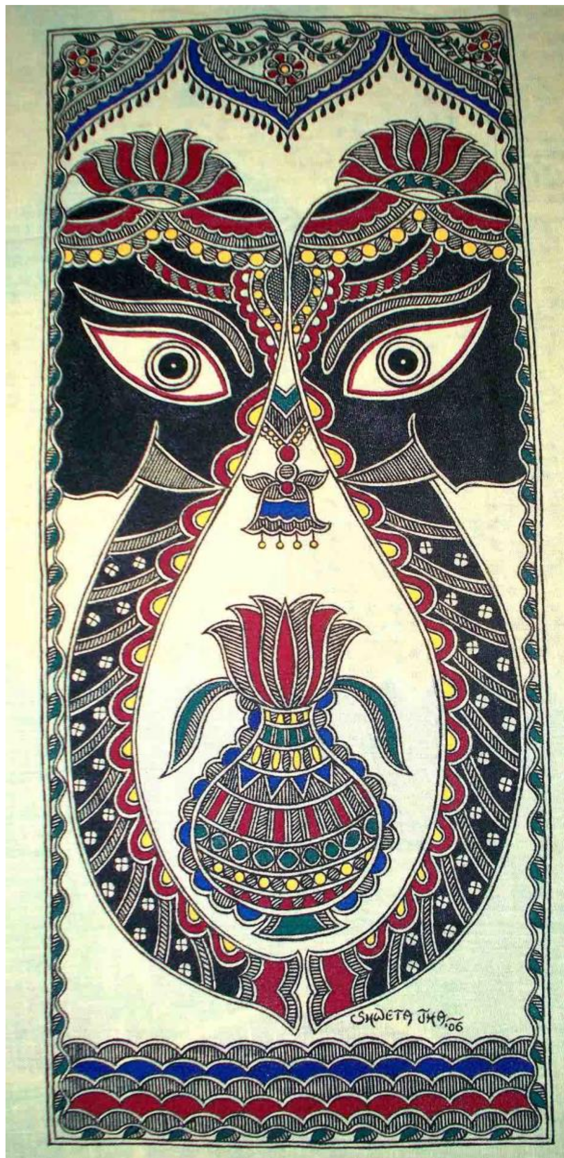


१३

चित्रक विषयमे: सूर्य आशाक आ संकल्पसिद्धिक प्रतीक अछि, अन्हारक बादक प्रकाशक प्रतीक अछि। ई पृथ्वीक जीवनक जड़ि अछि, दैवत्वक आशीर्वादक प्रतीक अछि। तेँ विश्वक सभ संस्कृतिमे ई पूजित अछि, खास कऽ मैथिल संस्कृतिमे (छठि आ मकर संक्रान्ति)। ई चित्र ऐ सभकेँ चित्रित करबाक प्रयास अछि।



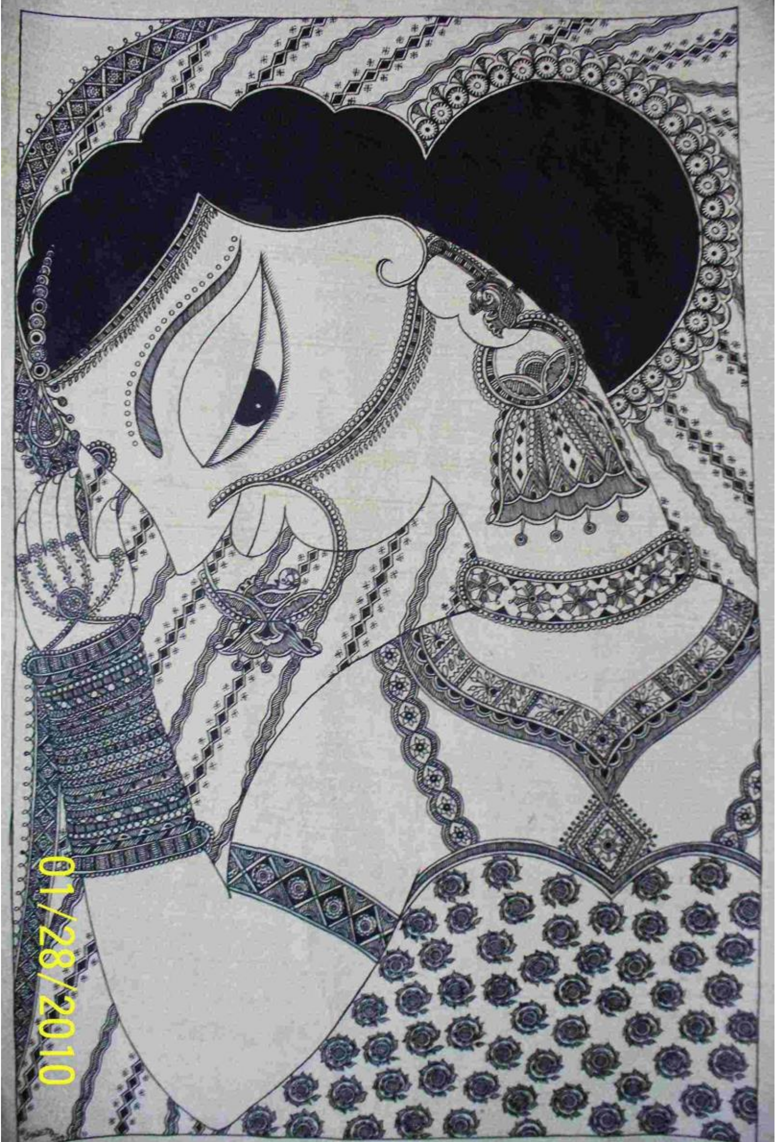
१४



१५



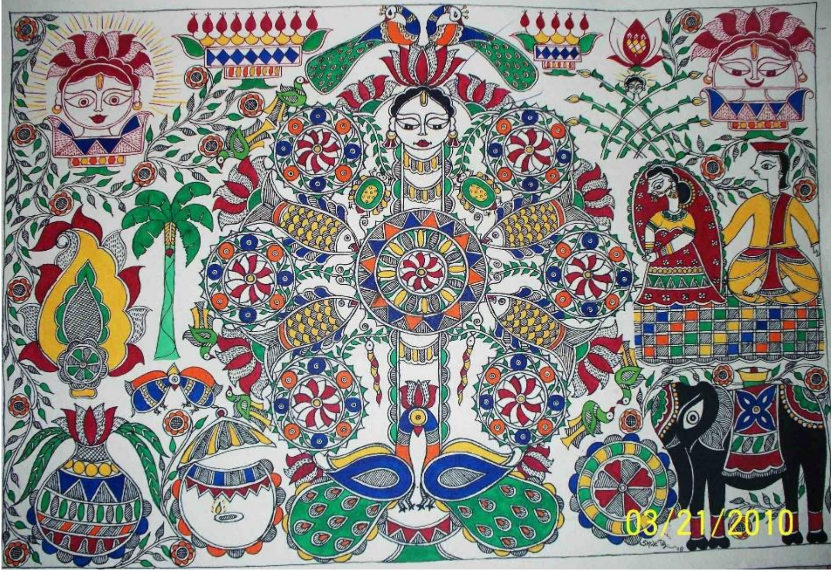
१६



१७



१८



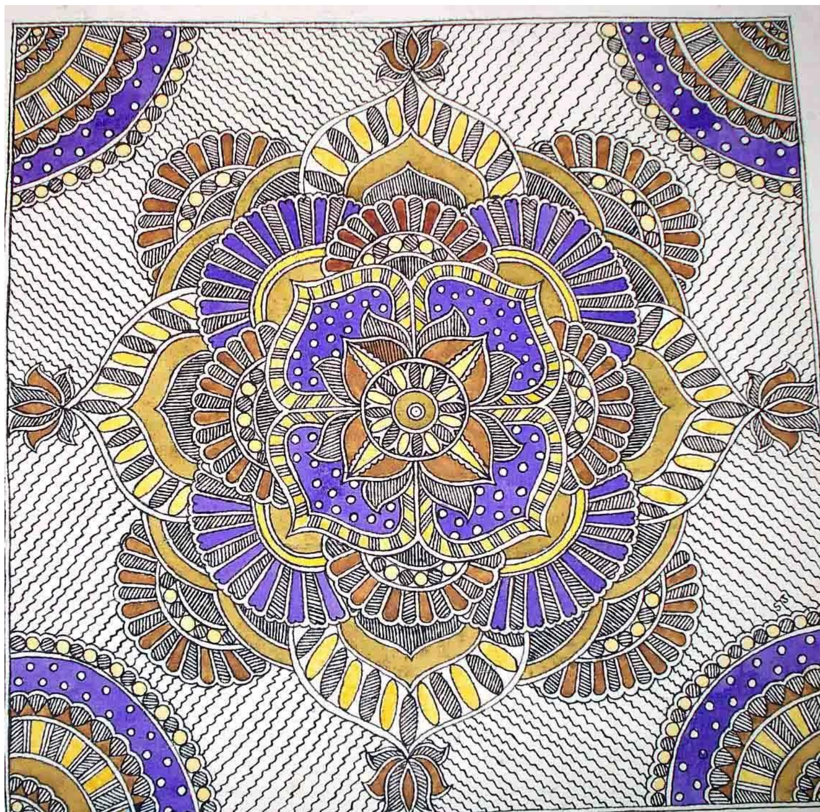
१९



२०



२१



(विदेह सदेह ३५)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

ऐ अंकक अन्यान्य रचना

३.गद्य खण्ड

३.१.डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक'-गामक नामकरण: एक परिशीलन

३.२.संतोष कुमार राय 'बटोही'-मंगरौना (एगारहम खेप)

३.३.संतोष कुमार राय 'बटोही'-समीक्षा- जिनगी भार बनि गेल

३.४.रबीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २५ म खेप

३.५.कुमार मनोज कश्यप-ओ दधीचि

३.६.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खेप-१७)

३.७.प्रणव झा- करमनेढ़

३.८.आचार्य रामानन्द मण्डल-मिथिला के लाल: उपन्यास सम्राट फणीश्वरनाथ रेणु आ पारो

३.९.डाॅ. किशन कारीगर-लोंगी डैंस(हास्य कटाक्ष)

३.१०.लाल देव कामत-मिथिलामे मांगैन खवाश छइ! (आगाँ)/ वर्णित रस/ चाह पोखता'क अर्थ जानि गेलहुँ (लघुकथा)/ लघुकथा- परचाक

निहितार्थ/ चलला मुरारी छकबय (लघु कथा)/ लघु कथा- हलहौर/ मैथिली बिहैन कथा- -सापरपिट्टा/ भाग जागल- विहैन कथा/ सुनैना बेटी - मैथिली सामाजिक उपन्यास/ लिख पटापैट मारय दयह (लघुकथा)/ लघुकथा- ई गुड़ खेनै कान छेदौने/ अम्बोहि पानि उठल-लघुकथा (मैथिली)/ रोज सेन्टेड लिची (लघुकथा)/ लघुकथा -रानी केँ नँय छै राजा

३.१.डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक'-गामक नामकरण: एक परिशीलन



डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक'

गामक नामकरण: एक परिशीलन

ईसे हमरा लोकनि जनिते की, आईने अनेकानेक ग्राम देखा हो, मुदा पहिने गामक संख्या एक हिरक जे-जे पाळू जाएब, गाम काख्या वृद्धि लगाम वा नगर गेल । मुदा गामक नामकरण कोना भेलैक, तकर कि विचार एए हम कर चाह ।

प्राचीनकालमे जहिया राजा-महाराज लोकनिक युग की महाभारत काल क परवर्ती कालभरि हरेक राज्यमे अपन-अपन सैन्य व्यवस्था लेक इतिहासाशी अछि जे प्रत्येक ५०० हाथी ५०० रथ, १५०० घोड़ा आ २५० पदाति (पैर चलता अवश्य छोट सामन्त होइत छलाह तनिक लग कि--किछु सेना अवश्य रहेत छलनि। महाभारत कमानीतं

पदाति सेनामे क्रमश: 'पति', 'गुल्म' आ 'गण' होइत छलैक। जत ५५ व्यक्ति 'पति' होत छल ओहि तीन पति मिलाकै एक 'गुल्म' बनेत छल तथा तीन गुल्म लए एक 'गण' होइत छल आन नियम एक्के रङ अलि, मुदा शुक्रनीति पति के लक्षण किन्तु भित्र भेटेछ । एकर अनुसार २५४०) पाँच-छ सैनिकक टुकड़ी 'पति' कहबैत अछि । आजुक भांति पहिनहुँ छावनी छलैक, किन्तु अलग-अलग, कहुँ पतितं कहुँ गुल्म आउ कतहुँ गण गण, जेना कहल अछि नव पतिक अर्थात् तीन गुल्मक होइत छल आ से गणक संख्या कम होइत रहैक । जाहि-जाहि स्थानमे पति वा गुल्म रहेत छल, तकरा बादमे ओही आधारपर नाम देल आइत छलैक। अर्थात् पतिक स्थानके पति वा पत्ती ओ गुल्मक स्थानकें गुल्म । पछाति इह पत्ती 'पट्टी मे परिवर्तित भए गेल अथवा एही शब्द व्यवहत होमय लागल । इएह सभ चिक आजुक शुगापट्टी, कलापट्टी, जयदेवपट्टी, लालापट्टी, किसनीपट्टी, अललपट्टी, बे नीपट्टी, लालमणिपट्टी, मनहरपट्टी, कामेपट्टी, सीतापट्टी आदि । पट्टीक संख्या बेशी रहने उदाहरणो बेशी भेटेछ । एहिना जतए-जताए 'गुल्म' छल, से आई गुल्मा, गुल्मरिया, गुलमन्ती, गुलमिया आदिक नामसँ जानल जाइत अछि ।

सुनल थिक जे एक गुल्मक प्रधान रहथि बल्लोझा किन्तु हुनक असावधानीवश अथवा आने कोनो कारण ओहि गुल्ममे चोरी भए गेल । संयोगसं चोर पकड़ायल आ ओकरा राजाक सम्मुख आनल गेल । राजा निर्णय देलनि जे' 'गुल्मा-चोर बल्लोझाक कपार' । अभिप्राय ई जे एकर निर्णय हम नहि बल्लोझा करताह । अस्तु ।

प्रत्येक राज्य ओ राजाक लेल सेनाक होएब नितान्त आवश्यक मानल गेल अछि, ई सभ जनिते छी, तें राजाकै 'चारचक्षुषाः' कहलो गेल अछि । 'चार' मात्र चाकरे नहि थिक, आजुक CID, CBI एवं सैन्यकेँ सेहो कहल जाइत छलैक, अस्तु । मुदा ई बड़ कम लोक जनैत होएताह जे पहिने सेना कतोक प्रकारक होइत छल । जेना आई सेनाक जल-थल नभ रूपमे पहिने तीन भेद देखल जाइत अछि तत: पर BSF, CISF. कमाण्डो आदि उपभेदें कतोक भेद देखबामे अबैछ । तहिना

प्राचीन कालमे सेनाकै केयो चारि से केयो छः भेदक स्वीकार करैत छथि। महाभारतक अनुसार (महाभारत, शान्तिपर्व-५९/४१/४१) एकर आठ अंग कहल गेल अछि हस्ती, अशी, रथी, पदाति, विष्टि, नाव, चर एवं देशिक। आने देशक भाँति मिथिलहुँक राजाकै एहि सभ प्रकारक सैन्य छलनि, जकर रहबाक स्थानके सैन्य-भेदहिक नामपर नामकरण कएल गेल छल। यथा
हथौड़ी, हतगढ़ा, असवैया, रथनाहा, रोधान, रथीटोल, रथवाड़ा
(रतवाड़ा), दाति
(दाती), बिष्टुपुर, बिष्टशैल, नवेल, नवस्थ, चरमा, चरमपट्टी
(घरमापट्टी), दिशौल, दशका आदि। ई सभ आधुनिक ग्राम ओही प्राचीन इतिवृत्तकें देखा रहल अछि। स्मरणीय थिक जे जेना पहिने सेनामे पथप्रदर्शककै 'देशिक' कहल जाइत छलैक, तहिना विशेष आयुध-सञ्चालन- दक्षव्यक्तिकें 'विष्टि' कहल जाइत छलैक से इतिहाससिद्ध प्रसिद्ध कथा थिक।

गामक नामकरण मात्र सैन्य छावनियैक नामपर नहि, अपितु आयुधहुँक नामपर अस्त्र-शस्त्रहुक नामपर राखल जाइत छल। नीतिप्रकाशिकामे बहुतो रास आयुधक वर्णन भेल अछि (अध्याय दूस पाँच धरि), जकरा चारि श्रेणी ओतए विभाजित कएल गेल छैक मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त आऽ मन्त्रमुक्त। एहि सभ आयुधक की परिचय वा लक्षण से फरिछाएब हमर प्रबन्धक उद्देश्य नहि थिक आड़ से जैं करय लागव तं प्रबन्ध विस्तारक भय, तें तकरा छाड़ि देल अछि। किन्तु ई कहब आवश्यक जे उपर्युक्त चारू कोटिक आयुध एक ठाम नहि रहैत छल। आयुधक सञ्चालको अपन अपन आयुध-क्षेत्रहिं रहैत छलाह। आवश्यकता पड़लापर ओ लोकनि अपन-अपन अस्त्र-शस्त्र

हाथ लएनिर्धारित स्थानपर जाइत छलाह जे हो, मुदा स्मर्तव्य धिक मे, जे आयुध जतए रहैत छल, तकरा अर्थात् ओहि स्थानके, ओहे आयुधक आधारपर नामकरण होइत रहेक। जेना कि 'मुक्तायुधपुर' एहिमे 'युध पद आई लुप्तभए आकार मुक्तपदक संग मोलि (सन्धि

संयोग) 'मुक्तापुर' भए गेल अछि हमरा जनैत 'मुक्ताम' (मोताम) वा "मुक्तामा" के सम्बन्ध सेहो रही मुक्तायुध रहल होएत ।

धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र ओ शिलालेख समे भाँति भौतिक 'कर' के उल्लेख भेटैत अछि। एहिने 'कर' लेनिहार, देनिहारक पृथक-पृथक स्थान छलैक। किछु गाम एहनो छल, जाहिपर राजाद्वारा विशेष कर लगाओल गेल रहैक । कि ग्राम करमुक्तो छ कोनो-ने-कोनो कारण ओहि गामक लोक राजा कर नहि लैत रहथि। एही प्रकारक गाममे अकरिया, अकौह, अकड़ी, अकरमपुर (मकरमपुर) आदि धिक। मुदा जाहि गामपर कर लागल जल अथवा जाहि गामक वासी कर दैत छलाह अथवा जाहि गाममे कर असूलनिहार राजाक प्रतिनिधि रहेत छलाह, ताहि गामक संख्या आपेक्षिक अधिक छ एहि कोटिक गाममे पुरानो गामसभ अबैत छल, जकर नामकरण 'कर'क आधारपर नहि भेल. रहेक। परन्तु नव नव गाम से बसल वा बसल छल, तकर नामकरण एही 'कर के आधारपर भेल। यथा- करडिया, करहरा, करिहर, करुभरि, करैया, केरमा आदि। राजाकै दातव्य 'कर मे एक प्रकारक कर छल 'बलि' । ऋग्वेदमे एही कारण साधारण व्यक्तिक लेल 'बलिहत' शब्दक प्रयोग भेल अछि./६/१०/१७३६) जकर अर्थ राजाक लेल बलि अननिहार। तैत्तिरीय ब्राह्मणहुँमे 'हरन्त्यस्मै विशो बलिम्' (-२/७/१८/३) र प्रयोग देखल जाइत अति । ऐतरेय ब्राह्मणक अनुसार (ऐ.बा.३/३) 'बलिकृत' वैश्यमात्रे होइत छलाह, जे बलि दैत छलाह । बलि, सामान्यतः व्यापार किंवा आयात-निर्यातहिपर लगैत छल । ब्राह्मण वा क्षत्रिय विशेष परिस्थितिकै छोड़ि कर मुक्त होइत रहत्थे । अतएव जाहि गामक वासी बलि दातव्य होइत छलनि, तकर नामकरण एही बलिक कारण भेल होएत। यथा बलिगाँव, बालो, बलाल, बलिया, बलियाही, बलिनगर, बल्लीपुर आदि किन्तु किछु एहनो लोक सभ रहथि जे राज- दरवारमे अथवा प्रतिनिधि लग जाए स्वयं बलि जमा नहि करैत रहथि । ई लोकनि 'हस्तबलि के माध्यमे अपन बलि (क) राजकोशमे जमा करैत छलाह। एहि हस्तबलिक नियुक्ति स्वयं राजा करैत छलाह । सम्भव धिक जे ई "हस्तबलि' जाहि

गाममे रहैत छलाह, तकरा हुनके नाम वा पदनामपर जानल जाय लागल। जेना आजुक 'हतबलिया ओ 'हेठीबाली' ओकरे आभास दिया रहल अछि।

नगर, पुर, पुरी, पत्तनक अर्थमे 'हट्ट' शब्दहुँक प्रयोग देखल जाइत अछि। राजनीतिप्रकाशमे देवीपुराणक वाक्य उधृत भेल अछि, जे एकर प्रमाण थिक। श्रीधरो अपन भागवत व्याख्यानमे कहैत छथि 'ग्रामा हट्टादिशून्याः, पुरो हट्टादिमत्यः, ता एव महत्य: पत्तनानि.... (भाग भाष्य-४ / १८/३१)। कदाचित् एही हट्टक कारणें मिथिलहुँमे ग्रामक नामकरण कएल गेल हो। यथा हटनी, हटरिया, हाटी, सिरपुर हाटी, बगड़हट्टी आदि।

ऋग्वेदमे 'ग्राम शब्दक प्रयोग बहुश: भेल अछि, यथा ग्रामजितो नरः' (ऋ. ५/५४/८), 'यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्' (क. १/१९४/१) आदि (ऋ. १०/६२/११. १०/१०९/५)। तैत्तिरीय संहितहुँमे "विद्वान् ब्राह्मणग्रामणी' (तै.सं.-२/५/४/४) आदि कहल गेल अछि। एतए स्मर्तव्य थिक जे 'ग्राम' शब्दक अर्थ गामे नहि छल, अपितु नगर सेहो होइत छल। ओना तँ नगर, पुर, पुरा, पत्तन, गाँव आदि शब्द कोनो गामक नाममे रहिते अछि, किन्तु एतए पर्यायवाची नहि बूझि नगरक अर्थ शहर वा छोट मोट शहर बुझबाक थिक ग्राम प्रमुखकै 'ग्रामणी' वा 'ग्रामिक' (७/११५-१६), ग्रामाधिपति (कौटिल्य ३/३०), ग्रामकूट (एपिण्डिका, जिल्द-७, ५.३९. १८३. १८८०. १९ पू.३०४. ३१०) आठ पट्टकिल (इमिड एण्टीक्वेरी, जिल्द-६, पृ. ५१, ५३: जिल्द - १८, पृ.३२२) कहल जाइत छलैक। इएह शब्द आई मुखिया आऽ मेयर दुहू कहबैछ। पट्टकिलक सन्तान जाहि-जाहि गाममे बसैत रहथि, ताहू गामक संग 'पट्टी' जुड़ैत छल। तें स्मरणीय चिक जे पट्टीयुक्त गामक नामकरण मात्र पत्ति, पत्तीक कारणहिं नहि, प्रत्युत पट्टकिलक हेतुजे सेहो भेल अछि।

शुक्रनीतिक अनुसार एक 'ग्राम' विस्तारमे एक कोशक होइत छल (शु.नी. - १ / १२३)। गामक आधा भाग 'पल्ली' कहबैत

छल, जकर उदाहरणमे 'सरिसब' गामक आर्द्धभाग 'पाही के लेल जा सकैछ, जे किछु गोटेक मतमे पल्लीक अपभ्रंशो थिक। परन्तु एक अन्य अवधारणा वा प्राकृत वैयाकरणक अनुसार गामक अर्द्धभाग 'पल्ली क उदाहरण जगदलपल्ली, मलकानपल्ली, रूपाली, पाली आदि तं भए सकैछ, परन्तु 'पाही' नहि।

हेमाद्रि अपन दानखण्डमे मार्कण्डेयपुराणके उधृत करैत पुर, खेट, खवंट एवं ग्रामक परिभाषा प्रस्तुत करने थि। जखनि कि हिनकहुँस पूर्व महर्षि याज्ञवल्क्यक अनुसार चारागाहक विस्तारकै ध्यानमे राखि ग्राम, खर्वट, नगर सभ एक्के अर्थ द्योतित करैत अछि, मात्र एकर क्षेत्रफल ओ नागरिकक स्तरमे भेद पाओल जाइत अछि। एहीसभक

कारणें प्रायः संस्कृतक अलङ्कारशास्त्री लोकनि 'पाम्य दोष देखओने होएताह हमरा जनैत एही सभमे कोनो 'खर्वट' पछाति 'खरंख' (खड़रख) भए गेल होएत। हमर एक मित्र एक समय कहने र जे पहिने एतय खड़क बोन छल अकरा काटि लोक बसल ते 'खरख' आठ कालान्तरमे 'खर' भए गेल जेना सर्वप सरिसबक कल्पना तहिना खदखदरक, जे हो हमरा एहिमे कि हास्य उपहास्यक पुट बुझना जाइल जे गाम वा भूमि खड़कें रखलक से भेल खरख आबादमे खहरख।

एहिना चोर-चपाटीर्स रक्षा करब, चोर-डाकू समा दिएव 'चौरोद्धरणिक' वा 'कोपाल (काल) कार्य होइत ११३५.१ ३.४) जखनि कि कौटिल्य मते कार्य 'धीररज्जुक' करैत छलाह (३)। अधिकारी बोरीक क्षतिपूर्तियो करबैत रहथि। सम्भव क्षेत्र विशेषक 'चौररज्जुक' तयरत लाह से कालान्तरमे रजीह, रज्जुका (रजुका), रजुआही, बोड़जबा आदि भए गेल हो।

किन्तु गाम जातिक नामपर सेहो बसल वा बसाओल गेल, जाहिमे बनियाम, सिंहवार, तेलियाना, तेलिया तेलगामा, भीर, नौआ-
वाखरि, कैथवार, कैचिनियाँ, एकम्मा, बरही, राजपाम, उगमारा, कर्णपु

र, सिसवारि आदिकें लेल जा सकैछ 'घर' जातिक क्षत्रियबहुल गाम 'भोर' छल, जे बादमे खण्डवला कुलक राजा लोकनिक गाम भेने 'राजपाम' सेहो कहओलक सिसवा क्षत्रिय, जकर शाखा सिसोदिया थिक, तकरा भगाए, जतय गाम वा वस्ती बसल, सैह भेल सिसवारि (सिसवा अरि) । एही तरहैं व्यक्तिक नामपर सेहो कतोक गामक नामकरण भेल अछि, जेना सीताजीक नामपर सीतामढ़ी, सीतापट्टी: गौरीक नामपर गौरिया: उमाक नामपर उमगाँव, मधुसिंहक नामपर मधुबनी धर्मनाथ ठाकुरक नामपर धर्मपुर: कल्याण झाक नामपर कल्याणपुर: माखनसिंहक नामपर माखनपुरा, राजा कसनारायणक नामपर कंसी (सिमरी); एक अज्ञात शुक्लाक नामपर शुक्लाराही आदि ।

एतय इहो स्मर्तव्य थिक जे' एक्के नामक अनेको गाम अनेको ठाम छैक, ताहि सभक नामकरणक पाछू कोनो एक कारण वा इतिहास नहि रहलैक अछि जेना लोहनारोडक सनिकट धर्मपुर मात्र धर्मनाथ ठाकुर बसओलन्हि, जखनि कि आनो ठाम धर्मपुर पाओल जाइत अछि एहिना सरिसब-पाहीक निकटक 'कल्याणपुर' मात्र कल्याण झाक द्वारा बसाओल गाम अछि, आन नहि बक्सर जिलामे स्थित 'अहरौली' के अहल्याक नामपर स्थापित कहल जाइत अछि, जखनि कि इएह कारण 'अहियारी 'क संग सेहो देल जाइत रहल अछि ।

मिथिलाक किछु एहनो गाम अछि, जकर नामकरणक पाछू एक इतिहास रहलैक अछि, भारतीय राजनीतिक वा सांस्कृतिक इतिहास । जेना विराटपुर, विराटनगर, बनाटपुर, वैराटीक नामकरणक पाछाँ मिथिलहिक एक भागक अर्थात् मत्सदेशक राजा विराटक सम्बन्ध जुड़ल छनि, जनिक दरवारमे पाण्डव लोकनि अपन अज्ञातवासक अवधि बितओने रहथि । मिथिलाक तत्कालीन जनपद सभमे विदेह, वैशाली, मत्स्य आदि देश प्रमुख छल । जखनि कि पाण्डवहिक बसाओल वर्तमान 'पण्डौल' अछि, जे पाण्डवालयक अपभ्रंश थिक । परम्परया ई श्रुत थिक जे अज्ञात वास हेतु जएबाकाल पाण्डव लोकनि एतहुँ रात्रि विश्राम कएने रहथि बेनीपट्टी थानामध्य जे वनाटपुर गाम

अछि, तकर सुनैत छी प्राचीन नाम विराटपुरे रहैक । एकर निकटहि अछि 'उत्तरा' नामक गाम, जे विराटराजक पुत्री ओ अभिमन्युक पत्नीक नामपर बसल अछि । उत्तरासँ किछु हटि 'कीचकवाहा' नामक स्थान अछि, जतए विराटक सार कीचककें घिसिया-घिसिया मारल गेल छल । ओना ओकर वासस्थान छलैक किछु हटिकें, जे आई 'कछरा' कहवैत अछि । कीचकसँ किचरा, पुनः कचरा आऽ अन्तमे कछरा भेल होएत, जे सभ मत्सदेशमे अबैत छल। एकरे लगपासमे अछि विष्णुपुर आ मधवापुर, जतए माधव (श्रीकृष्ण) अपन विष्णुरूप देखओने रहथि । स्मरणीय अछि जे ई सभ गाम 'भाला' प्रगन्नामे पड़ैत अछि। एही विष्णुपुर लग अर्जुन अपन अज्ञातवासक समय गाण्डीव आऽ बाण नुकओने रहथि जाहि स्थानपर आई 'गाण्डीवेश्वर महादेव' एवं 'बाणेश्वर महादेव' क मन्दिर अवस्थित अछि । एहिना नेपालक मोरंग जिलामे वर्त्तमान विराटनगर ओ चम्पारणक वैराटी गामक सम्बन्ध सेहो विराटराजहिसँ जुड़ल अछि, जे ऊपर कहि आएल छी ।

राजा सीरध्वज जनकक पुष्पोद्याने आजुक फुलहर गाम थिक, जतए गिरिजामन्दिर 'गिरिजास्थान'सँ प्रसिद्ध अछि आओर एतहि जगज्जननी सीताक भेंट श्रीरामसँ भेल रहन्हि। एही ठाम हरलाखी थानामे विश्वामित्रक शिविर छल, जे आई 'विशौल' कहबैत अछि । सौराठ ओ रहिकाक सन्निकटे विद्यमान 'कपिलेश्वरस्थान' भगवान् कपिलक आश्रम स्मरण करा रहल अछि, संगहि इहो परम्परया श्रुत अछि जे एहि शिवक स्थापना स्वयं कपिले मुनि कएने रहथि । गौतमऋषिक जतए आश्रम छल, से ब्रह्मपुर आई विकृत भएकै 'बदमपुर' भए गेल अछि, जखनि कि कमतौलक एही परिसरमे अहल्यापुरीस प्रसिद्ध प्राचीन नगरीक नाम अपभ्रंश भए 'अहियारी' भए गेल अछि ।

सीतामढ़ी जनपद सीताजीक उद्भवस्थान लक्ष्मणानदीक तटपर अवस्थित तत्कालीन 'पुण्य ऊर्वी' आई विकृतभए 'पुनौरा' नामे प्रसिद्ध अछि। एही ठाम पुण्डरीक ऋषिक आश्रम सेहो छल, जनिका नामपर पुनरी-सरोवर (पुण्डरीक सरोवर) प्रख्यात अछि । एकरे बगलमे स्थित गिरभिशानी नामक गाममे खथि पुराण प्रसिद्ध 'हलेश्वरनाथ

महादेव', जनिक अनतिदूरेमे प्राचीन कालक 'उर्विजा वारिजा', उरिया बेरिया नामे प्रसिद्ध अछि। सुरसण्ड ओ जनकपुर रोडपर आई जे 'पन्ध-पाकड़ि' पाओल जाइल, सुनैत छी वह स्थान थिक, जतए पाकड़िक गाछतर सीताजीके अयोध्या लए जयबाक क्रममे कहार सभ सुस्तेबाक हेतु रखने रहनि ।

नेपालक महोत्तरी जिलामे जलेश्वर महादेवस्थानक बगलहिमे एकटा गाम अछि सुग्गा । एतहि राजर्षि जनकक द्वारा व्यासपुत्र शुकदेवजीक आवास व्यवस्था कराओल गेल छल । बादमे इएह शुकाश्रम शुकासँ 'शुक्का' होत 'सुम्मा' भए गेल अछि । शुकदेवजी मिथिला अएवाकाल रास्तामे चम्पारणक बेतिया लग सेहो स्कूल रहथि जे स्थान आई 'सुगाओ" से जानल जाइत अछि । जनकपुरसं दश मील दूर हटि 'धनुषा' नामक स्थान जतए रामचन्द्रजीक द्वारा कएल गेल धनुषभंगक कथा स्मरण दियचैत अछि, ओतहिं मुजफ्फरपुरक 'रोगा' ओ रेवारी (ऋग्वारि), सीतामढीक 'अथरी", "यजुआर आर मधुवनीक समौल क्रमशः ऋग्वेद, अथर्वेद, यजुर्वेद ओ सामवेदक तत्कालीन अध्ययन- अध्यापनक स्थानकै स्मृति पटलपर अनैत अछि । धनुषा जिलामे अवस्थित 'कुसुमा' ग्राम यद्यपि किछु गोटे याज्ञवल्क्य ऋषिक आश्रमस्थल मानैत छथि, मुदा ओहि गाममे वाजश्रवा ऋषिक आश्रम छलनि से बहुतो प्रमाणसं प्रमाणित अछि, हिनके पुत्र रहथिन नचिकेता । याज्ञवल्क्यक आश्रम तं योगिवनमे छल, जे आई हीरापट्टी- जगवन कहबैत अछि । ई गाम अछि मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी थानामे ।

मधेपुरा जिलाक सिंहेश्वरस्थानक सम्बन्ध रामायणकालीन ऋषि श्रृंगीसँ रहल अछि, जनिक आश्रम एतए छलन्हि आ जनिका द्वारा स्थापित 'श्रृंगीश्वरनाथ महादेव' आई सिंहेश्वरसँ प्रसिद्ध छथि । भागलपुरक कहलगाँवमे एकटा पहाड़पर दुर्वासाऋषिक आश्रम छल आओर सुलतानगञ्जमे गङ्गानदीक पार्श्वमे एकगोट पहाड़पर जह्नुरुषिक आश्रम रहन्हि, जे आई जह्नुगिरिक अपभ्रंश भए 'जहाँगिरा' कहबैत अछि । विद्वान् अन्वेषकक ई धारणा रहलन्हि अछि जे पालवंशीय

सुप्रसिद्ध विक्रमशिला विश्वविद्यालय, एही जह्ल-आश्रमक निकटमे छलैक ।

दरभंगाक नाम कोना पड़ल से विवाद एखनो हल नहि भए पाओल अछि, कारण 'मुण्डे मुण्डे मतिभिंत्रा' । तथापि अनेक किंवदन्तीमेस किछुके एतए उधृत करैत छी । जेना किछु गोटे द्वारबंग (बंगालक द्वार) सँ दरभंगाक कल्पना करैत छधि त केयो दरभंगीखाँ नामक कोनो पैघ व्यक्तिकें आनि बैसाओल आठ कहल जे इएह दरभंगाक निर्माण कएलन्हि । जँ १८म शतकक सुबेदार दरभंगीखाँक नामपर दरभंगाक स्थापना मानि ली तँ एहिसँ पूर्व 'दरभंगा क चर्चा कोना भेटैत अछि ? तहिना यदि बंगालक द्वारसँ 'द्वारबंग 'क कल्पना करी तँ 'बंगद्वार' होएबाक चाही, न कि द्वारबंग, संगहि दरभंगाक कोन स्थानसँ बंगालमे प्रवेश कएल जा सकैछ, सेहो एक प्रश्न अछि । किनको-किनको अनुसार इहो श्रुत अछि जे राजा शिवसिंहक दल (सेना) के मुश्लिम आक्रान्ता जखनि भंग (नाश) कएलक, तकर बादे एकर नाम 'दलभंगा' भेल आ संस्कृतक 'रलयोरभेद के मानि ई दरभंगा कहओलक अथवा उच्चारण- सौविध्यक कारणें दरभंगा भेल । शिवसिंहक एतूका तत्कालीन पड़ाव स्थलकें आइयो लोकसब 'शिवधारा'सँ जनैत अछि । परन्तु एहि शहरक नामकरणमे उपर्युक्त कोनोटा कारण समुपयुक्त प्रतीत नहि होइछ । हमरा जनैत आठम-नम शदीमे जे चौरासी गोट सिद्धलोकनि भेलाह, ताहिमध्य मिथिलहुँक कतोक सिद्ध प्रसिद्ध रहथि। हुनके सभक नामपर हुनक स्थान- विशेषर्के परवर्ती कालमे नामकरण कएल गेल होएत, जेना दरि:पाद' (दरिपा) सँ दरिभंगा ओ 'हरि पाद' सँ हरिभंगा, 'भर: पाद' सँ भरभंगा (आजुक नाम भरंगा), 'शंकरपाद' सँ शकरी वा सकरी, एहिना शबरपा से सबौर आदि।

विभाण्डकमुनिक आश्रम रहनि कालीवनमे, जे पछाति करियन कहओलक आ आई ई समस्तीपुर जिलामे 'करियन- बलहा 'सं प्रसिद्ध अछि। स्मरणीय थिक जे' एही गाममे परवर्ती कालमे उदयनाचार्य, गोवर्धनाचार्य आदि मिथिला-विभूति भेल रहथि। एही

कालखण्डमे, मुदा किछु पूर्व भेल छथि 'रत्नकीर्ति' नामक प्रसिद्ध आऽ निविष्ट बौद्धविद्वान्, जे धर्मपालक शिष्य ओ विक्रमशिला विश्वविद्यालयक आचार्यो रहथि । हिनक परोक्ष भेलापर हिनकास प्रभावित समाज हिनक गामक नाम राखि देलक 'रत्नपुर', जे आई बिगरिकें 'रतनपुर' भए गेल अछि । एकरे अनति दूरपर स्थित अछि 'किरतिनिया', जे हिनकहिं नामार्धक लए बसाओल गेल प्रतीत होइछ आऽ 'रतनपुर-किरतिनियाँ' कहबैत अछि ।

मिथिलाञ्चलक किछु गामक नामकरण ओतूका राजा वा जमीनदारक कारणें सेहो भेल अछि, एहने गाम वा

स्थानसभमे सुप्रसिद्ध अनि राजर्षि जनकक 'जनकपुर', राजा बलिक राजधानी- स्वरूप 'बलिराजपुर (बाबूबरही लग), अलर्कक सम्पत्ति राजा बननिहार कर्णाटवंशीय राजा नान्यपदेवक नामपर सीतामढ़ीक 'नानपुर' राजा कंशनारायणक नामपर 'कसी' (कसी-सिमरो) आदि । तहिना ओइनिवार मूलक राजा कामेश्वर ठाकुरक पूर्वज ओएनठाकुरक स्थापित 'ओइनी' (ओएनी) गाम आई-काल्हि समस्तीपुरक ताजपुर थानामे पुसारोड स्टेशनलग ओइनी-बैनीस प्रसिद्ध अछि। एही वंशक राजा शिवसिंहक पिता देवसिंह अपन नामपर 'देवकुली' गाम स्थापित कएल, जे आई लहेरियासराय लग 'देकुली से जानल जाइत अछि । शिवसिंह, पचसिंह सभक बाद भेल राजा धीरनारायणक भाई कुमार लक्ष्मीनारायण सेहो अपन नामपर एक ग्राम बसाओल, जे' देकुलिये लग 'लक्ष्मीनारायणपुर' से प्रसिद्ध अछि । धीरनारायणक पात् राजा भेनिहार रामभद्रनारायण ओ कसनारायण दुनू गोटे अपन-अपन नामपर गाम वा राजधानी बनाओल वै चिक 'रामभद्रपुर' आ 'कंसनरैनी' किंवा 'कंसी-सिमरी', जकर चर्च पहिने कए चुकल छी । तहिना 'महेशपट्टी', 'शुभंकरपुर' ओ 'सुन्दरपुर के सम्बन्ध क्रमशः महेशठाकुर, शुभङ्करठाकुर ओ सुन्दरठाकुरक संग रहल अछि । बेगूसराय जिलामे राजा जयसिंह अपन ओ पत्नी मङ्गलादेवीक नामपर जतय 'जय मङ्गलागढ़ के स्थापना कएल, ओतहि नौलागढ़ (बेगूसराय), अलौलीगढ़ (खगड़िया), कटरागढ़ (मुजफ्फरपुर)

आदिक सम्बन्ध सेहो ओतूका राजा लोकनिक संग रहल अछि बिहारक मिथिलाक्षेत्र, मगध ओ भोजपुरक्षेत्र अथवा बिहारक बाहर राजस्थान प्रभृतिमे स्थित 'पाली', 'पाल' वा 'पाल' शब्दयुक्त गामसभक सम्बन्ध कदाचित् प्राचीनकालक पालवंशीय राजासभक संग रहल होइन्हि, ताहू सम्भावनाकै नकारल नहि जा सकैछ एहीमे अछि मिथिलाक 'पाली', 'जगदलपाली', 'घनश्यामपुर पाली', 'रानीपाल' आदि गाम ।

'सुगौना' पहिने सुगौनमूलक ब्राह्मण जमीनदार लोकनिक गाम छल, जतय बादमे ओइनिबारमूलक एक ब्राह्मण शाखा सौ आदि बसल । ई ग्राम मधुबनी जिलामे कपिलेश्वरस्थान लग अवस्थित अछि । एकर पूबमे भामतीकार बृद्धवाचस्पति मिश्रक आश्रयदाता नवम शताब्दीक राजानृगक राजधानी 'नगवार से प्रसिद्ध अछि, जे' ओहि समय नृगपट्टी आदि नामक रहल होएत। एही कोटिक गामसभमे अबैत अछि जगतसिंह, शक्तिसिंह, लखिमारानी, गंगदेव, राघवसिंह, माधवसिंह, दुलारसिंह, महिनाथ ठाकुर आदिद्वारा संस्थापित जगतपुर, शक्तिपुर (शकतपुर), रानीपुर, गंगद्वार (गंगदुआरि), गंगोली (गनोली-पहटन), राघवपुर (राघोपुर), माधवपुर (माधोपुर), दुलारपुर, महिनाथपुर आदि

मिथिला ओ मिथिलाक बाहरक किछु गाम वा स्थान एहनो अछि, जकर नामकरण सनातनधर्मक साम्प्रदायपर राखल गेल अछि । यथा-
विष्णुपुर, हरिपुर, हरिनगर, हरिदासपुर, हरियाहरि, नारायणपुर, गोविन्दपुर, मोहनपुर, चक्रधरपुर, माधवपुर मधवापुर, श्यामपुर (मोजा), दामोदरपुर, रामपुर, रामभद्रपुर, रामनगर, रामचन्द्रपुर, रामदयालपुर, रामदयाल, राघवपुर, जयदेवपट्टी, बेलमोहन, घनश्यामपुर, चकरिया (भगवान्क चक्रपर राखल गेल नाम), लक्ष्मणपुर, भरतपुर आदि जतय वैष्णवनाम थिक, ओतहिं शैवनाममे प्रमुख अछि शिवपुर, शिवनगर, शङ्करपुर, शङ्करसराय, शम्भुआर, महादेवनगर, महादेवपुर, महदेवा, रुद्रपुर, ईशानचक, ईशपुर आदि एही तरहें शिवपञ्चायतन नामपर राखल गेल नाम थिक कुमारपुरा (कार्तिकेयक

नामपर), गनपतिया (गणेशक नामपर), बरदहट्टा (बसहा बरद वा नन्दीक नामपर), गंगजला (गंगाजल पर) आदि । तहिना शाक्त-साम्प्रदायिक गाममे परिगणनीय धिक भवानीपुर, भगवतीपुर, लक्ष्मीपुर, शारदापुर, शक्तिपुर, दुर्गापुर, दुर्गाग ञ्ज, गंगापुर, कमलापुर (कमलपुर-बिठुआर भिन्न अछि), उमगाँव (उमागाँव), अपर्णा (अपरना), पारोगाँव (ई पार्वतीगाँवक अपभ्रंश बुझाइत अछि), कालीपुर, कालिकापुर, सीतापट्टी, शेरपुर आदि सौरग्राममे सूरजगढ़ा, भानुपुरा, सूरजनगर, रवियाही आदि जतय उल्लेखनीय अछि ओतहि 'बहिनपुरा' नामक गामकै 'वह्निपुर'क अपभ्रंश मानि सकैत छी । जखनि कि हनुमाननगर, मदना, मदनपुरा, ब्रह्मपुर, ब्रह्मपुरा, ब्रह्मोत्तरा, चानपुर, चा नपुरा, चनौर आदि सेहो जतय हनुमानजी, कामदेव, ब्रह्मा ओ चन्द्रमाक नामपर बसल ग्राम प्रतीत होइछ, ओतहि देवहार, भगवानपुर आदि सामान्य देवतापर आधारित गाम कहल जा सकैछ ।

किछु गामक नाम तँ अस्त्र-शस्त्र अथवा धातुपर आधारित कोनो विशेष कारणें राखल गेल होएत, जेना कि भालपट्टी (भाला), करौच (किरीच), तलवारि (तरुआरि), कुरहरिया (कुरहरि), लोहा (सौराठ), लोहार (भवानीपुर), सोनाली (सोना), रुपौली (रूपा), रजतपुर (चान्दी), रजतपुरा (चान्दी), सोनपुर (स्वर्ण) आदि ।

-डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक'- वरीय आचार्य, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्रीसदाशिव परिसर
पुरी (ओडीशा) ७५२००१ (मो.- ८८९५१२२३१२)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.२.संतोष कुमार राय 'बटोही'-मंगरौना (एगारहम खेप)



संतोष कुमार राय 'बटोही'
मंगरौना (एगारहम खेप)

भुकभुकिया लाईट जैर रहल छै मंदिर पर। रस्ता मे बाँस पर मरकरी लागल छै। मंदिर पर लाइटिंग ततेक नीक लागि रहल छै तकर ठिकान नहि। मोन हरखित भऽ गेल देखि कऽ । माँ दुर्गा मंदिर मे आयल छथि। मंदिर केर भव्यता बेजोर छै। अइ बेर मेला जमतै। सरिपहुँ माँ आयल छथि।

अइ बेर माँ कँ माटि-मंगल मे देर भऽ गेलन्हि। राम हृदय बाबा कँ मुइला सँ माटि-मंगल कँ तिथि मे हेरफेर करऽ पड़लै। कलश स्थापन सँ किछु दिन पहिने माटि-मंगल केर काज केल गेल । मंदिर तँ बनि गेल छैन्ह माय कँ , परञ्च पलस्तर बाकी छन्हि। टाकाक कमी केर कारण मंदिर में पलस्तर नहु-नहु गति सँ भऽ रहल छै। माँ शेरावाली अपन काज करबा कँ छोड़तिन्ह। देर हेतै , परञ्च पलस्तर पूरा भऽ के रहतै।

मेला लेल जगह कँ कमी भऽ रहल छै। मंदिर कँ समीप वाला खेत मे खेत वाला सभ प्याज, गेहूं, खेरही बाग कऽ दैत छथिन्ह। जनसंख्या बढ़ला सँ खेतक कमी भऽ रहल छै। तँ जिनकर खेत छियैन्ह ओ अपन खेत मे फसल बौ करबे करतिन्ह चाहे दुर्गा पूजा समिति कँ नीक लगैन्ह वा नहि।

अखनो धरि केस खत्म नहि भेलै। सताइस लोकनि कैँ केस मे नाम छन्हि। आइ नहि काल्हि जहल जाय पड़तन्हि। नवदुर्गा पूजा समिति कैँ पक्ष कमजोर भऽ रहल छन्हि। दोसर पक्ष खेला कऽ रहल छथि। जे कियो हिनका दिस सँ छिटकि गेल छलाह, हुनका कम्बल दऽके मनौल जा रहल छन्हि। इ नीक गप छियैय जे किछु लोकनि कंबल पाबि कऽ फेर मालिक-मालिक कहअ लगताह।

इ छथि जिला पार्षद 'रामानंद राय' । इ कयम साल सँ कहैत छथिन्ह मेला नहि लगौ, परञ्च हिनकर गपक कोनहु भेलुएशन नहि छन्हि। आन गाम मे जिला पार्षद केर आगा-पाँछा दस लोकनि रहैत छन्हि , परञ्च हिनका आगा-पाँछा शून्यता छन्हि। राजनीति केकरा कहैत छै से सभ कियो अखनो धरि भ्रम मे छथि। चुनावक बाद जनता कैँ काज केनिहार जीत जेताह से संभव नहि रहि गेल छै ।

अइ बेर संतोष पचपन हजार टाका मूरति खरच लेल देलथिन्ह। सभ किछु लेल लोक अलग-अलग चंदा दैत छै। माटि-मंगल लेल अलग , कलश यात्रा पूरा भेला पर कलश भरनिहारीन सभ के शरबत पीअबै लेल अलग । हर दिन आचार्यजी, दुर्गासप्तशती पाठ केनिहार पठैत, पुजेगरी, वगैरह लेल फलाहारक खरच लेल अलगे चंदा लोक देत छै। सभ किछु लेल चंदा देनिहार लोक अपन-अपन बरख बुक कऽ लेने छथि आओर बुक कऽ रहल छथि। माँ दुर्गा किनको निराश नहि करैत छथिन्ह। माँ केर शक्ति अपरमपार छन्हि।

''श्रद्धालुगण , धेयान देबै ! मनिहारा मे पुरुष कैँ परवेश वर्जित छै। नवदुर्गा पूजा समिति कैँ जतेक कारकरता छी, सभ कियो अपन-अपन ड्यूटी मे लागि जाऊ । मेला मे भीड़ बढ़ि रहल छै। इ दाता छथि - सुरेश राम पिता कालीदास घोंघड़रिया निवासी, माँ शेरावाली कैँ चरण मे एक सैअ टाका अर्पित केलखिनऐँ ,माँ दुर्गा हुनका सभ परिवार कैँ खुश करतिहिन दुर्गा पूजा समिति मंगरौना इएह कामना करैत अछि।'' एके साँस मे किशनदेव जी बजलाह।

मंगरौना गामक मेला नामी छै । मेला मे मैर हेबेटा करत। किछु लफुआ छौड़ा लड़की सभ कैँ छेड़
दैत छै। अइ लेल ओकरा भरपेटा मैर लगैत छै। पोर-पोर कैँ तोड़ल जाएत छै। मेला मे तोड़ण द्वार बनौल जाएत छै। अइ बेर तोड़ण द्वार मे पोस्टर लागल छेलै जाहिर मे नवदुर्गा पूजा समिति लिखल छेलै। इ 'नवदुर्गा' शब्दकोश पीछा किछु राज छुपल छै , नहि तँ पहिने सँ इ शब्द रहितैक । अइ पोस्टर मे तीन गोटेक फोटो छै - दुर्गापूजा समिति कैँ अध्यक्ष साहेब कैँ , सचिव साहेब कैँ आओर कोषाध्यक्ष साहेब कैँ। आब दुर्गा पूजा मे 'आईडेंटिटी' केर लड़ाई भऽ रहल छै। 'मुँहपुरखी' केर लेल गाम मे शीतयुद्ध छिड़ल छै।

शान्ति कलश कैँ जल लेल मैर भऽ सकइए । श्रद्धा-भक्ति सभहक ततेक ने जोर मारऽ लगलैए से 'अहिंसा परमो धर्म:' सभ कियो भुलि गेल छथिन्ह। मारधाड़ मे लोक कैँ विश्वास बढ़ि रहल छै।

-संतोष कुमार राय 'बटोही', ग्राम - मंगरौना

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.३.संतोष कुमार राय 'बटोही'-समीक्षा- जिनगी भार बनि गेल



संतोष कुमार राय 'बटोही'
समीक्षा- जिनगी भार बनि गेल

कथा :- जिनगी भार बनि गेल-कथाकार :- जगदीश प्रसाद मंडल
समीक्षक :- संतोष कुमार राय 'बटोही'

जगदीश प्रसाद मंडल जीक कथा 'जिनगी भार बनि गेल' एकटा मार्मिक कथा अछि। सेवा-निवृत्तिक बाद हेमंत कुमार आओर हुनकर पत्नीक चिंता कि बुढ़ाड़ी मे कतऽ जाय, ई सही छन्हि। भूमंडलीकरण के अई दौर मे टाका सभ किछु भऽ गेल छै। लोक टाका कैँ चिन्हैत छथिन्ह। मनुक्खक वेवहार बदलि रहल छै। वृद्ध भेलाक बाद किनको कियो देखिनिहार नहि रहि जायत छै। ई पैघ सामाजिक समस्या बनि गेल अछि।ई चिंता हिनकर जायज छन्हि। एकटा माय-बाप कैँ देखिनिहार कियो नहि आओर एकटा माय-बाप अपन सभ संतान केर हगनी-मूतनी सँ लऽकऽ सभ किछु करैत छथि। 'जिबैत जी गुँहा-भत्ता आओर मुइला पर दुधा भत्ता' कहवी सरिपहुँ सच भऽ रहल अछि।

हेमंत कुमार आओर रश्मि बाँझ नहि छथि। हिनका दूटा बेटी छन्हि जिनकर ब्याह भऽ गेल छन्हि। परञ्च ओ दुनू परानी चिंतित छथि जे बुढ़ाड़ी मे हम कतऽ जाऊ। आन देसक नहि बुझल , लेकिन मिथिला मे आओर भारत मे ई बड़ पैघ समस्या बनि गेल अछि जे माय-बाप संतान लेल बोझ बनि रहल अछि। अबै वाला समय मे ई समस्या आओर

विकराल रूप धारण करत। ई समस्या सभ वर्ण, जाति आओर क्षेत्र मे नहु-नहु गति सँ फैल रहल अछि।

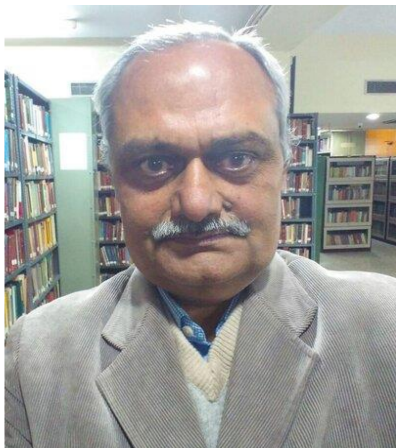
टाकाक कमै केर आपाधापी मे माय-बाप के भुलि जेनाय कतौ उचित नहि कहल जा सकए। मनुक्खक मूल्य बदलि रहल अछि। टाकाक आगा मे लोक परिवार आओर समाज कैँ भुलि रहल छै। समाज मे अतेक विख घुलल छै जे कियो किनको गलती पर किछु कहनिहार नहि। मगनी केर झगड़ा कैँ मोल लेत। बेटा माय-बाप के मारि रहल छै आओर समाज ओकर विडिओ बना रहल अछि।

अगर संपत्ति मे संतानक अधिकार होएत छै , तँ बुढ़ाड़ी मे माय-बापक सेवा-टहल करनै, अंतिम साँस धरि देखभाल करनै संतान केर कर्तव्ये टा नहि छन्हि, बल्कि ई कानूनन होमक चाही जे माय-बापक सेवा करनै अनिवार्य हुएह। संविधान मे नैतिक कर्तव्य केर रूप मे ई जोड़ल जेबाक चाही आओर माय-बापक सेवा नहि केनिहार कैँ लिखित वा मौखिक शिकायत पर कम-स-कम दु-चारि सालक सजा हेबाक चाही।

-संतोष कुमार राय 'बटोही', ग्राम - मंगरौना

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.४.रबीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २५ म खेप



रबीन्द्र नारायण मिश्र

मातृभूमि (उपन्यास)- धारावाहिक

२५

जानकीधाम पहुँचलाक बाद जयन्त नागबाबाक संगे रहए लगलाह। शारदाकुंजमे आचार्यजीकेँ ई बात पता लगलनि। ओ प्रतीक्षामे रहथि जे जयन्त अपने अएताह। मुदा कैक दिन बीति गेलाक बादो जखन आचार्यजीसँ भेंट करए नहि गेलाह तँ हुनका रहल नहि गेलनि। ओ स्वयं शिष्यसभक संगे जयन्तसँ भेंट करबाक हेतु नागबाबाक स्थानपर पहुँचलाह । नागबाबा ओहि समय ओतहि रहथि । जयन्त अपन शोधग्रंथकेँ विमोचन हेतु प्रस्तुत करबामे व्यस्त छलाह ।

आचार्यजीकेँ सामनेसँ अबैत देखि हुनकर हर्षक सीमा नहि छल । ओ तुरंत उठि हुनका दण्डवत भए प्रणाम केलनि ।

" क्षमा करब आचार्यवर! हम अपनेसँ अखन धरि भेंट नहि कए

सकलहुँ । सोचैत रही जे पुस्तकक विमोचन करबाक अवसरेपर अपनेसँ भेंट होएत ।"

"कहिआ छैक विमोचन?"

"अपनेक सुविधानुसारे तिथि तय कएल जाएत ।"

"बढ़िआँ होएत जे कालीकान्तोसँ पुछि लेल जाए । अहाँक गेलाक बाद ओ कए बेर पुछारी करैत छलाह।"

" आचार्यवर! सत्य पुछल जाय तँ हम संकोचवश ने अपनेसँ भेंट कए सकलहुँ ने कालीकान्तक सामने जएबाक साहस भेल?"

"से की?"

"हम तँ जानकीधाम छोड़ि कए गाम चलि गेल रही । मुदा परिस्थिति एहन भेल जे हमरा नागबाबाक बात मानि एतए आबए पड़ल ।"

"जे भेलैक, से भेलैक । जानकीधाम अएबाक हेतु ककरोसँ पुछबाक काज नहि होइत छैक । ई तँ सभहक स्थान अछि।"

"आचार्यवर पुस्तकक विमोचनक सभ भार अपनेपर अछि। अपने जखन उपयुक्त बूझी तखने एहि कार्यकेँ संपन्न कएल जाएत ।"

" एहि शुभकाज कैँ जतेक जल्दी कएल जाए ततेक नीक।"

"फेर अपने कालीकान्तसँ विमर्श कए आगूक कार्यक्रमक आदेश देल जाए ।"

"ठीक छैक । हम आइए भेंट करबनि । "

तकरबाद आचार्यजी कालीकान्तसँ भेंट कए सभबात कहलखिन । कालीकान्त एहि बातसँ बहुत प्रसन्न रहथि जे जयन्त

जानकीधाम लौटि गेलाह ।

"मुदा जयन्त अपने किएक नहि अएलाह? "

"ओ अपनो आबए चाहैत रहथि । मुदा..."

"मुदा की? एहिठाम अएबामे हुनका कोन अवरोध?"

"से सभ की रहतनि । ओ पुस्तकक विमोचनमे व्यस्त रहि गेलाह । हमरोसँ भेंट नहि कए सकल रहथि।"

“ओ! आब बुझलिऐक ने असली बात । चलू हम अखने अहीं संगे चलैत छी ।"

कालीकान्त चंद्रिकाकेँ बजओलनि आ तीनूगोटे जयन्तसँ भेंट करबाक हेतु नागबाबाक स्थान पर पहुँचि गेलाह । संयोगसँ नागबाबा कतहु गेल रहथि ।

कालीकान्त संगे चंद्रिकाकेँ देखि जयन्तकेँ तँ जेना करेंट लागि गेलनि । ओ अध्ययन छोड़ि ठाढ़ भए गेलाह । कालीकान्तकेँ अभिवादन करैत छलाह कि चंद्रिका टोकि देलखिन-

"अहाँ तँ हमरा साफे बिसरि गेलहुँ ।"

जयन्त किछु नहि बाजि सकलाह ।

चंद्रिकाक सौंदर्य देखैत बनैत छल । जयन्तक इच्छा भेलनि जे हुनका कनी नीकसँ देखी । एतेक दिनपर भेंट भेल रहनि। मुदा संकोचवश मुड़ी नहि उठा सकलाह ।

हुनका दुनूकेँ गप्प करैत देखि कालीकान्त आ आचार्यवर सहटि गेलाह ।

"अपनेक आज्ञा होइ तँ काल्हि अपनेक सभा मंडपमे एहि

पुस्तकक विमोचन संपन्न कएल जाए । "- आचार्यवर बजलाह ।

"अवश्य कएल जाए । "- कालीकान्त सहमति दैत बजलाह ।

-रबीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, बएस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अड़ेर डीह, मातृक: सिन्घिआ ड्योढ़ी, वृति: भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्षः२०१७ १.भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निवंध), ३.स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्षः२०१८ ४. फसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्तस्यै (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास); प्रकाशन वर्षः२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्षः२०२० १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)१५.ढहैत देबाल(उपन्यास); प्रकाशन वर्षः२०२१ १६.पाथेय(संस्मरण) १७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास); प्रकाशन वर्षः२०२२ १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास) २२.राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास) २५.दीप जरैत रहए (उपन्यास)।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.५.कुमार मनोज कश्यप-ओ दधीचि



कुमार मनोज कश्यप

१ टा लघुकथा

ओ दधीचि

वसीयत करब कोनो आम बात तऽ छै नहिं; ताहू मे अपन मुइला के बाद ओकरा पंचायतक बीच पूरा परिवार के उपस्थिति मे खोलि सार्वजनिक करबाक बात लोकक कौतुहल संगे जिज्ञासा बढ़ा देने छलै। आ सैह कारण छलै जे कर्ता-माछ-मासु के प्रात लाल-कका के दलान पर लोक सह-सह करय लागल। जुगे भाई आ हुनक कनियाँ के कोनो उन्टा-पुन्टा के सहज ज्ञान भऽ गेल छलनि तैं मोन खड्डछायल -भन-भन करैत! भरल सभा बीच लिफाफ खोलल गेल आ सरपंच वसीयत पढ़ि सभके सुनबऽ लगलाह - "हम अपन सम्पूर्ण होशोहवास मे वसीयत करैत छी जे हमर सम्पूर्ण संपत्ति मे हमर बेटा-बेटी के बरोबरि के भागीदारी हेतै ....।" सुनिते किछु लोक थपड़ी बजेलक, केयो कनफुसकी शुरू केलक। जुगे भाई फक्क पड़ि गेलाह; मुदा कनियाँ सऽ आवेग सम्हारल नहिं भेलनि - "हम तऽ जनिते छलियै जे बुड़हा दू-चालि छैथ.....गुँह-मूत

करै लै बेटा-पुतोहू आ ...... " अपन मोनक भड़ास ओ आओर निकालतथि ओहि सs पहिने उर्मि अपन हाथ सs हुनक मुँह बन्न कs देलक - " बस्सssss ... भौजी आब नहिं! ". बाबू ने हमरा अपन संपत्ति मे हिस्सा देलनि; मुदा हम भरल पंचायत मे अपन सभ हिस्सा आहाँ के दै के घोषणा करैत छी..। हमरा कोनो संपत्ति के लोभ नहिं .... लोभ अछि एतबे जे हमर नहिरा बनल रहै।" ओ हबोढ़कार हिचुकि-हिचुकि कनैत रहलीह ।

थोपड़ी के गड़गड़ाहट .. किछु काल चुप्पी..... फेर कनफुसकी। भरि गाम मे चर्चा छलै तs बस एकरे।

-**कुमार मनोज कश्यप, सम्प्रति**: भारत सरकार के उप-सचिव, **संपर्क:** सी-11, टावर-4, टाइप-5, किदवई नगर पूर्व (दिल्ली हाट के सामने), नई दिल्ली-110023 मो. 9810811850 / 8178216239 ई-मेल : writetokmanoj@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.६.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खेप-१७)



निर्मला कर्ण (१९६०-), शिक्षा - एम् ए, नैहर - खराजपुर,दरभङ्गा, सासुर - गोढ़ियारी (बलहा), वर्त्तमान निवास - राँची,झारखण्ड, झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभाग मे बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पद सँऽ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।

मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण

अग्नि शिखा (भाग - १७)

पूर्व कथा:

राजा पुरूरवा के विलक्षण वीरताक कारण देवताक विजय दानव राज केशि पर भेल। एहि कारण सप्तऋषिय के सम्मति एवं भगवान विष्णु के आकाशवाणी सन्देशक कारण राजा पुरूरवा के स्वर्गक अर्द्धासन प्राप्त भेलनि I मुदा पुरूरवाक आकांक्षा तऽ उर्वशी छलीह I

आब आगू:

अमरावती के विशाल मनोरंजन कक्ष,! एहि समय सद्य:परिणीता सन अलंकृत छल I देवताक दानव पर भारी विजय के उपलक्ष में आई एहि प्रेक्षागृह में लक्ष्मी-स्वयंवर नाटिका के प्रदर्शन भेनाई निर्धारित छल I अप्सरा रंभा के नृत्य सँग आर बहुत रास मनोरंजक कार्यक्रम होमय के छैक I भरत मुनि विचार केला उपरांत एहि नाटिका के चयन केलनि। चयन उपरांत अत्यंत परिश्रम संऽ पात्र के चयन करैत हुनका सभ संऽ अभ्यास करौलथि ओ। नाटिका के प्रदर्शन त्रुटि हीन होइ एकरा पर विशेष

ध्यान रहनि भरत मुनि के । ओ स्वयं लक्ष्मी-स्वयंवर नाटिकाक सभ पात्र के चयन एहि अवसर हेतु कएने रहथि l संगहि ओ स्वयं एकर निर्देशन के दायित्व सम्हारलथि l एक-एक पात्र के चयन ओ योग्यता अनुरूप कएने रहथि।

"लक्ष्मी" के अभिनय हेतु उर्वशी के चयन कएने रहथि l ओना तऽ एहि कार्यक्रम में ओ भाग लेमय नहि चाहैत रहथि, किएक तऽ ओ अपन एखुनका स्थिति में अभिनय करवा लेल समर्थ नहि रहथि l मुदा भरतमुनि के द्वारा हुनक चयन कएल गेल छल उपयुक्त पात्र मानि ,आ इन्द्रक पूर्ण सहमति छलनि एहि में।एहि परिस्थिति में ओ विरोध नहि कऽ सकलीह। ओ अनिच्छा पूर्वक एहि कार्य हेतु प्रस्तुत भेल छलीह l

सभ देवतागण के बैसवा हेतु उचित आसनक व्यवस्था कएल गेल छल l भरतमुनि के वास्ते विशेष सिंहासन राखल गेल छल l अभिनय मंच के निर्माण हेतु स्वयं विश्वकर्मा उपस्थित भेल छलाह l संपूर्ण दिन एकर व्यवस्था में व्यतीत भेल l सभ देवतागण एवं ऋषिगण निश्चित समय पर मनोरंजन कक्ष में उपस्थित भऽ गेल छलाह । अपन-अपन निर्धारितआसन पर सभ देवतागण के बैसलाक उपरान्त कार्यक्रम के प्रारंभ कएल गेल l

कार्यक्रम के प्रारंभ में देवतागणक विजय-गाथा के ओजपूर्ण वर्णन राजा पुरूरवा अपन वक्तव्य में केलथि । तत्पश्चात इन्द्र अपन वक्तव्य देलखिन। वक्तव्य के उपरांत दुनू गोटे एकहि सिंहासन पर विराजमान भऽ गेलाह l देवर्षि नारद अपन वक्तव्य में पुरूरवा के संपूर्ण जीवन गाथा कहि देलन्हि l एकर उपरांत भरतमुनि अपन लक्ष्मी-स्वयंवर नाटक के विषय वस्तु के में प्रारंभिक किछु शब्द कहलन्हि | नाटिका के पात्रक परिचय देलन्हि ,तत्पश्चात ओ अपन आसन पर बैस गेलाह l नाटक के पूर्व रंभा के मंगल नृत्य भेल l नेपथ्य में बैसल सौंदर्यवती उर्वशी राजा पुरूरवा के देखवा हेतु आकुल-व्याकुल भऽ रहल छलीह l मुदा ओ नेपथ्य में रहवा लेल विवश छलीह । अभिनय प्रदर्शन के पूर्व हुनका बाहर निकलऽ के अनुमति नहि छलन्हि,एहि कारण ओ अपन मोन मसोसने बैसल रहलीह।

मंगल नृत्य के बाद देव विजय केर भावोत्पादक गान नृत्य शैली में मेनका प्रस्तुत केलन्हि l उपस्थित सभ दर्शक एहि नृत्य के माध्यम संऽ युद्धक

झांकी मुग्ध भऽ देखऽ लगलथि l कतेक वास्तविक रूप संऽ युद्धक दृश्य प्रस्तुत भेल छल - मेनकाक नृत्य शैली में! सब दर्शक "वाह-वाह" कऽ उठलथि l मुदा राजा पुरूरवा के मुख पर कोनो विशेष भाव परिवर्तन नहि भेलैन्हि l ओ बहुत गंभीर दृष्टिगत भऽ रहल छलाह l
इन्द्र नृत्य पर विमुग्ध होइत जोरदार ताली बजा उठलथि l ओ अपन दृष्टि घुमा पुरूरवा के देखलथि,मुदा हुनका अत्यंत गंभीर देखि आश्चर्यचकित भाव संऽ पूछऽ लगलाह - "कहां गुमि गेलहुँ भू-मंडलेश्वर! आहाँ तऽ अति गंभीर प्रतीत भऽ रहल छी! की कोनो विशेष बात अछि ? अथवा पृथ्वीवासीक चिंता होमय लागल अपने के ?"
"नहि देवाधिप ! हमरा पृथ्वी वासी के प्रति कोनो चिंता नहि अछि हम ओतुका शासन व्यवस्था संऽ पूर्णतया संतुष्ट छी l एहना स्थिति में हमरा प्रजाक चिंता किएक होयत ? बस मोन नहि लागि रहल अछि,एहि कार्यक्रम में" - पुन:दुनू के मध्य मौन घनीभूत भऽ उठल l
आब लक्ष्मी-स्वयंवर नाटकक प्रारंभ होमय जा रहल छल l एहि नाटिका में भाग लेम वाली मुख्य अभिनेत्री उर्वशीक सर्वप्रथम रंगमंच पर प्रवेश भेल। ओ इन्द्र एवं राजा पुरूरवा के बेरा-बेरी देखलथि। पुन: हुनक दृष्टि पुरूरवा पर केंद्रित भऽ गेल l पुरूरवा एवं उर्वशीक दृष्टि आपस में एक-दूसर संऽ एक बेर किछु क्षण लेल एहन मिलल कि दुनू गोटे एक-दूसर के देखैत रहि गेलाह l पुरूरवा के लागल जेना ओ अपना के बिसरायल जा रहल छथि l भाव विभोर भऽ गेलाह ओ l उर्वशी के हृदय में प्रेमक प्रसुप्त चिंगारी भड़कि उठल l ओ अपना के अभिनय करवा में असमर्थ अनुभव करऽ लगलथि। ओ लक्ष्मी चरित्र एवं अपन संवाद पूर्ण रूप सऽ बिसरि गेलथि। पुरूरवा के अतिरिक्त हुनका किछु याद नहि रहलनि। अपन सुधि-बुधि बिसारि ओ असहाय सन एम्हर-ओम्हर दृष्टि घुमा देखलथि, पुनः टकटकी लगा पुरूरवा के देखऽ लगलीह l भरत मुनि नेपथ्य में जा हुनका संवाद के स्मरण संकेतक द्वारा कराओल l उर्वशी अपना के आब संभारि लेलथि l
तत्पश्चात मेनका एवं रम्भाक प्रवेश मंच पर भेल l आब तीनू कलाकार के सम्मिलित रूप संऽ नृत्य के विभिन्न भाव भंगिमा द्वारा अपन-अपन भाव के दर्शक वृंद तक प्रेषित करवाक छलन्हि l सब कुशल एवं भाव प्रवण अभिनेत्री छलीह l ताहि संऽ अत्यंत कुशलता पूर्वक अपन-अपन

अभिनय करैत रहलथि। उर्वशी के कनिको असुविधा होइन अथवा अन्यमनस्क देखि रम्भा हुनका अपन भ्रू-भंगिमा के द्वारा अभिनय के स्मरण करवा देथिन।

आब मेनका एवं रम्भा नेपथ्य में गेली। मंच पर उर्वशी एकसरे रहलथि । आब लक्ष्मी-रूप धारण कएल उर्वशी के एकसरे लक्ष्मी के चरित्र के अनुरूप लय पूर्वक नृत्य करवाक छलन्हि l मुदा ई कथि भऽ गेल! एहन अनर्थ ! अपन सुधि-बुधि बिसारने उर्वशी ! लक्ष्मी-रूप धारण कएल उर्वशी! ओ तऽ अपन नेत्र में अनुराग भरि अपलक पुरूरवा के निहारि रहल छलीह l भरत मुनि द्वारा बताओल अभिनय व संवाद ओ प्रायः विस्मृत कऽ चुकल छलीह l ई देखि नाटक के आविष्कर्ता मुनि भरत के मोन खिन्न भऽ गेलन्हि l

पुरूरवा एवं उर्वशीक आंतरिक भावना के हुनक अनुभवी दृष्टि क्षण मात्र में परखि लेलक। अपन अंतर्दृष्टि द्वारा ओ सब ज्ञात कऽ लेलथि l उर्वशीक एहि असामयिक धृष्टता सँऽ ओ क्रोधाविष्ट भऽ गेलथि l क्रोधक वशीभूत भऽ ओ झट श्राप दऽ देलन्हि -

"उर्वशी आहाँ के उनसठ वर्ष तक स्वर्ग सऽ च्युत होमय परत एवं ओकरे प्रेम में विदग्ध रहब जेकर छवि एखनि आहाँ के नेत्र एवं हृदय में अंकित अछि! आहाँक ओ प्रिय मानव स्वयं आहाँ के विरह में संतप्त रहत!"

'हा दैव! ई की भेल ! एहन अनर्थ ! आब की होयत ! हमरा कारण राजा पुरूरवा के अपमानित होमय परल "' - भरत मुनि के श्राप सुनितहि उर्वशी दु:ख सऽ विह्वल भऽ गेली | उर्वशी अत्यन्त दु:खी भऽ गेली l ओ सोचि रहल छलथि,हुनके गलती के कारण निर्दोष पुरूरवा के संग-संग श्राप के भागी बनऽ पड़लन्हि l हुनक मोन बेकल भऽ कानि उठल l मूर्छित भय मंच पर धराशाई भऽ गेली l देवता गण में केओ-केओ ई घटना के बुझलथि,अधिकांश नहि बूझि पओलथि l अनेक दर्शक एहि घटना के तऽ नाटकेक एक अंश बुझलथि l इन्द्र पर्यन्त एहि घटना के नहि बूझि पओलथि l राजा पुरूरवा पर्यन्त किछु बुझलथि किछु नहि। हुनका ई अवश्य बुझना में आए ऋषिवर भरतमुनि स्वयं राजा एवं उर्वशी पर क्रोधित छलाह। मुदा पूर्ण जानकारी हुनको नहि भेट सकल। नाटक में श्रापक ई अंश संभवत: लक्ष्मी आ भगवान विष्णु के वास्ते छल - यैह इन्द्र एवं अन्य अधिकांश देवतागण के बूझि पड़लन्हि l उर्वशी शब्द हुनका

सभ के कर्ण गोचर नहि भेल रहन्हि l हठात् स्थिति के सम्हारि लेलथि मेनका l किनको एहि बातक अभिज्ञान नहि भऽ सकलन्हि कि नाटक के मध्य कतेक पैघ दुर्घटना उर्वशी आ पुरूरवा के जीवनक सँग भऽ गेल l

...

नंदनकानन में आई एकसरे पुरूरवा आबि गेल छलाह l हुनक ह्रदय अत्यंत दु:खी छलैन्हि,अन्य किनको ओ अपन सँग नहि आबऽ देलखिन l इन्द्र हुनका सँग आबऽ चाहलखिन,मुदा एकसरे में अपन ह्रदय केर स्थिति पर विचार करवाक छलन्हि,ताहि कारण ओ इन्द्र के आबऽ लेल बरजि देलखिन l संतान वृक्ष के नीचाँ सुंदर हरिताभ तृण पर ओ मूक बैसल छलाह, शून्य में अपलक दृष्टि सँऽ देखैत l

क्रमशः

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.७.प्रणव झा- करमनेढ़



प्रणव झा

करमनेढ़

सदर अस्पताल बेगूसराय के दृश्य नित दिन जेका सौंसे गहमा गहमी पसरल अछि। ओपीडी मे लंबा लाइन लागल, ओपीडी कक्ष मे डॉक्टर सब जल्दी जल्दी अपन मरीज निबटाब' मे लागल अछि। डॉक्टर कक्ष के बाहर लाइन मे धक्कम-मुक्की चली रहल अछि। किछू गोटे जोगार से लाइन तोड़ी के डायरेक्ट अपन मरीज के दखाबय मे लागल अछि। वार्ड मे मरीज सब से भेंट करय बला संबंधी सब के एनाय जेनाय लागल अछि। कतौ कोनो मरीज के नर्स इंजेक्शन लगा रहल छथीन कतौ कोनो मरीज कराहि रहल अछि।

एहिना एकटा ओपीडी कक्ष मे डॉ० प्रवीण अपन ट्रेनी संगे अपन मरीज सब के निबटा रहल छलाह। डॉ० प्रवीण पोरकें साल सदर अस्पताल मे सीनियर कंसल्टेंट कम पीजी टीचर के रूप मे ज्वाइन केने छलाह। डॉ० प्रवीण शुरुए से कुशाग्र बुद्धि आ मेहनती छलाह। चंडीगढ़ पीजीआई से एमडी केलाक बाद फ़रीदाबाद के एकटा फाइव स्टार कॉर्पोरेट अस्पताल मे कंसल्टेंट के रूप मे कार्यरत छलाह। तेसरा साल डॉ० प्रवीण छईठ मे गाम आयल छलाह। भोरका पहर जखन टहलऽ लेल गाछी दिस बिदा

भेल छलाह त रस्ता मे यार कक्का भेंट गेलखिन। "गोर लगई छी यार कक्का की समाचार नीके छी की ने" प्रवीण यार कक्का के पैर छू प्रणाम करैत बजलाह।

"खुश रहु बौआ रहु आबाद...... गाम रहु कि फरीदाबाद" यार कक्का आशीर्वाद दैत बजलाह। यार कक्का बिहार सरकार से रिटायर भेल पूर्व कार्मिक छलाह आ आब सामाजिक कार्य सब मे लागल रहई छईथ। पढबा-लिखबाक सेहो बेस शौख छैन आ बात बात पर छंद मिलेनाई मे विशिष्टता राखई छईथ।

आगा प्रवीण से कुशल क्षेम पुछईथ यार कक्का बजलाह "की हौ भोरे भोर कातिक मास के शीतल बसात के आनंद लेब' लेल निकलल छह की?"

"हाँ कक्का गाछी-वृक्षि के शीतल बसात के आनंद त गामे मे ने भेंटत" प्रवीण बजलाह

- हौ प्रवीण भने तू ई बात उठेलह हम तोरा से एहि मैटर मे किछ बात कर चाहई रही। देखह तों जे एकटा प्रस्ताव पर विचार करह त ई गाछी बला शीतल बसात के आनंद बारहो महीना छतीसो दिन ल सकई छह। देखहक एनबीईएमएस राज्य सरकार सबके जिला अस्पताल मे डीएनबी आ पीजी मेडिकल डिप्लोमा कोर्स चलेबाक प्रोग्राम आनने अछि जै से कि देश के जिला जिला मे सस्ता आ निक गुणवत्ता बला मेडिकल केयर आ पीजी मेडिकल प्रशिक्षण उपलब्ध कराओल जा सकई। एहि क्रम मे हमरा सन किछू जागरूक सामाजिक कार्यकर्ता सब बिहार सरकार के कहि-सुनि के बेगूसराय सदर अस्पताल मे सेहो ई प्रोग्राम चलाब' लेल राजी केलहू। आवेदन प्रक्रिया मे छैक मुदा अस्पताल मे योग्य पीजी टीचर के कमी के चलते किछ विभाग के आवेदन अटकल छैक। तों शिशुरोग विशेषज्ञ छहक ने आ तोरा अनुभव सेहो भ गेल छौ। तै हमर प्रस्ताव छल जे यदि तों ऐ पद के ग्रहण कर लेल स्वीकार करह त हम सरकार से बात करी आ कम से कम शिशुरोग विभाग मे डीएनबी शुरू करबाक एकटा बड़का बाधा खतम हेतैक।

- प्रवीण के ई प्रस्ताव पर किछु थकमकाइत देख यार कक्का पुनः बजलाह "हौ हम बुझई छी से ई डीसीजन तोरा लेल आसान नई हेत' किए कि आदर्शवादी बात कहनाई आ कर' मे अंतर होइत छैक। ताहि लेल हम तोहर निर्णय लेब' के प्रक्रिया के प्रेक्टिकली किछ आसान क दैत छियह। देखह बिहार सरकार से तोरा ओहन दरमहा त नई भेंटतह जे फ़रीदाबाद के बड़का अस्पताल मे भेंट रहल छ। मुदा एतय तो सदर अस्पताल मे काज के संगे अपन क्लीनिक या अस्पताल सेहो चला सकई छहक। तोरा सन योग्य डॉक्टर के क्लीनिक खूब निक चलत तै मे कोनो शक नई। सक्षम लोक के तोहर चिकित्सा लाभ प्राइवेट प्रेक्टिस से आ गरीब लोक सब के सदर अस्पताल के माध्यम से भेंटई ऐ से निक आर की बात हेतई। आ सब मिला के तोरा आर्थिक रूप से कोनो नोकसान नई हेतौ से हमर गारंटी छैक। तकरा बात तोरा मोन मे होइत हेत' लाइफ स्टाइल के ल क त देखह आब सब तरहक दोकान दौरी , मॉल-सिनेमा शॉपिंग, रेस्टोरेन्ट आदि सबटा अपना शहर कस्बा मे सेहो उपलब्ध अछि। बाल-बच्चा लेल निक गुणवत्ता बला प्राइवेट स्कूल सब सेहो उपलब्ध छैक आ दसमा के बाद त ओहुना बच्चा सब आब घर से बाहर कोनो कोचिंग के लेल जाइते छैक। बदला मे तोरा आ बाल-बच्चा के भरि साल गामक हवा, गाम-घरक आनंद, नाँव , इज्जत, प्रतिष्ठा सब भेंटतौ।

- कक्का अहांक बात काट' बला नै अछि, हम निश्चित ऐ प्रस्ताव पर गंभीर छी। मुदा हमरा ऐ मादे निर्णय तक पहुँच लेल किछ समय चाही, घरक लोक से सेहो विमर्श करय पडत। आ जे जेना होयत हम शीघ्र अहाँ के सूचित करब

ई कहि प्रवीण कक्का से विदा लेलखिन।

~सोना शटकुनिया हो दीनानाथ हे घूमय छ संसार........ लाउडस्पीकर पर शारदा सिन्हा के आवाज मे बजईत ई गीत के स्वर छठि घाट पर ठाढ़ डॉ० प्रवीण के कान मे पहुँच रहल छल आ मोन मे यार कक्का के प्रस्ताव पर तीव्रता से विचार चलि रहल छलइन्ह।

करीब एक महिना बाद यार कक्का लग प्रवीण के फोन आयल छल, ई बताब' लेल जे हुनका यार कक्का के प्रस्ताव स्वीकार छैन। बस फेर की वातावरण मे साकारात्मकता आ उत्साह के बयार बहि निकलल। आनन फानन मे सबटा प्रक्रिया शुरू भेल, डॉ० प्रवीण आब सदर अस्पताल बेगूसराय के शिशुरोग विभाग मे पीजी टीचर के रूप मे ज्वाइन क नेने छलाह आ ओहि साल से अस्पताल मे डीएनबी पीडियाट्रिक्स कोर्स सेहो शुरू भ गेल छल।

चलू आब वर्तमान पर आबी। डॉ० प्रवीण के सामने एकटा अधेर उमरि के आदमी बैसल छल आ डॉक्टर साहब के एकटा डीएनबी ट्रेनी ओकर पोती के देख रहल छल। ओ बैसल छल मुदा सामने राखल स्टूल पर नई अपितु जमीन पर उकड़ू बैसल छल। श्याम वर्णीय आ घनगर मोछ राखने, ललाट पर ललका टिक्का लगौने ओकर चेहरा पर गोटैक बेर बात कर के क्रम मे मुस्कान आबि जाय छल। खास क के जखन ओ अपन पोती के बात करय छल। ओकर चहरा आ आंखि पर परल झुर्री ओकर जीवन संघर्ष के गाथा कहि रहल छल। मुदा शरीर से बलिष्ठ आ फिटफ़ाट छल ओ आदमी। डॉक्टर साहब के बुझना गेल रहैन जे ट्रेनी के मर्ज समझ मे नई आबि रहल अछि ताहि से ओ ओकरा से पुछने छलखिन जे

"ई बचिया अहांक के य ?"

"पोती हइ साहेब "

"की भेलई य एकरा?"

महिना-दु महिना से पेट हहाइत रहई हइ साहेब दरद से छटपटा जाय हइ।

"की करय छि? कत' रहय छी?"

"चेरिया बरियारपुर गाँव है साहेब, एतई स्टेशन लग चाह-पकौड़ी के खोपचा लगबई छी।"

"पहिने अहाँ कुर्सी पर बैस जाऊ प्रवीण खाली कुर्सी दिस इशारा करैत बजलाह

"नई साहेब हम ठीक छी जमीन पर उकडु बैसल ओ बाजल

"नै पहिले कुर्सी पर बैसु ऐ बेर प्रवीण कनी तेज आवाज मे बजलाह आ ओ सकुचाईत कुर्सी पर बैस रहल छल।

तदुपरांत अपन ट्रेनी डॉक्टर के केस के विषय मे किछ समझेला के बाद प्रवीण पुनः ओकरा दिस तकैत बजलाह चेरिया बरियारपुर बहुत दूर छैक एत से त फेर एतेक दूर बेगूसराय काज कर आबै छी? ओतहि कोनो काज किए नै करई छी।

साइकिल से आबय छी साहेब। हमर बाबूए ई खोमचा खोलने रहई। नेनपने से हुनका जौरे साइकिल पर आबईत रहि, हुनके से ई काज सिखल आ तहिया से यैह ठाम ई काज करई हियइ।

ई सब कहईत ओकरा चेहरा पर कोनो दुख या पछतावा के भाव नै छल अपितु अपन पिता के संग बीतेने अपन नेनपन के अनुभूति, पिता के वात्सल्य के स्वाभाविक गौरव अनुभूति ओकरा चेहरा पर और ओकर आंखि के चमक मे पढ़ल जा सकई छल।

डॉ० प्रवीण फेर पुछलखिन एनाई-जेनाइ लगा क लगभग 45-50 किलोमीटर त भ जाय हेत, त गामे दिस किए ने किछ करय छह।

ओमहर दिस ओहन मजूरी नै भेटई छई साहेब। एत बाबू के जमायल काज है 500-600 के दिन दिहाड़ी बनि जाय है।

बच्चा सब की करय ये "बेटी सब बियाहि देलियइ साहेब बेटा सब दिल्ली मे कमाय है।" डॉ0 प्रवीण के प्रश्न के जवाब मे ओ बाजल छल।

"कुन क्लास मे पढ़य छहक नुनु" एबरी डॉ प्रवीण ओय बचिया से पुछने छलाह

"पंचमा मे" ओ छौड़ी तमइक के बाजल छल

ई सुनि ओ आदमी अपन मोछ पर ताऊ दैत बाजल, बड्ड चंट हय साहेब, सबटा हिसाब किताब फटाफट क लई है।

अच्छा एकटा बात बताब' नाती-पोता सब के पढेबहक की नै" डॉ० प्रवीण के साइत ओकरा से बात कर' मे निक लागि रहल छल। संजोग से रोगी के भीड़ सेहो कम छलय।

"हाँ साहेब पढेबई किए नै"

"अपन बच्चा सब के किए नै पढेलहक" तोरा सब के त आरक्षण सेहो भेटई हेत' । दसमा तक पढ़ने हय बच्चा सब साहेब, सरकारी इसकुल मे पढ़ाईए कहन होय छय, दुगो-चारगो फारम सेहो भरने रहय लेकिन कुछ

भेटले नय त दिल्ली कमाय लेल गेलय। हम्मे आर हरिजन मे नै आबय हियइ।"

"तैयो ओबीसी मे आबय हेबहक नै त ईडबल्यूएस कोटा मे त एबे करबहक। तोहर धिया पूता सब निक से फारम नै भरने हेत'। तोरा कोनो ने कोनो आरक्षण के लाभ भेटत' तोरा पता छह तोहर ई पोती बहुत कम पाई मे सरकारी कॉलेज से पढ़ि-लिखि क हमरा सन डॉक्टर सेहो बनि सकई छह।"

"हाँ साहब एकरा और के खूब पढेबै हम्मे"

किछू आर गप सप केला के बाद आ पोती के विषय मे दबाय आ सलाह लेला के बाद ओ अपन पोती के ल क गेट पर अपन आ पोती के उतारल चप्पल पहिरि गेट से बाहर गेल।

ओकरा गेला के बाद डॉ० प्रवीण अपन पीजी स्टूडेंट से पुछलखिन "बताऊ उ कुर्सी खाली रहईत ओ निच्चा किए बैसल छल"

स्टूडेंट के थकमकाइत देख ओ कहलाह जे हम बस पूछि रहल छी।

ट्रेनी के किछ उत्तर सूझलो होय तथापि ओ चुप्पे रहल।

"अच्छा ई बताउ जे एतेक रास सरकारी योजना सब के बावजूद ई अपन बच्चा सब के पढ़ेनाई- नौकरी दिएनाई किए नै क पेले"

"सर आलस...बुद्धि... करमनेढ़ सब छै"

"अहाँ के लागे य जे 45-50 किलोमीटर रोज साइकिल चलाब'बाला लोक करमनेढ़ हेतय! ककरो टांग टुटल होय आ ओकर शानदार ट्रैक पर कहि देल जाय जे दौरू त कि ओ दौग पेतय? चलु पहिल सवाल पर घुरई छी। किए कोनो शर्ट-पेंट बला निच्चा नै बैसई छै, किए खाली गरीब-गुरबे टा निच्चा मे बैसय छै? किएकि ओकरा सब के बरसो-बरस यैह समझायल गेल छै जे तोहर पहिरन-ओढ़न, रहन-सहन यैह लाइक छौ जे कुर्सी पर नै बैस सकय छहि। ओकरा ऐ बात के डर बनल रहे छै जे कुर्सी पर बैसने कहीं ओकरा दुत्कारल नै जाय जै से ओकर आत्मसम्मान के ठेस लागतई। तै ओ पहिनेने निच्चा मे बैस रहल छल। हम ओकरा से एत्ती काल गप्प क रहल छलहू जैसे अहाँ सब के बता सकि जे जै मरीज सब के डॉक्टर सब मशीन के जेका देखे छय कनिके काल ओकरा से गप्प केला पर कतेक रास बात बुझना मे आबय छय। ओकरा खोपचा मे चाह पीबईत कतेक लोक के मोन मे ई आबईत हेतय जे ई रोज 50 किलोमीटर साइकिल चला के ओ चाह दुकान चला रहल छै। एहन मरीज के एकटा व्यर्थ जांच लिख देनाइ मतलब भेल जे एक दिन ओकर जांच के व्यर्थ चक्कर मे बर्बाद केनाइ आ ओकर दिहाड़ी मरनाई। डॉक्टर के सदिखन एकटा केयरगिवर बनि के मरीज के इलाज करबा के चाहिए। यदि अहाँ कुर्सी पर बैसल छी आ कियौ आहाँ के सामने अछईत कुर्सी निच्चा मे बैसल अछि त ई बात अहाँ के कचोटबा के चाहिए। जे भी मरीज होय ओकरा पहिने अपना समानता के स्तर पर महसूस करबीयौ फेर ओकर इलाज करियौ आ अफ्नो अंदर समानता के भाव राखियौ नै छोट नै पइघ। चाहे कलक्टर-नेता होय कि आम गरीब लोक सबके एक भाव से इलाज करबा के चाहिए। अहाँ आ ओकरा मे कोनो विशेष फर्क नै थिक। अहाँ इलाज द्वारा केकरो केयर द रहल छी ओ चाह पिया के । बेसी डॉक्टर सब साहित्य, संवेदना, दर्शन आदि के फालतू आ चिकित्सा प्रैक्टिस के लेल हास्यास्पद मानय छैथ मुदा ई बात के गांठ बाइन्ह लिय जे साहित्य, संवेदना, दर्शन के सबसे बेसी आवश्यकता विज्ञान के कोनो

शाखा के सबसे बेसी छैक त ओ चिकित्साशास्त्र छैक। किएकि चिकित्सा खाली शरिरे टा के ठीक करब के नाम नै थिक अपितु मन आ आत्मा के भी आरोग्य क देबाक नाम थिक।"

संजोग से डॉ० प्रवीण जाखन अपन पीजी ट्रेनी के ई सब बुझा रहल छलाह तखने यार कक्का सेहो कोनो लाथे प्रवीण के केबिन मे पहुंचल छलाह। डॉ० प्रवीण द्वारा अपन ट्रेनी के देल सलाह सुनि यार कक्का के प्रवीण सन आयुर्विज्ञान पीजी टीचर पर बहुत गर्व के अनुभूति भेलइन आ अपन समाज के डॉ० प्रवीण सन चिकित्सक आ शिक्षक देबाक अपन कृतित्व के लेल अपना मे घोर संतोष आ तृप्ति प्राप्त भेलइन। इति।

ऐ **रचनापर अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.८.आचार्य रामानन्द मण्डल-मिथिला के लाल: उपन्यास सम्राट फणीश्वरनाथ रेणु आ पारो



आचार्य रामानंद मंडल

मिथिला के लाल: उपन्यास सम्राट फणीश्वरनाथ रेणु आ पारो

१

मिथिला के लाल: उपन्यास सम्राट फणीश्वरनाथ रेणु

विश्व प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यास मैला आंचल के शिल्पकार फणीश्वरनाथ रेणु के जनम बिहार राज्य के मिथिलांचल स्थित अररिया जिला के औराही हिंगना गांव में शिलानाथ मंडल आ पानो देवी के पुत्र रूप में ०४ मार्च १९२१ में भेल रहे।

विश्व साहित्य के यथार्थ ग्रामीण पीड़ा के संवदिया, पारिवारिक सत्य, गृहस्थ जीवन के दर्पण आ राजनीतिक योद्धा रूपी एकटा मिसाल। कहीं कोई झोल पट्टी नै,धन धरती के मोह नै,बस,तन आ कपड़ा से देखे में ऐरेस्टोक्रेट,मन सं कोसी के धूसर बंजर आ बांझ धरती के अनमोल

छौड़ा आ भावना सं क्रांतिकारी रेणु के अइसन दर्जन विशेषता हैय जे हुनका अमर बनबैत हैय।

मैला आंचल,परती परिकथा, जुलूस, कितने चौराहे,दीर्घतपा,कंलक मुक्ति,ठूमरी, आदिम रात्रि की महक आ अग्निखोर आदि के सृजनकर्ता रेणु साहित्य जगत में तहलका १९५४मे मच गेल रहै मैला आंचल के उपरांत।

रेणु जी तीन भाइ रहैत, फणीश्वरनाथ,हरिनाथ आ महेन्द्र नाथ। फणीश्वरनाथ के तीन शादी भेल रहे।पहिल पत्नी रेखा देवी रहे।एगो लैइकी कविता के जनम देला के बाद चल बसल रहे। रेणु के दोसर विआह पद्मा देवी स भेल रहे। रेणु आजादी के लड़ाई में जीवंत हिस्सेदारी निभैलन। जुलूस जैसन रचना वोकर स्पष्ट प्रमाण हैय। लड़ाई के बीच में १९४२ में जेहल गेलन।पहिल कटिहार जेहल आ बाद में भागलपुर जेहल में रखल गेल रहै।उंहे हुनका यक्ष्मा के शिकायत भेल आ चिकित्सा के लेल पीएमसीएच पटना भेज देल गेल। चिकित्सा के अवधि में उंहा के एकटा नर्स लतिका के समर्पण आ सेभाभाव सं रेणु आ लतिका में प्रेम भ गेलै। हजारीबाग में जा के दूनू गोरे विआह कैं लेलन।

पद्मा रेणु सं सात संतान भेल।तीनटा लैइका आ चारटा लैइकी।मूल्य: इहे संतान सभ रेणु के पारिवारिक धूरी हैय।लैइका सभ हैय- पद्मपराग राय वेणु,अपराजित राय आ दक्षिणेश्वर राय।लैइकी सभ हैय- नवनीता, निवेदिता,अणपूर्णा आ वहीदा। लतिका रेणु सं कोनो संतान नै हैय।

पिता शिलानाथ मंडल के साहित्यिक रूझान आ राजनीतिक जागरूकता के अमिट छाप रेणु पर पड़लैन।आगे चल के रामदेनी तिवारी हुनका राजनीतिक आ साहित्यिक दिशा देखैलथिन।अइ के कारण रेणु कोनो विद्यालय में नै टिकला। कहियो फारविसगंज, कहियो सिमखन्नी, कहियो विराटनगर (नेपाल) के चक्कर लगवैत रहलन। नेपाल के कोइराला परिवार के संगति हुनका क्रांतिकारी बनैलन त बंगला के प्रख्यात साहित्यकार के संगति हुनका कहानीकार बना देलथिन। काशी विद्यापीठ

के पढाई के अवधि में समाजवादी आचार्य नरेन्द्र देव के संगति पैलन।आ अंत में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के कंधे से कंधा मिलाके अइसन साहित्यकार बन लन कि बिहार के वोइ सभ बुद्धिजीवी आ साहित्यकार के उद्वेलित कैलन जे मूलतः नपुंसक भे गेल रहे।

राजनीतिक रूझान के चलते १९७२ में रेणु जी फारविसगंज विधानसभा सं चुनाव लड़लैन परंच हार गेलन।

१९८७ में मैला आंचल पर निर्माता किशोर डंग आ निर्देशक अशोक तलवार धारावाहिक बनैलन आ जेकर टेलीकास्ट भेल रहै।

रेणु जी के कृति मारे गए गुलफाम पर तीसरी कसम फिल्म बन चुकल हैय।जेकर नायक राजकपूर आ नायिका वहीदा रहमान हैय।

रेणु जी अपन पद्मश्री के उपाधि श्रीमती इंदिरा गांधी के द्वारा आपातकाल लगैला पर बिरोध में लौटा देलन। आपातकाल के विरुद्ध लड़ाई में जेल गेलन। अपेंडिक्स के चिकित्सा के दौरान कौमा में चल गेलन आ अइ संसार से सदा के लेल विदा हो गेलन।

राहुल सांकृत्यायन आ प्रेमचंद के श्रेणी के लेखक आ क्रांतिकारी के निधन ११अप्रैल १९७७ के भे गेल।

अइसन वीर साहित्यकार पर मिथिला के गर्व हैय।

२

पारो

रामू छोट सन कसबा मे एगो जलपान के दूकान चलबैत रहय।वो अपन घरवाली लाडो संग दूकान के पीछे वाला घर मे रहय। सुबह सात बजे से दस बजे आ दू पहर तीन बजे से सात बजे साम तक मुरही,घुघनी आ कचरी -चप बेचे से फूर्सत न रहय।वोकर घुघनी आ कचरी चप बड़ा स्वादिष्ट रहय।लोग मल्हान के पता के दोना में सुसुआ सुसुआ के

खाय।माने करूगर आ तपत तपत घुघनी आ कचरी चप।लोग घर सनेश के रूप मे मुरही कचरी चप खरीद के ले जाय।

रामू के एगो बेटा भी तीन साल के रहे।वोकर घरवाली लाडो के फेर से पांव भारी भे गेल। जौं सात महिना बीत गेल त लाडो के काज करे मे दिक्कत होय लागल।लाडो अप्पन घरबाला रामू से बोलल -सुनैय छी।

रामू -बाजू न।

लाडो -आबि हमरा से काज न होयत। हमरा उठे -बैठे मे बड़ा दिक्कत होइअ।

रामू -त कि करू। दूकान केना बंद कर दूं।जीये के त इहे आसरा हय। दूकानों खूब चल रहल हय।

लाडो -एगो बात करू न।

रामू -कि।

लाडो -हमर छोटकी बहिन पारो के बुला लूं न।

रामू -बात त ठीके कहय छी।

लाडो -काल्हिय चल जाउ।काल्हि दूकान बंद रहतैय।

रामू -अच्छे।

गाहक -कि हो रामू।आइ दूकान काहे बंद कैला छा हो।

लाडो -आइ न छथिन।वो हमर नहिरा गेल छथिन।

गाहक -कि बात।

लाडो -हमरा देखैय न छथिन। हमरा मदत के लेल हमरा छोटकी बहिन के बुलावे ला गेल छथिन।

गाहक -अच्छे। काल्हिये से दूकान चलतैय न।

लाडो -हं।

रामू सबरे दस बजे ससुरार पंहुच गेल। रामू ससुर -सास के गोर छू के परनाम कैलक। छोटकी सारी पारो अपन बहनोई रामू के गोर छू के परनाम कैलक।आ गोर धोय ला एक लोटा पानी देलक। रामू अपन गोर धोय लक।

ताले पारो अंखरा चौकी पर जाजिम बिछा देलक। रामू वोइ पर बैठ गेलक।

ससुर बुझावन बाजल -मेहमान । लाडो के हाल चाल बताउ।

रामू बाजल -हम लाडो के मदत के लेल पारो के बुलाबे आयल छी।

बुझावन बाजल -कि बात।

रामू -लाडो के सातम महीना चल रहल हय।घर आ दूकान के काज करय मे दिक्कत हो रहल हय।

रामू के सास बाजल -हं। पारो के ले जाउ।इ मदत करतैय।

बुझावन बाजल -अच्छा। पारो अपना बहिन तर जतय।

रामू बाजल -हम आइए लौट जायब।

बुझावन बाजल -हं। पहिले भोजन त क लू।

पारो -चलू। जीजा।भोजन लगा देले छी।

रामू बाजल -चलू।

रामू भोजन कैलक।आ कुछ देर लोट पोट क के पारो के लेके घरे चल देलक।सांझ छौअ बजे घरे पहुंच गेल। पारो अपन बड बहिन लाडो से गला लिपट गेल।

पारो अठ्ठारह बरिस के गोर युवती रहय।सुनरता वोकरा अंग- अंग से टपकैत रहय। लाडो अपना काज मे मगन रहय।आबि लाडो राहत के सांस लैत रहय। रामूओ काज मे ब्यस्त रहय।

दूकानो खूब चलय। गाहको पारो के देखे के लेल ललायित रहय। लेकिन सभ देखिय भर तक सीमित रहय।

अइ बीच होरी बीत गेल। लाडो एगो सुन्नर बेटी के जनम देलक। पारो अपन बहिन आ बहिंदी के सेवा सुसुर्सा मे लागल रहय।एनी पारो मे शारीरिक परिवर्तन होय लागल।वोकर पेट मे उभार देखाय लागल। कानाफूसी होय लागल।लाडो पुछैय त पारो कोनो जबाब न देय।बात उड़ैत उड़ैत पारो के बाप बुझावन तक पहुंच गेल। बुझावन अपन बेटी लाडो इंहा भागल -भागल आयल।

बुझावन बाजल -मेहमान।इ कि सुनय छीयै।

रामू बाजल -हमरो आश्चर्य लगैय हय।

लाडो बाजल -हमरा कुछ न बुझाइ हय। पारो कुछ न बोलय हय।खाली गुमकी मारले हय।

बुझावन बाजल -मेहमान ।हम अंहा पर पंचायती बैठायब। अंहा पारो के बुला के लयली आ अंहा सुरक्षा न कै पैली।हम आबि मुंह केना देखायब।आ पारो से बिआह के करतैय।

बात हवा में फैइल गेल। काल्हिये भोरे पंचैती बैठल।

सरपंच बाजल -पारो बेटी।डरा न।साफ साफ बोला।

तोरा साथ इ काम कोन कैलन हय।

पारो निचा मुंहे मुंह कैले रहे।कुछ न बोले।कुछ देर के बाद पारो बाजल -कि कहु सरपंच काका।इ जीजा के काम हय।

रामू बाजल -पारो इ तू कथी बोलय छा। कैला हमरा बदनाम करैय छा।

पारो बाजल -जीजा हम झूठ न बोलय छी।अंहू झूठ न बोलू। होरी के रात अंहा हमर सलवार के छोड़ी न खोल देले रही।हम होश मे त रही। लेकिन विरोध करैय के ताकत न रहय। अंहा होरी के बहाने भांगवाला पेड़ा खिला देले रही। बहिनो के खिला देले रही।अपनो खैलै रही। हमरा कुछ ज्यादा खिला देले रही।

रामू कुछ न बाजल।अपन मुंह निचा क ले लेलक।

सरपंच बाजल -एकर एकेटा इंसाफ हय। रामू के पारो से विआह करे के पड़तैय।सारी से बहनोई के बिआह करे पर सामाजिक बंधन न हय।इ अच्छा भी होतैय।

लाडो बाजल -जौ हमर साईं इ गलती क लेलन हय।त हिनका पारो से बिआह करे के पड़तैय।कि करब।विधना के इहे मंजूर हय तो हमरो मंजूर हय।हम दूनू सौतिन न,बहिने लेखा रहब।

रामू बाजल -सरपंच काका के इंसाफ हमरा मंजूर हय।

बुझावन बाजल -सरपंच साहब के फैसला हमरा मंजूर हय।

सरपंच बाजल -त चलू गांव के महादेव स्थान मे।

सभ लोग महादेव स्थान मे गेलन।

अपन साईं से लाडो बाजल -लूं सेनूर आ महादेव बाबा के साक्षी मानैत पारो के मांग भर दिऔ।

रामू महादेव बाबा के साक्षी मानैत पारो के मांग मे सेनूर भर देलक।

हर हर महादेव के आवाज से महादेव स्थान गूंजायमान हो गेल।

नौ महीना बाद पारो एगो सुन्नर लड़िका के जनम देलक।

आइ दूनू पत्नी लाडो आ पारो के संगे रामू खुश आ खुशहाल हय।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी,*सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०राजेश्वर मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-०१ जनवरी १९६० योग्यता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रूचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता - कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह भासा के न बांटियो। २०२२ प्रकाशित रचना - सझिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गान। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी। स्थायी पत्ता- ग्राम- पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढी। वर्तमान पता-पिपरा सदन,मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-चकमहिला जिला- सीतामढी राज्य-बिहार पिन-843302*

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.९.डाॅ. किशन कारीगर-लोंगी डैंस(हास्य कटाक्ष)



डाॅ. किशन कारीगर
लोंगी डैंस (हास्य कटाक्ष)
बाबा बड़बड़ाइत बजैत रहै जे एहनो कहू डैंस भेलैए? कहअ त जेकरा देखियौ सैह कहैयै जे यौ बाबा लोंगी डैंस लोंगी डैंस. आइ भिंसरे स बसहो बरद ताल मात्रा खेलाइए? कहै छियै जे चल बाध बोन दिस चैर लिहें बलू हमहूँ खेत पथार देखने आएब. बसहा बरद पर बैस बिदा हैब की काबे इहो रमैक जाइए लोंगी डैंस. छौंड़ा मारेर सब भींसरे स लाउडिस्पीकर पर घनघनौने छै आ इ बसहो बरद नचैए त एकरो दू सटकन दै छियै एकरो मन सौझ भऽ जेतै की.

ताबे हम बाबा लक पहुँचली हिनका स पुछली जे बाबा की समाचार है क? बाबा बजलै हौ कारीगर समाचार की कहियै देखै छहक ने बसहा बरद पर स धरफरा के खैस परलहुँ? हम पुछली जे बाबा से केना हो गेल? बाबा बोललकै एह की कहियअ बसहा बरद पर बैसल बिदा होइत रही की ताबे लाउडिस्पीकर पर अवाज एलै जे लोंगी डैंस लोंगी डैंस की बसहो बरद रमैक रमैक डांस करअ लगलै आ हम धरफरा के धांई भटका खसलौं की. भागेसरो पंडा के हल्ला केलियै जे दौगअ हौ त उहो भगेसरा बाजल यौ बाबा लोंगी डांस? कहअ तऽ हमर जान अवग्रह भेल रहै आ तोरा सब के अलगे ताल छह. अच्छा पहिने एक जूम तमाकुल खुआबह त फेर कनि गप सप करै छी.

ताबे बाबा के हम खैनी चुना के देली बाबा खैनी खाइत देरी बोललकै जे अंई हौ कारीगर इ कहअ तऽ जे पमरीया नाच, घोरा नाच, नटुआ नाच, अल्ला रूदल नाच से सब त सुनबो देखबो केलियै? आ ई लोंगी डैंस से केहेन होइ छै? हमरा त कोनो भांजे नै लगैए? हौ कारीगर तोरा कोनो भांज बूझहल छह? हम बोललियै जे हमरा कहां इ डांस फांस बूझहल यै क? बाबा हां हां क हँसैत बोललकै हौ कारीगर तोरा मीडिया वला सब के तऽ सबटा बूझहल रहै छह की जे फलां हिरोईन के बेबी बंप दिखा, त फलां हहीरो किसींग सीन केना किया त चिलां हीरो के बेटा ड्रगस कांड मे जेल स रीहा त फलां हीरोइन के बिकनी ड्रेस पर फैंस फिदा. आ लोंगी डैंस दिया नै बूझहल छह? कनि हमरो जल्दी कहअ?

बाबा के बुझबत हम गाबे लगली मोछ के मधमनी दिस घुमा देब? लहान मे आँखि के अपरेशन करा देब? पामर बला चशमा पहिरा देब? यौ बाबा हम छी अहाँ के फैंस मिस ने करू डिल्ली बम्बई कमाई के चैंस? लोंगी डैंस लोंगी डैंस. बाबा गीत सुन झूमे लगलै आ बजलै सबटा गप त बुझबा मे आएल आ इ मोछ के मधमनी दीस किए घूमा देबहक. हम कहलियै यौ बाबा मैथिली पुरस्कार जेंका मनमाना वला गप छै. बाबा बोललकै हं हौ कारीगर हमरो भांज लागल जे सबटा मैथिली पुरस्कार मनमाने पर सर कुटमारे के दरभंगे मधमनी वला के दै छै? कोसिकन्हा बला के सब आवेदक के सब ज्यूरी आ के सब पुरूस्कृत आ किएक? सै केकरो कोनो भांज नै लागअ दै जाइ छै? आ लाथ केहेन करतह जे मैथिली मे एहिना होइत एलैए? एहेन साहित्यिक दलाली स नीक त लोंगी डैंस जे लोक सब स्पष्ट रूपे कारणो बुझहै छै की. त आई सब मिल करह लोंगी डैंस लोंगी डैंस.

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.१०.लाल देव कामत-मिथिलामे मांगैन खवाश छइ! (आगाँ)/ वर्णित रस/ चाह पोखता'क अर्थ जानि गेलहुँ (लघुकथा)/ लघुकथा- परचाक निहितार्थ/ चलला मुरारी छकबय (लघु कथा)/ लघु कथा- हलहौर/ मैथिली बिहैन कथा- -सापरपिट्टा/ भाग जागल- विहैन कथा/ सुनैना बेटी - मैथिली सामाजिक उपन्यास/ लिख पटापैट मारय दयह (लघुकथा)/ लघुकथा- ई गुड़ खेनै कान छेदौने/ अम्बोहि पानि उठल-लघुकथा (मैथिली)/ रोज सेन्टेड लिची (लघुकथा)/ लघुकथा -रानी कैं नँय छै राजा



लाल देव कामत

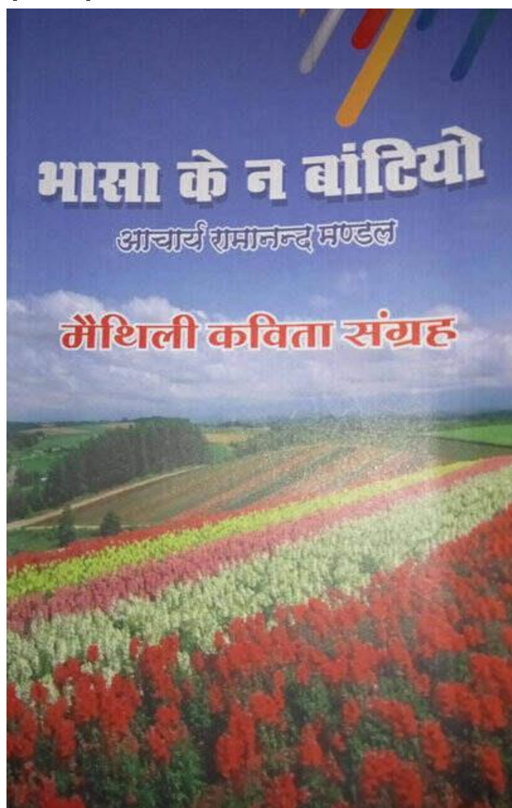
मिथिलामे मांगैन खवाश छइ! (आगाँ)/ वर्णित रस/ चाह पोखता'क अर्थ जानि गेलहुँ (लघुकथा)/ लघुकथा- परचाक निहितार्थ/ चलला मुरारी छकबय (लघु कथा)/ लघु कथा- हलहौर/ मैथिली बिहैन कथा- -सापरपिट्टा/ भाग जागल- विहैन कथा/ सुनैना बेटी - मैथिली सामाजिक उपन्यास/ लिख पटापैट मारय दयह (लघुकथा)/ लघुकथा- ई गुड़ खेनै कान छेदौने/ अम्बोहि पानि उठल

लघुकथा (मैथिली)/ रोज सेन्टेड लिची (लघुकथा)/ लघुकथा -रानी कैं नँय छै राजा

१

मिथिलामे मांगैन खवाश छइ!

(आगाँ)



रामा अहाँ के सुनइली , हम्मर सुनू। ऐ तरहेँ सभ क्षेत्र में बाँकियौता बाइकलाग कहियाधरि पूरा होयत। अपन त्याग देखेबाक एखनो रस्ता देल जा रहल य,परंच जम्मा ढेरी कियो नहिँ ढाहत! उदारवादी होयव बड़े कठीण बुझाछ। तेँ कविजीक पाँति समाजके अन्हारो मे इजोतक बाट देखय ले वाद्य करैत छैक। हुनक एक कविता पढ़ू :-

मिथिला राज्य लेल,बियाकुल मोर जीयरा ।
मिथिला राज लेल, पियासल मोर हियारा ।
मिथिला राज्य लेल ,भुखल मोर मनवां ।

मैथिल भाषा सँ ,अघायल मोर जीयरा ।
मैथिली सनमान सँ , अघायल मोर हियरा।
मैथिली पाग मे। ,समायल मोर मनवां।
बज्जिका भासा सँ डराय मोर जीयरा।
अंगिका भासा सँ घबरायल मोर हियरा।
बोली माने मे हुलसाय मोर मनवां.............
सदरिकाल सँ आबोधरि हम गुलाम छी,हमरा वर्तमान व्यवस्था एखनो गुलामीक जींझिर सँ कसिकय जकड़ने अछि। मुदा खूब जोड़गर झटका धीरे सँ अकान्त करैत य।जेना कि आचार्य जी पाँति गढलैन हन् :-
हम कइसे गुलाम छी!
कहियो हम मुगल के गुलाम छी।
कहियो हम अँग्रेज के गुलाम छी।
कहियो हम राजा के गुलाम छी।
हम कइसे गुलाम छी।
आइयो हम नेता के गुलाम छी।
आइयो हम पार्टी के गुलाम छी।
आइयो हम राजनीतिक के गुलाम छी।
हम कइसे गुलाम छी।
आइयो हम जाति के गुलाम छी।
आइयो हम समाज के गुलाम छी।
आइयो हम अर्थ के गुलाम छी।
हम कइसे गुलाम छी।
आइयो हम धरम के गुलाम छी।
आइयो हम राजवंशी भगवान के गुलाम छी।
आइयो रामा हम राजा के गुलाम छी ! औजको परिस्थिति मे लोक अपने मने आजादी कतय एहसास करा पाएत।तेँ हर पात-पात पर गुलिस्तां तँ बैसले छैक किनै? ऊँच नीच क' भावना समाजमे विद्यमान छैक, संविधान मे अश्पृश्यता - घृणा केर विरूद्ध कारगर कायदा कानून बनल रहलाक वादो लोक कतेक सुरक्षित छैक! ई हमरा एकटा यक्ष प्रश्न ठाढ ,सुरसाक मुँह बौने फरीछ बुझाइछ। एखन तँ एक लेखकीय समाज गुटबंदी कय पचमनियां लिखल के आँय-बाँए मानि रद्दीक टोकरीक शोभा

बढवय बाला स्तरहीन रचना कहिकय ,सोसल मीडिया मे छिरयबैत छै। मनोवैज्ञानिक आपत्ति थीक जे ज्ञानक ई पैघ कटोरी अपनहिटा लग बूझैत मानैत , संघर्षरत तबका कैँ हतोत्साहित कय अधबटियामे लटकौने चन्द तरहेँ वाधक रुपेँ देखार होईछ। कवि महोदय जनमानस मे उर्जा भरैत उपेक्षित वंचित कैँ अपन हक - अधिकार लेल सतत् सजग आ जागरुक रहय ले कहैत अपील धरि कविता विधा माध्यम सँ कयने छथि-:

आई कि होई रहल हैय ।
असहमति के अधिकार
छीनल जा रहल हैय।
आई कि होय रहल हैय।
बोलई के अधिकार
छीनल जा रहल हैय।
आई कि हो रहल हैय।
असहमति के अधिकार
देस द्रोह बन रहल हैय।
आई कि हो रहल हैय।
अमीरी गरीबी के खाइ
बढ़ल जा रहल हैय।...,... आचार्य रामानंद जीक स्पष्ट कथन छैन,पाँति दोसरो देखल जाए :-

भाषा के
सरहद मे न बांटियो।
मैथिली के,
बज्जिका अंगिका मे न बांटियौ।
मैथिली के,
संस्कृत - असंस्कृत मे न बांटियो।
मैथिली के ,
राड़ मानक मे न वाटियो।
मैथिली के,
ऊँच - नीच मे न बांटियो।
मैथिल के ,
बाभन सोलकन मे न बांटियो।

मैथिल के ,
छूत अछूत में न....................
जेना कि सर्व विदित अछि मिथिला मिहिर पत्रिका कविता विशेषांक रूपेँ सितम्बर १९७४ मे एकसय जीबीत कविजीक टटका कविता छापिकय काव्य सौष्टव धाराके गतिमान बनौने रहैक।आ आब तँ दीपा मिश्र (मध्यप्रदेश) १५१ कवियत्री क' एक - एक गोट कविता ' मैथिली ' नामे पोथी छपौलीह आ काव्य धाराके आगू बढौलीह अछि।एहनामे कविताक पोथीक बाढि कए कियो रोकि नँय सकत। आचार्य जीके कविता कैँ गुणय केर आवश्यकता छैक। संक्षेपमे ई कहब जे हमरा मंडल जीक मैथिली साहित्य क्रान्ति सँ घनिष्ठ संबंध भ' गेल अछि। आनन्दानुभूति एतेक धरि बढ़ल जे मैथिली भाषा क' अक्षय भंडारके भरैक लेल अनेकों समीक्षकक ऐ पोथी मादे अखबार मे प्रकाशित भेलो उपरान्त , हमहूं अपनाके नहिं रोकि पबैत छी। एहि तरहक सृजन के आलोचना करैत ई अनुभूति होइत रहल जे शनिचरा लेखक कवि के अतिरिक्त अद्यतन अन्य केर पोथी सर्वथा कम छैक।सम्यक विचार करब अँखिगर लोकक काज होयत।जाहिपर प्रकाशक गण सेहो अनुकम्पा देखाबथि। प्रधानाध्यापक पद सँ विज्ञान शिक्षक आचार्य रामानन्द मंडल जी सेवा निवृत्त भेलासन्ता चारि सालसँ अहर्निस माय मैथिली क' सेवा कय रहलाह अछि। सोसल साइट पर सेहो सक्रिय छथि। सबसँ हिनक पैघौत इयह जे सरकारी स्तर पर मैथिली कैँ धकियेबाक षढयन्त्र कैँ पर्दाफाश केलनि। सीमान कातक बज्जिका आ अंगिका नामे फुट सँ भाषायी बेपार करय बाला मैथिली विरोधी शक्ति कैँ चिन्हबाक खगौट दिश मैथिली आन्दोलनीक आँखि फोललनि अछि। हिनक पोथी विविध आयाम के समेटने भाषा विमर्श लेल अपेक्षित रहत। आश य दोसरो पोथी शिघ्र छपत।

२

"वर्णित रस"

पोथी समीक्षा-: लाल देव कामत

मैथिली भाषा मेँ कवि उमेश पासवान एक बहुचर्चित नाम अछि। हिनक जन्म लौकही थानाक औरहा गाममे खखन पासवान आ अमेरिका देवी'क घर १३ अक्टूवर १९८४ क ' भेलनि अछि। मैथिली साहित्य'क कविता विधामे हिनक श्रुति प्रकाशन दिल्ली सँ काव्य संग्रह २०१२ई० मेँ

१२० पृष्टक पोथी छपल रहनि। सद्यप्रकाशित वर्णित रस ''पोथी' केर किमत २०० टाका निर्धारित कयल गेल छैक,जाहिमे ८७ गोट नव कविता संग्रहित कयल गेल छैक। ओना आमुख ओ सेहो एक कविता रूपेँ गढ़ने छथि। हिनक काव्य सौष्टव केर विषयमे विस्तार सँ पाठकके प्रसिद्ध साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर जीक लिखल "वर्णित रस " मादे सुविचार पढबाक तथ्य भेटैत अछि। युवा पुरस्कार मैथिली साहित्य अकादमी'क भेटला सन्ता आब कोनू विशेष परिचय के मोहताज ई नहिं छथि। पेशा सँ ग्रामीण पुलिस रुपेँ स्थानीय ख्यातिमे अतिरिक्त विशेषता जुटलनि हन्। हिनक कोनू कविताक शिर्षक 'वर्णित रस' नहिं छन्हि,आ नै कोनू पाँतिक ई वाक्य थीक। परंच पोथीक गत्ता आकर्षक मिथिला चित्रकला आ प्रकाशनक लोगो सहजे पृष्टसज्जा दिश पाठकक धियान घीचैत य।हिनक ' वसन्त ' कविताक पाँति एहि तरहेँ होईछ -: आयल वसंत
नव जीवन ल' क'
हर प्राणीमे उमंग भरिकय
गाछ - वृक्षमे
नव कनोजरिक संग
मोजर फूल निकलैत अछि।
खेतमे गहुम - खेसारी
तिसी - मसुरी
तोरीक फुल सँ
समुच्चा बाध गमकैत अछि।
मौधमाछी लगौने
सेनुरिया आमक गाछ पर छत्ता...........
एकटा दोसर कविताक गरहैन "मैना" केर पाँति देकल जाऊ -:
एलै एहेन अन्हर - विहाड़ि
जइ डारि पर छलै मैनाक खोंता
वएह टुटि गेलै ठाढि
डारिक संगे खोंता गिरलै (खसलै)
खोंतामे रहैत बच्चा संग जोड़ों मरलै
पलक झपकिते
मैनाक जीनगी देलकै उजाड़ि

एलै एहेन............

मिथिला महान "कविता" मेँ चर्चित कवि पासवान जी खेतमे हड़बाहाक वर्षाकालीन खेत परहक हालसुरति सेहो मरूआ रोटी पर अखरा नून धूरझार पछीया वसातके दृश्य क' अवलोकैन कराबैत , अढ़ाई मोड़ हर जोतैक प्राचीन झाँखि दिश अन्त:कथा केँ समेटने महानता देखेबामे समर्थ भेल छथि। यथा -:

टाट पर
लतरल तिलकोर पोखरिमे मखान
अखार मासमे
झूमि - झूमिकय किसान रौपैए धान
जगमे सबसँ सुन्दर अछि हमर मिथिला धाम
भाषा आ संस्कृति देखि लोभाएल श्रीराम
वारीमे भेटय पान
घर - घरमे होइए
चूड़ा - दही क' जरए जलपान
मैथिल मिथिला महान ....

हिनक कविताक शिर्षक सँ पाठक मिथिलाक प्रमुख पावैन - तिहार सँ सेहो महिमा मंडित रुपे निम्नाकिंत पाठ मेँ पढि सकैत अछि-: पूर्णिमा,फागुन मे, जिजिया,भरदुतीया आ गबहा संक्रांति। कवीजी केँ नव युवा पीढ़ी पर बढ बेशी आवेश जगैत छन्हि,तेँ जुवातुर्क केँ आह्वान करैत गबैत छथि - :

रहैए युवा के
उमंग मोनमे
जौं
पहाड़ सँ लड़ि लेब हम
संघर्षक जीवन
अहिंसा चलतै
जीवनक अंतिम
समैमे
किछु करि लेब हम
जोश जतय कम नै हुअय

युवा के तँ
परिस्थिति सात समुंदर
पार क' लेब हम
हमरा नै रोकू कियो
दलितक बरदके
हर संभव कम कय लेब हम
लड़ए किएक नै पड़त हमरा
अही दुश्मनक संग
दुश्मनक छाती चीर कए
देखा देव हम .....

उमेश जीके कविताक भावमे करारा प्रहार भेल छन्हि। ओ सोझ रूपेँ अपन बात कहैमे सक्षम भेला हन। जाति - थरमक आ मजहबक नामपर आतंकवादक गाछ रोपय बालाके देखार कयल गेल अछि। देशक युवा पीढ़ी केँ गोली - वारूद ,खंजर - तलवार दैत दुश्मनी आधारित जोश भरैक उत्कण्ठा रखनिहार सँ सतत् सावधान होयब पर बल देलनि अछि। दलित समाजके जे उपर मन सँ नूनू बौआ आ भीतरे भीतर ढहलेल बुझि उपेक्षा कयल गेल,ताहि पर चिंता प्रकट कयल छैक। कोसी नदीक भयावहता आ भीषण वाढिक कारणेँ जे अबरजात पुरब आ पछिम क्षेत्र रुपेँ मिथिला बँटल रहय से आब कोसी महासेतु आओर बड़ीरेल मार्ग जुड़ला सँ सुगम भेल। शिक्षित आ दमीत दलित लोक जे अपना पछुआयल समाज सँ मुँह मोड़ि अनदेखी करैत छैक , ताहिसँ दुखी होइत छथि। जहनकि मेहनत मजदूरी करय बाला व्यक्तिक प्रति सहानुभूति'क आवश्यकता जतौलनि अछि। पंगू उपन्यासक रचियता कवि जगदीश बाबू आ मैथिली कर्मी डा० उमेश मंडल क' विषयमे सेहो अपन कवीत रसधारा बहौने छथि। नारी विमर्श, दलित दमित विमर्श आ सुविधा वंचित जमात लेल हिनक कविताक सौन्दर्य वोध फरीच्छ रूपेँ दिग्दर्शन कराबैछ। कृष्ण आ सुदामा क' मैत्रीभाव अखन समाजक बीच सँ निपत्ता जेकाँ छैक , जखनकि एहन उत्कर्षक निहितार्थ आवश्यकता अकानल गेलैक अछि। समाज साहित्य क' दर्पण छी;तेँ साहित्य समाजक ऐना कहाबैछ। से अभिजात वर्गक धरि मुखाकृति क' आभा मलीन देखेबाक चेष्टा एहि पोथीमे देखाईछ। विद्रुप चित्रण करैत सचेत होयबाक

अभिप्रेरणा क़ोशल सँ भरल ई दीर्घ कविता संग्रह देखि कय कियो पाठक अपन पाई बुड़ैत नहिँ बूझत। पुनः पुनः संस्करण दोसरो प्रकाशक करथि जै सँ ऐ पोथीक उपादेयता जन जागरूकता लेल बढय।

३

चाह पोखता'क अर्थ जानि गेलहुँ

लघुकथा _ लाल देव कामत

आजुक ४५ जिला परिषद क'पूर्व प्रत्याशी ४५शाल पहिले अपना गाम सँ पैरे अम्मा संग दूनू भाय-बहिण ममागाम जाई छलहुँ।वाटमे मौआही बस्तीक उतरवारिकात रौह माछक दू उकेरल पैघचित्र ईनारमे देखबाक प्रतियोगिता लेल दौड़कय आगू बढलौंह।ईमारा पर आब दाहा नै आबय छैक ,तँ पक्का ईनार सझिया बनल रहैक ओहिठाम।से ताहि जगह केर नाम मूल खतियान मेँ गैरमजरूआ खास किस्म आ कैफियतमे चाह पोखता दर्ज छलैक।एहि शव्दक अर्थ बुझय लेल ,जानबाक अभिलाषा मोनकेँ औंटने-पौरने धरि रहैत छल।जगह-जमीन बाली बात तँ कियो बुढे-पुरान वा अमीने बता सकैत छैक,से जानय भ्रमण पर साग-सातु बान्हि बहरेलौंह।ता नेना अवस्था सँ सेहो कने छेंटगर भेल जाई।पँचमा वर्गमे नावों लिखल रहय आ ऐकिक नियम गणित विषय केर हिसाब-किताब पढय लागल छलहुँ।निरमली हायस्कूलमे परसाक सुभकी जी पढैत रहथि,हुनक भेंट आ सतलरायण भैयाक संग शंकर मकई बीया सेहो लेबाक रहय।सुभकजी हमर परीचय धरि हेडमास्टर लाल साहेब सँ करौलनि।ओ बजलथि हम शिक्षक बनय सँ पहिले अमानत करैत छलौंह।ओ जे हमर प्रश्नक अर्थ बतेलनि तँ कने होंसी लागि गेल_"कहलनि चाय पौधा ओहिठाम सरबे कालमे रहल हेतैक।एक अमीन झाजी कोशी कैनाल सँ सेवानिवृत्त भ' हमरा भेटेलाह,ओ कहलनि-"ओतय चाह केर फ्री पसल(अंग्रेजक टी दोकान) भेल हेतैक।असली तथ्य एक चकबंदी सर्वे सँ रिटायर खाँ साहेब बुझेलनि-"चाह माने पानि,पोखता माने होईछ-कुआँ।" आब शव्दार्थ धरि जानि गेल छलहुँ।

४

लघुकथा

परचाक निहितार्थ

सरपंच चुनावमे ठाढ भेलाह लालबहादुर बाबू।औरो लोक उम्मीदवार घोषित भेलाह।सब अपन-अपन सिम्बोलक पर्चा पर उपरेमे नारा सेहो तरह-तरहके प्रेस सँ छपाकय दैत निर्वाचन क्षेत्र मेँ बाँटल। लाल बहादुर जीक पर्चा पर लिखल रहैक- जय जवान, जय किसान.....l ताही परचा परहक नारा जय किसानसँ अर्थ बुझाबैत हर(हल) छापक अभ्यर्थी आ जोरा बरद छापक प्रत्याशी लोककेँ फुसूर-फुसूर, अलग-अलग कहथिन ,देखू न हमरा समर्थन देलाह अछि लाल बहादुर बाबू ।दूनूक प्रतीक किसानी काजक द्योतक छलैक।से बास्तविकमे हुनक किछ बोटर प्रभावित भेलैक।ओना हुनका पिछरा वर्गक बाहुल्य बूथ सबपर सय-सय आ सवर्ण बूथ पर सहानुभूतिपूर्वक पचास-पचासटा वोट भेटलैन। सर्वाधिक एगारह सय भोट पाबी विजयी श्री अपना नामे नमाबेरमे पुराधरि लेलथि लाल बहादुर बाबू।थपरी खुब बाजलैक।

५

चलला मुरारी छकबय

लघु कथा - लालदेव कामत

सखी-बहिनफाक बीच नायिका स्नान करय जेबाक लेल यमुना तीर दिश विदा हेबाक अभिक्रम मेँ रहथीन।एकटा गोपी योजनानुसारे पछुआयल छलीह।से हुनके ओतय गामक अन्तिम छोर पर चलैत सब कियो जाय गेलीह आ उलहन देरी भेलाक लेल दै जाइ गेलीह।ताही बीच एक अत्यन्त आकर्षक महिला गोधपारणी जुमलनि।बहिणा जोड़ैक ले आग्रह करैत नि:शुल्क बाँहि ,गरा आ छाती पड़ेबाक अर्थात् गोदना (टाइटो) चित्रकारी देहक बाह्य अंगमे पड़ेबाक जिद्द ठानैत देखल।गोदना बाली पहिले राधा पर केन्द्रित होइत कहय लगलीह-बहिना हैैय सुइयाक बिख झारि हम अहाँक गोदनामे कृष्ण छापि दै छी।लाबु गट्टा,दोसर सब अविवाहित तरुणी सबकेँ हँसी करैत गोदना बाली बजलीह -अहूँ सबके गोदनाक रंग करिखा संगे-संगे घोरि लैत छी ,से सब कियो अपन दुध बिध ले दिअ! चौल देख घरवारी नवजुवती पड़ेलीह परोसनि चिलकौर लग,दूध आनय।राधाकेँ गोदनाबालीक हाथ करगर बुझाय आ असहज पिड़ा सेहो खुबे।अधहे

छापी छोरबाक कौलैत करय लगलीह राधा।संगे संगी सबके गोदना नहिँ गोदेबाक भाखा बकय लगलीह।अपसिँयात देख गोदनाबाली गीत उठौलिह" कहमा तोर नैहरा गै गोरी,कहमा तोर सासूर रे जान.. जान रे!!",तँ दरदो कनेक कैँ कमैत सहाज जोकरक आसान भेलैक।बौसली बजबैत कृष्णक विलक्षण छवि छपल देखि गोरिसब हरखीत भेलीह।सब सँ बहिना लगाउल नटनियाँ कैँ जहन लघुशंका लगलैक तँ कने अभटमे गेलै आ अनावश्यक देरी लगेलनि।तखन दूगोट सखी बजलीह-हय राधा कने देखै छी नटी बहिना कैँ कियाक रावण बाला लघी बढलैह।जाकय देखल तँ अजगुत,ठामे अझखे देख घुमलीह,आ बजलीह -नटीन तँ कोनो पुरूषसन हिजरा तँ नै छी।

सब गोटे कूतूहलवश निछोहे अयलीह आ एक गोटे हूनक चुनरीक खूंट पकैर घीच लेलीह।अ...आब तँ...

अर्ध्दनारीश्वर।पीताम्बरी आ बौसली साफ-साफ झलकैत राधाकैँ चिन्ह पहिचिन्हमे कृष्ण चित्रकारिसन एनमेन लौकलनि।तँ सम्बोधन करैत बजलीह -हे मुरारी कतय चलल छलौह हीरो बनय.....।ओना कैँ छकै.....के...छकधुम..,..lछकेबाक कोन प्रयोजन?ठकपनीक हद्द केलौ अपने!ता दोसर बहिणा बाँकेक पोशाक सेहो खीचलीह।सब कियो सम्पुर्ण कृष्ण लीला देख हतप्रभ होइत,हुनक छाती पर गोदैत कालक विस्मकारी मुखाकृतिक आभा कैँ अन्यथा एहसास केलनि।मुरारी बजलाह!हमरा जे छकेने रही राजकुमार छद्म भेष धरिकय,से हमहूँ बदला सधायल।आई पनघट पर नहाई ल' गेनाई अबेर होई छलैक,एहि लटारहम मैँ।

६

लघु कथा

हलहौर

एहिबेर भोंटक गनति जिलाजवारमे होइत देख लालजी कैँ भेलनि हमहूँ मधुबनी जा कनि देखितियैक रंगत।से एकटा सरपंच उम्मेदवारक मतगणना अभिकर्ता धरि विधिवत बनि गेलथि।वाड सदस्यक घोषणा मैक सँ जहन होइत रहैक, ताहिघरि ओ आर के कालेजक मीनाबजार बाला गेट लग उत्तरभाग पुंगलाह।अपनो पंचायतक बहुतों गोटे तमशगीर कैँ देखलनि। ओहिठाम गार्ड सँ पता चललैक जे मेनगेट पुवारिकात सँ

कतारमे जाकय लागू।फेर पदयात्रा करैत झटकैर कैँ आरो दू एजेंट आ अभ्यर्थी संग दक्षिणी भाग गेटलग आबय चाहलनि,ओतय असंख्य भीड़कैँ कतारमे देखतहि ,पुलिस प्रहरी सँ बुझय लेल अपन गेटपास कागत देखबैत कहलैन महोदय!मैक पर सुनियौ ने हमरे ग्राम कचहरीके पुकार भ रहलैक अछि। ओ बाजलैक जाऊ कतारमे लागू,अन्यथा हम-सब मनुख कि जे पंछियों कैँ ओना नै ढुकय देबैक-मजिसटेट साहेबक करा आदेश भेल छैक।आब कि हो!एकटा प्रो०साहेबसँ राहीरूपे गप्प भेलैक ,तँ हुनके सुझाव सँ कनिकाटिकैँ रहिका मार्गधरैत पछिम सँ फेर गेटलग धरि आबैत देखते पुलिशबा निछोह छुटल आ सोंटियबैत गारिफज्जैत करैत तमसा कय गरजलैक" ऐ तेरो को कहता हुँ,तभी से मतसुन है क्या?भोंटमे पगला गया है।"से आब मतगणना काज छोरि दू गोटे सँ दरभंगा डी एम सी एच०भरतीभेल लालजी।तखन अर्द्धमिरीत दशा सँ उबरल।धरि ताउमेरक लेल डांर कजिये रहि गेलैक।औषधि चलि रहलैक अछि। पुलिसिया रौब भरकल रहैक हुनकर भाजपानुमा कुरता आ बण्डी पर ।

७

मैथिली' बिहैन कथा'-

-सापरपिट्टा

खेरहिक खेरहा मोन पाड़ैत छी।उमाजी ऐबेर दलहनमे पछुआए गेलाह।पचता खेरहीक जजात हाथ नै लागलैक।फुलबाति चैलते किटनाशक दबाय स्प्रैधरि कयने छलैक।पाकल खेरही'क कारी छिमैर तोरबाक समय घनघोइर पानि पड़य लगलैक।सैनीमैनी गाछ लगक खेतपथार बरिदुर पूभर छलैक।गामक सब किसान अपन आ बटैया खेतमे दू-तीन छोहनि छिमी तोड़िए लेने रहैक।उमाजी एमरी एसकरूआ रहने,अपना टोला पड़ोसाक सब गोटेकैँ कहलक अदहाअधि पर हमर खेरही पहिले छौनी तोइर आनि दै जाऊ।दुरौसक नयका खेत सस्तेमे एहिबेर किनने रहै।जनिजात जोनसब बजलीह- अधिया पर तँ लगोक बाधमे खेरही तोरबै ले कतेको गीरहत कहि गेलथिन अछि।से एहन दुरहकाल मेँ ओतेक दुर कथि ले, के जेतन्हि।पचताइत बजलथि -जाई जाऊ सोलहनी खेरही तोइर आनि लै जाउ! दाइल खाइत काल नामों तँ लेब न? तैयो हुनके भायक रहिपरहक लगक कोला रहने सब जेड़ बान्हि

हाईं-हाईं बुनछेक भेलासंता खेरही तोरलक ।खेती सभके पानि सँ उबडुबि भेल रहैक।खेरहीक हरियरी कारी दागमे बदलि गेलै।सहरबावाली नफेएल बजलीह खेरही तँ सापरपिटा छलैक।करिहरक मौगि तँ हमरा खेतमे पैसय नै दै छल।सेय तँ तीन दिन-राति घरमाघट बरखा, बरसैत थम्हिये गेलैक।

८

भाग जागल
विहैन कथा

बेघर एक दिव्यांग श्रमिकक गहुँम बाउग पाई अभाबे पछुआयल जाइत रहैक।डीएपी खाधक उपर सँ से किल्लत छलैक।ताबीच बेमौसम ओकर छौरा नव कनियाँ विआहि अनलक।गाम भड़िक लोक लग जे बिलौकी आ मुँहदेखनाक टाका घरवारिक लागल रहैक,से डुबैत देखगमि एकटा जुकति सोचलक।रिशेप्शन(बहूभात)केर नाम पर मंदिरे लगक हकार सौसेंगाम माइक सँ छिरियेलक।अनुन-विशनुन रहलो पर भोजन खेनहार ग्रामीत उपहार रुपैँ नगदी टाका बरसाबय लागल।आब फैल सँ खाद बीजक जोगारधरि पूईर गेलैनि।कतौ सँ अभाग्य तँ नँय रहल।

९

सुनैना बेटी - मैथिली सामाजिक उपन्यास

समीक्षक - लालदेव कामत

मैथिली साहित्य क' दीर्घ कथा केर आंशिक रूप थीक उपन्यास। उपन्यास विधा मेँ वरेण्य साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मंडल जी अगूआयल छथि। हिनक दर्जनों उपन्यासमे ' पंगू' केँ मैथिली भाषा मूल पुरस्कार साहित्य अकादमी द्वारा भेट चुकल छन्हि। सद्यप्रकाशित "सुनैना बेटी" उपन्यास पढबाक सौभाग्य प्राप्त भेल अछि। पल्लवी प्रकाशन सँ बहराएल एहि 116 पृष्टक पोथीक किमत 250 टाका छैक। ई एकटा नव इतिहासिक सामाजिक उपन्यास थीक। ऐ तरहक अभिजात वर्गक वा कहू पैघौत परिवार क' व्यथा-कथा पर आधारित उपन्यास

क' चलन मिथिलामे आबि रहल अछि। स्वयं मंडल जीक कतेको उपन्यासक कथ्य विम्व एके तरहक देखमे आयल अछि। ऐ उपन्यासमे नव बात देखयमे जे आएल अछि से मानसिक भिन्नता कैँ मनोवैज्ञानिक रुपैँ देखाओल गेल अछि। कथानक आगू बढैत एक परिवारक' तीन पिढिधरि क' किस्सामे समाएल अछि। किर्तपुर गाममे एक रुपकांत बाबू आ हुनक पत्नी सरिता रहैत छथीन। रुपकांत जीक अपन शिक्षा- दीक्षा मातृकेएमे भेल रहनि। ओ लोअर प्राइमरी स्कूलक मास्टर रहथि। अपने किसानक बेटा मास्सेव गामसँ पाँवपैदले नीतरोज 5 किमी0 चलिकय आध घंटा पहिले जाथि आ पढौनीके आध घंटा वाद ओतय सँ प्रस्थान करथि। पेरामे हित अपेक्षित सँ सेहो तमाकुले लाथे सेहो कुशलक्षेममे समय ओझरानि। एहन स्फूर्ति जकाँ दैनिक दिनचर्या नइमआहऐत आभा रहल छथि। हुनका पुतरत्न रुपैँ रविशंकर जन्म लैत छन्हि। जे पढि-लिखकय उच्चतम शिक्षा पटना बीएन कॉलेज सँ सेकेण्ड क्लास एम ए करय छैक। एक नव कालेजमे प्रोफेसर क' नौकड़ी कमे वेतन पर करैत छैक। से प्रो०जीक वियाह विधिवत डाक्टरनी सुभद्रा सँ होइत छैन। डाक्टरनी कैँ सरकारी नौकरी आ अपन प्राइवेट क्लीनिक सँ खुब चिकन आमदनी होइत छैक। डां०सुभद्रा कैँ पुत्र भेलनि जकर नाम पड़ल भवनाथ। भवनाथ जीक पढाय - लिखाय आरम्भे सँ नीक स्कूलमे बाहर होअय लगलैक।ओतय अधलाह आदैत शराव पीबाक चसक लगलैक। माय बाबू डाक्टर बनेबाक अभिक्रम मेँ लागल। ताहि बीच शहरके देखा-देखी अपनों घर परिवारमे वर्थडे आ मैरेज डे नहिँ मनौने रहैक से एहिबेर विवाह केर पन्द्रहम् वर्षगांठ मनेबाक ओरियानमे जुटलीह। कारणों रहय , जिनकर भोज खायब तँ खुऐबाक सेहो चांकि राखय पड़ैत छैक। आब डाक्टर सुभद्रा चाहैत छथीन, पर्दाक भीतर सँ संकेत रूपैँ अपन असल विचार राखथि जै पति बैसल - बैसल डेरामे समय बितबैत छथि से ताहि समयक उपयोग विद्यार्थी गणकैँ ट्यूशन पढाकय वेतनों सँ बेशी कैंचा कमाबथि। मुदा प्रो० साहेब तुष्टिकरण के लेल ओ एक शिक्षक पुत्र आ अपना कैँ एक अलग बेढप छाप छोड़यबाला साबित करयमे अपन संकल्प कैँ तिरोहित नहिं करय चाहैथ । प्रतिष्ठित लोक प्राईवेट ट्यूशन पढौनाई कैँ आखिर अपराध बुझैत छथि। ओना पत्नी सँ सम्मानों भेटनि , सुभद्रा हुनकामे अर्धनारीश्वर

केर परतिरुप आंकने रहथिन। मुदा गाड़ी क' चालक आ नौकर सह कम्पाउन्डर केर पगार स्वंय दैत रहलीह। एक गरीब घरक सुनयना सँ भवनाथक वियाह घटकक विचारे समय सँ सम्पन्न भेल। सुनैनासन पुतोह पाबि सासु-श्वसुर नेहाल भेलैक। पति के थथमारैत घर - परिवार मे सुनयनाक लक्षण कर्तव्य बढ सुन्नर रहल। पाठक उपन्यास पढैत-पढैत जहन आठम पराव पर पहुँचता तहन सुनैना बेटी विषयमे जानबाक प्रसंग भेटत। एक दिन प्रोफेसर साहब मायके निछोह उदारता सँ बहकल बेटाक प्रति चिंतित होईत जे सोचलाह; शराब अफरजए पीबके बौआ भवनाथ बेसुध बाट- नालीमे खसल पड़ल देखाएत तँ लोकलाज सँ गड़ि जाएब,मुँह ककरो देखा पाएब! इयह सोचैत स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ैत छैन।पूतौह कैं सुनयना बेटी सम्बोधित करैत अपन व्यग्र मनक आकुलता धरि कहने रहथि। एक दिन बेटाक किरदानी पर सोचैत आ अलमीरा वो घरक तहस- नहस स्थिति पर नजर थिर नहिँ कय पौलीह डाक्टर साहिबा। आ मूर्छित परि गेलीह तँ पूतौह सम्हारलखिन। उपन्यासमे 55*60 साल पछुलका समाजक परिवेश कें एक आकलन मूल्यांकन रूपेँ कयल गेल अछि। एहिमे ग्रामीण क्षेत्रक रितिरेवाज क' चर्चा भेल छैक। कोशिकन्हाक टाँट माटिक खेतमे परल दड़ारि जाहिमे चोर आ हाथीके चलनाई बहुत कष्टप्रद वार्ता - दृश्य उपस्थित भेल अछि। खेत पटौनीक साधन देहातमे करीण आ तकर सब पाटपुर्जा के चर्च भेलैक अछि। ऐ शव्द सब सँ नव पिढिक लोक अपरिचित होइत जा रहलैक हन्। कारण आब सिँचाईक साधन बोरिंग पम्प सेट ,स्टेट बोरिंग आ चैनीज दमकल आ विद्युत मोटर सँ गाममे गाम उपलब्ध छैक।

ऐ उपन्यासमे सुखान्त अध्याय सँ आरंभ कथा दुखान्त अध्यायमे जाकय समाप्त होईछ। देशमे अथवा मिथिला मे 50 साल सँ कम वयक्रम के 75% आवादी छैक। तकरा ई उपन्यास पढिकय किछ नैका संदेश नहिँ उत्प्रेरीत करैछ। शेष बाँचल 25% जे अधवयसू आ वृधजन छथि , हुनक निजी जीवन रुग्णावस्था मेँ छैन। आ ओहिमे साक्षरता दर लगधक 50% रहितो महिला तँ महिला जे पुरूष वर्ग सेहो पोथी, पत्र -पत्रिका सँ उबाऊपन मेँ रहैछ। अपवादमे सेवानिवृत्त लोक स्तरीय आओर विशेष कय हिन्दी -अंग्रेजी उपन्यास पढैमे रमल रहय

छैक। तेँ सुनैना बेटी सन मैथिली उपन्यासक' बढ़ थोर पढ़ाकू पाठक पढैत गुनैत छथि। ओना पुस्तकालय केर शोभा बढाबय लेल एहि प्रभृतिक उपन्यासकार सभक पोथी जाक लागल अवश्य रहैछ। तेँ जगदीश बाबू क' प्रकाशित पोथी सभ "सगर राति दीप जरय" कथा गोष्ठीक अवसर पर हर तीन मासे मास आगन्तुक बीच बेन बिलहल जाईछ। एहि सँ पोथीक उपादेयता बढैछ , दलान दुरापर राखल पोथी देख परपाहुन मोबाइल राखि हुलैसके नवपोथी उत्सुकता सँ देखैत अछि।

१०

लिख पटापैट मारय दयह

लघुकथा

करकरौआ रौदमे गंगिया अपन बिटुवा संगे खेरही तोड़ैत छलीह।बरखा असमय भेला सँ सबकेँ अपने ताल बजैर गेल रहैक।से जनों नँय भेटैक।आधाआधी मुंगक छीमी फोंक भेल छलैक।कारण अगता खेती भेने दोसरो कोलाक किड़ा - मकोरा एकरे दलहन खेतीके निछोहे चपेट मेँ लेने रहय।बरखा दिन खुब जोरगर बिहारि सेहो उठल रहैक।से कीट छीमी पकरि फकसियारी काटने बकुटके पकरने मरल परल देखाय।दिनकर कने काल ले झपाउन भेल।तँ बेटी बिटुआ कैँ माय कहलैन पटहा पाकल करिया छिमी जुनि तोड़।आ कनपटी मेँ छाड़ने छौक लीख,आ एने पटापैट बिछ दियौ।आ लागल लीख पटापैट मारय।ता फेर भुकसिन सूरूज माथे सामने उगलैन।पहिलुके छोन्हिमे अदहा मुन्ही दालि रहै,से गाम गमाईत पठायत तँ दूसले जेतैक आ बीया ल' राखल जायत तँ मोन नै मानै छन्हि।

११

लघुकथा

ई गुड़ खेनै कान छेदौने

मिथिलांचल क' एकटा गाममे लालजी नामक ज्ञानी पुरूक रहधि।ओ अपना गामक नवाहके बैसारमे गौआँ सबके कहलक हौ मोन होईछ पंचायतक चुनाव में ठाढ होई से छहटा मेँ एकटा कोनू बैलेट हमरो नामे बनय दहक। लाल जी धरि बेर-बेर सब तरहक भोंटमे ,जे सामने आबै-लरय लगलाह।लोक मनेमन नियारलनि एकोबेर जीतय नहिँ देबैक।सयह भेलैक, नौबेर लड़ैत-लड़ैत अपन गरीबीधरि खुबे बढेलनि,तैयो कोनू तरहक सहानुभूति नहिँ।उपर सँ मतगणनाक कतारमे एकटा सनकी पुलिस प्रहरी केँ लाठिक मारि सँ भक खुजलनि जे विपक्षी क' ईशारा पाबि ओ तरगुपती पाईके प्रयोग सँ पुलिसिया जूलूम बरसल रहैक।तकरो हँसैत सहैत मोन मजगूत कय कानहाथ धेलनि लालजी।आ काबिल लोक जेकाँ स्वगत बड़बरेलथि"ई गुड़ खेयने,कान छेदेने!"

१२

अम्बोहि पानि उठल

लघुकथा (मैथिली)

गाम सँ हाट-बाजार जाएब - आयब महामोश्किल भेल छलैक।नेपाली बीशवा समुहक बरसाति नदीक पानि उफान तोड़ैत मिथिला मेँ आबि गेलैक।पोसुआ माछ कचहरी लगक पोखरिमे उछैल-कूद क'रहल छैक।बिनोद मोबाइल पर गप्प करैत जलिया सबके बजौलक।शिकरमाहिमे एकटा आध मनक' जंगली बुआरि सेहो बझलैक।ओकरा पोखरि सैरात सँ बनोब्स लै मेँ सेन साहेब बढ असैर पर मदैत केने रहनि।ओ हँसैत ईहो बाजल छलाह जे सबसँ नम्हरका फरी सनेशमे देब किनै?से विचारलक हुनके ई पैघ बुआरी माछ शुभ-शुभके स्वंय पहुँचाबी।जुगूत साहेबके बिनोद कहलनि चाचा यौ अगम - अथाह

बाढि सँ तँ सर्कल जेबाक रस्तापेरा डुबल छैक, से कने कहियौ न मलाह रामी केँ पार कय देता।ता आरो यात्री ओहि चौखुटा नाहमे चढैत सबार भेल। बुआरी केँ जीबैत ओहिपार ल'जेबाक जोगार ले गलजोरके बुआरिक गलफरमे भुण्डी लगेलक रामी।सब केओ बिहुल-- बलान माताक जयनामा करैत जयकार लगेलक-जाय होय. ।खुजल नाह एकबाइग दुर्गा गाछीमे लागल ,तँ बाईरमे बान्हल बुआरिक पते नहिँ,भुण्डी छिटैक गेल रहय।आब रामी हाकीम लेल कतय सँ माछ आनि पुराओत!सभक गंजन सहैत रामी बिनोदक गाराक माला लपकि बाहर करैत अपना मुरीमे कंठी पैसबैत सर्वजनिक प्रतिज्ञा कयलक जे आब साकठ नहिँ रहब आ नै माछक फेरामे पड़ब।वाढिक समयमे बैशनो एहिनो भेलैक अछि?

१३

रोज सेन्टेड लिची

लघुकथा

लालोजीक आमगाछीमे एकटा रोज सेन्टेड लिची'क गाछ फरल छैक।खिच्चेमे कीटव्याधि सँ बचाऊ लेल कीट नाशक रोगर छिरकाऊ कयने रहय । दुपहरियामे आई जा देखय य तँ असंख्य मधुआ फर्र-फर्र उड़ै छलैक।भरिसक जलमे नीक जेकाँ दवाय नँय घोरल गेल रहय।उपरका दुधियासन दवाय जाहिठाम पड़ल(मित्र किड़ा)से तँ जड़िकय सुड्डाह छलैक।आ तरका दवाय जलमे निराल रहला सँ बेअसर कीट हहाकय हँसि रहल छल।से देख ओ माथहाथ द' ठामहि झमान भ' बैसि रहल।ता पूभर सँ सुपरिया आ लुतिया छौरी एम्हरे गाछी दिश अबैत देखेलई ।ओ लिची गाछक मोटगर डायर पर चढि बैस गेलाह।ताहिखन उतरवारिकात सँ सूगिया आ जमुनी ,लालमनि संगे दूनू बहिना लिची गाछ पर दुरौसे सँ पजेबाक टुकरी फेकलक।काँच-डम्हायल गोटेक पाँचटा लूचिफल खसलैक।"जहन लिचिये चोरवय तोंसब एलसी

हन तँ लेह"कहि ओ गाछ कैँ खूबजोर सँ झखेलनि।नीचा पाकल लिची झहैर पथार लागि गेल।ओ पाँचू गोरे कहलक ओगरवाहि करैक बनसव्त लूटाईये देलहक।तखने सियान लालमैन बजलीह- तीन शाल स तँ क्रिकेटक खेलारि सभके अजादे कयने छथि ,ऐबेर उ सब पढाय आओर परीक्षाक तैयारीमे लागल छैक ने।तेँ अपने महिला मंडल मेँ सदावरथ लुटेलनि अछि।ओहिठामक दोसर गोटे अपन बेदाना लिचीक फल आठसय टाकामे हूण्डा बेचलक ।

१४

लघुकथा -रानी कैँ नँय छै राजा

महतो जीके भेलनि जे देशी श्रमिक मौधमाछी कैँअपना चुम्बकीय आभा सँ ईटायलिएन रानी घींच आनत।से ओ कुशवाहा जी लग जा बाजल -अपने कोन तरहेक मौधमाछी काठक बाकसमे पोसलौंह अछि? कुशवाहा जी कहलकैन यौ भजार! यूरोपियन एपिल मेलीफेरा प्रजाति सरकारी नियम सँ जेना-तेना भेटल हन। आब के एपिल फ्लोरिया ,एपिस डोरसटा आ एपिस सेनेला इंडिका पालत।से की यौ,कोनू खास विशेषता बुझाइत य।ताहि पर महतो जी बजलाह हे देखू जंगली आ भारतीय मौधमाछी पोस नँय मानैत छैक।आओर नरसरिया लगाकय तकरा खोताके मगैहिया लोक खोंचारि मौध तँ लैत य,से देखियौ ककरो घर टुटैत छै त बड दुःख होई छै।मौध आ खोंता अपना लेल न मौधमाछी सहेजैत अछि।लोक स्वार्थी केहेन जे तकरा अपना लेल अमृत बूझि ओरियाबैत छैक।हे यौ पहिले खादीबोड आ आब केन्द्र सरकार किसानोक आमदनि दूगुणी करैक लेल मौधमाछीके पोसब प्रोत्साहन योजना सँ अनुदानों दैत छथिन।भजार यौ! आइ बहुत गप्प -सप भेल एकटा बात कहब- घरमाछी कैँ तँ अपनो देह हाथ पर बैसैत देखने होयब लटापटि करैत ।ई कहू जे मौधमाछी कैँ तेना अवस्थामे पौलहुँ कहियो।

कुशवाहा जी कहलखिन यौ भजार रानी मधुमक्खी आकाश वियाह करैत मात्रे एक नर सँ गमन करैत छैक।जखनकि ८-१० टा नर पछोर करैत समुहमे खेहारैत छैक।हँ जे नर एटैच भेला ओ सेक्शरिलेशनशीप करैत मरि जाइछ।एकटा कोनू नर कैँ अपन जीवन आहुति देनाय निश्तुकीये बुझू।

-मो०७६३१३९०७६१

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

४.पद्य खण्ड

४.१.राज किशोर मिश्र-अंतस्-तम

४.२.निर्मला कर्ण- जूड़ शीतल

४.३.किशन कारीगर- आ रे सुग्गा आ आ (बाल कविता)

४.४.कल्पना झा- व्यग्रता

४.५.डा सुमंगला झा- मैथिल

४.१.राज किशोर मिश्र-अंतस्-तम



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जेनरल मैनेजर (ई), बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,गाम- अरेर डीह, पो. अरेर हाट, मधुबनी

अंतस्-तम

कि एक हमरा ला गि रहल अछि ?
आइ मा र्तण्ड भेल छथि मलि न ,
पूर्णि मा रा ति क रा का पति ,
छथि चा ननि ही न, मुदा शा ली न।

साँ झ पड़ैत सन्ता ें अबैत छथि ,
व्यो म मे ,अनगनि त तरेगन,
टि मटि मा इत छथि बा ती सन,
मुदा , हुलसि त नहि , हुनकर छन्हि मन।

आका स आइ उदा स अछि ,
लगैछ ने ओहि मे हा स -परि हा स,
एकटक ता कि रहल हमरा दि स,
ओकरा मे, को नो ने अछि हुला स।

अवि च्छि न्न व्यो म,
कि ए लगैत अछि टूटल -भा ङ्गल?
चनकल, दरा रि पड़ल जेना ,
फा टल ति रपा ल सन टा ङ्गल।

केरा के भा लरि शुष्क भेल,
जी र्ण -शी र्ण ,गा छी मे तरु,
लहलहा इत जजा ति , खेत मे,
लगैत अछि हमरा ,जनु मरु।

केओला क सुगंध सूँघए लेल ,
आएल ,गरल सँ भरल ,गहुमन,
सुगंधि ओ कि एक प्रभा वि त नहि ,
कऽ पा बि रहल अछि हमर मन?

सुंदर संगी त सँ, कहल जा इछ,
जरय लगैत अछि बा ती क टेमी ,
बि सरि जा इत छथि वि रह -वेदना ,
गी त -तरङ्ग, सुनि , को नो प्रेमी ।

कि ए भेल बेअसर, गां धर्व -वि द्या ?
कि ए हमर मो न, गेल अछि जि दि आ?

हरि अर कचो र अरण्य बी च मे,
झि हि र -झि हि र झहरैत अछि झरना ,
बि ढ़नी सन ओ भि नभि ना इत,
आ, का न मे झऽर पड़ैत हो अए जेना ।

कल-कल ध्वनि , करैत बहैत अछि ,
मनो हा रि णी सरि ता ,
ला गि रहल ओ अल्हड़ सन ,

आ, गौ रबा हि भेलि को नो बनि ता ।

चि ड़ै -चुनमुनक खग -ध्वनि मे,
चुम्बक सन हो इत अछि आकर्षण,
कि ए लगैत अछि गी त ओ?
हो अए ओ को नो , तुमुल क्रन्दन।

देखय गेलहुँ ,जलनि धि को ना ,
क्री ड़ा करैत छथि जो आरि सँ,
ला गल, सिं धुक मो न अपने
बेकल, उत्फा ल नि ज वा रि सँ।

सा रस -झुण्ड, फा नल नदी के,

आ उड़ल अनन्त अका स मे,
को शि श ओकर उनटे ला गल,

भुतला ने जा ए ,प्रया स मे।

सि हकल एहन सुन्दर बसा त,
कि ए नहि स्पर्श मे स्फुरण?
मो न के नहि दऽ रहल अछि ,
शां ति शी तलता -त्वरण।

चिं तन , अन्वेषण केलहुँ,
कतए अछि ई अन्हा र?
अछि ई अंतस्- तम ,किं वा ,
पसरल अछि ई, बहा र?

घो र शो धक बा द बुझलहुँ,

रवि नहि मलि न ,ने कनैछ अका स,
धरती , चा न, रवि , व्यो म, तरेगन,
सभ मे भरल उज्ज्वल प्रका श।

गा छ -बि रि छ, सिं धु,धुतरंगि णी ,
झरना , खग, संगी त, बसा त,
सभ मे ऊर्जा भरल अछि ओहि ना ,
तरु अछि हरि अर, हरि अर पा त।

ई अछि हमर दृष्टि क दो ष,
मो न मे पसरल अछि अन्हा र,
ऋणा त्मकता -तम मो न मे पैसल,
तेँ लगैत अछि ,दुनि आ बेका र।

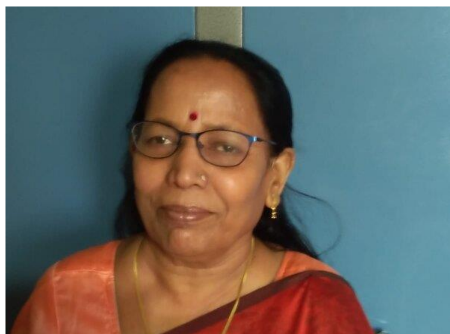
सका रा त्मक सो च सँ, जखन
भगअओलहुँ मो नक भी तर अन्हा र,
वि लक्षण ला गि रहल वएह दुनि आ,
मन मे बहए ला गल सुख -धा र।

सभटा तऽ सो चक फेरा छै,
सुख -दुख ओकरे खेड़ा छै ।

सदि खन ,वि चा र सका रा त्मक,
रहय पसरल मन मे ओकरे इजो त,
वएह अछि शुभ, सुभग, स्वा स्ति ,
जि नगी मे जी तक,वएह अछि स्त्रो त।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

४.२.निर्मला कर्ण- जूड़ शीतल



निर्मला कर्ण
जूड़ शीतल

मिथिलाक पावन त्यौहार जूड़ शीतल,
अद्भुत अलौकिक दिव्य अनुभूति |
प्रातः काल नींद में माथ पर बासि,
शीतल झलक सँग स्नेहिल थपकी |
बहुत याद अबैत अछि आई हमरा,
माय काकी क आशीर्वादक निर्झरिणी |
जहिया सँ शहर में बसलहुँ,
पूर्णतया बिसरि गेल छलहुँ |
अपन बच्चा सभ के दैत रही,
हमहुँ ओहिना जल सौं थपकी |
मुदा अपने में लगैत छल,
किछु अपूर्णताक आभास |
जाबे धरि हम जल लय जाई,
ओकरो सबहक निन्न खुलि जाय |
कारण वैह एकमात्र रहल,
शहरक आपाधापी सँ घेरायल |

पहिने स्कूल फेर कॉलेज,
आब प्रातः ऑफिस में ओझरायल |
बिछान पर शीतल जल सँ,
जुरायब बिसारि देल हमहुँ |
कनि बिछान भिजवाक चिन्ता,
सेहो रहैक जागरूक सन्तान के।
आब आवश्यक बुझना जाइछ,
समझदार जागरूक भेलाक बाद।
अपन कीमती बिछान के,
भीजऽ सऽ बचेनाई सहेजनाइ।
आब पाबनि अधूरा कोना,
नहि रहत अहिं कहु।
सब पाबनि के केलहुँ,
अपना हिसाबेँ शहरीकरण।
फेर पाबनिक पूर्णता,
आनब कोन विधि।
पूर्णताक लेल परम आवश्यक,
अछि निश्छलता जे अछि।
हमरा सबहक जीवन सँ,
आब विलुप्त भय गेल।
आधुनिक भेलहुँ हम मुदा,
माय दादीक पुरातन वैह सँस्कार।
अंत:स्थल में बसल अछि,
आब बुझाइत अछि हमरा।
नहि आधुनिक बनि पयलहुँ,
नहि बिसरलहुँ अपन सँस्कार।
आधुनिक जीवन सँ ओझरायल,
प्रिय पुरातन हमर अपन सँस्कार।
प्राचीन अर्वाचीन भेल एकसार,
हम दुनूकेँ बीच भेल छी गड्डमड्ड।
भँवर में फँसल प्राणी सन ,

बेकल सोचैत छी किम्हर जाऊ |
आधुनिकता छोड़ि नहि सकैत छी,
सँस्कार बिसैर नहि सकैत छी |
आई एतेक व्यकुलताक सँग,
किएक हमरा याद अबैत अछि |
अपन पाबनिक निश्छलता,
दिव्यता अपन दबल सँस्कार |
सब याद दिएलक हमरा,
एहि बेरक जूड़ शीतल पाबनि |
एहि पाबनि में हम गेल छलहुँ,
अपन गाम अपन जन्मस्थान |
बहिन भौजी भतीजा भतीजी,
सभक भेल छल घर में जुटान |
आखिर अवसर छल भातिजक,
शुभ विवाहक पावन संस्कार |
गोष्ठी जमल छल बहिनक सँग,
बीत गेल रातिक तीन प्रहर |
प्रातः कालक मन्द मनोरम,
वातावरण में रही निन्न में डूबल |
माथ पर भेल मधुर स्पर्श शीतल,
आँखि खुजल देखैत छी ओतऽ |
ठाढ़ छैथ हमर बड़की भौजी नेने,
अपन एक हाथ में जल भरल लोटा |
दोसर हाथक शीतल जल माथ पर,
हमर केश सँग बिछान तकिया भिजबैत |
आशीर्वादक निर्झरणी सेहो बहबैत,
हम विमुग्ध भय हुनका रहलहुँ देखैत |
याद आबि गेल अपन बाल्यावस्था,
अहिना त माय सेहो दैत छल |
सब साल शीतल आशीष,
रहैत छल सँग मायक हाथ हमर शीश |

माय के याद कय आँखि नोरा गेल,
भौजी में माय के दर्शन पाबि ।
हिया में जागल श्रद्धा हमर हाथ,
झट हुनकर चरण पर पहुँचि गेल ।
मष्तके टा नहि आत्मा तक,
हमर भय गेल शीतल निर्मल ।
आधुनिकता के त्यागि हम,
पुनः भेलहुँ अपन मायक संस्करण ।
आब हमर जूड़ शीतल नहि रहत,
कहियो आधुनिकता भरल अपूर्ण ।
सदिखन होयत मायक नेने सँस्कार,
शीतल सरल सौम्य सम्पूर्ण ।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

४.३.किशन कारीगर- आ रे सुग्गा आ आ (बाल कविता)



किशन कारीगर
आ रे सुग्गा आ आ (बाल कविता)

आ रे कौआ आ आ
आ रे सुगा आ आ

आ रे मैना आ आ
आ रे बगरा तहूं आबि जो

चिड़ै चुनमुन सब आ आ
दौगा गौगी बौआ संगे खेलो जो

हे सुग्गा तूं बौआ के रोटी नै खैहियै
हम तोलो लै रोटी रखने छियौ.

है मैना आइ तूं कतअ रैह गेलही
हमर बौआ तोरा तकै छेलौ

आ रे बगरा जल्दी आबि जो
हमर बुच्ची कटोरी मे पानि रखने छौ

चिड़ै चुनमुन सब चूं चूं चीं चीं करै
हमला बौआ के कते नीक लगलै

आ सब मिल के खेलै जाइ जो
हे खेलाइत खेलाइत झगड़ा नै करै जाहियैं

आ रे सुग्गा आ आ
बौआ संगे खेलो जो

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

४.४.कल्पना झा- व्यग्रता



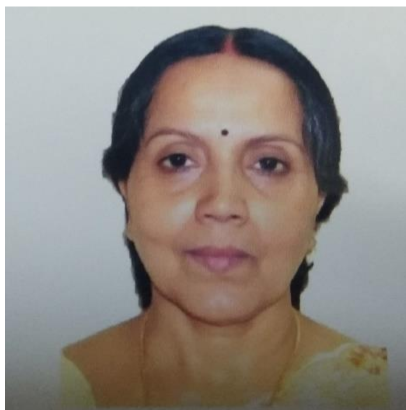
कल्पना झा
व्यग्रता

अनमन ओहिना लगै छल
जेना चुल्हि क आगी,
झबरल केश के बीच जेना
आंखि के डिम्बा तर सं
किछु मोन के खगता !
एहन व्यग्रता ?
ने अपन ने आन,
तयौ जीबैत रहै मोन क प्राण,
टिस टिस करैत रहै
ओ मोन क कोन,
ककरा कहू कतय धरु
बड़ु ओछाहि अछि
इ समय क पात्र,
ने बाट ने बटोही भेटल ,
तिल तिल क ओ मोन क खगता
बिलाईत रहल,

शब्द क रचल श्रृंगार सं
पांति पांति गमकैत छल,
जूहि जाहि सब सजल
तयौ मोन कटाह बोन में
छिछियैत रहल।
-कल्पना झा, बोकारो

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

४.५.डा सुमंगला झा- मैथिल



डा सुमंगला झा
मैथिल

आपन आँङन आपन बाड़ी,
अपनहि खेत के साग-खेसाड़ी।
जीभ म स्वाद! गड़ल अछि एहैन,
पाँचों-सितारा में, पाओल न तेहेन।

कदीमा-फूल, तिलकोड़क तरुआ,
बड़ी-भात संग! करैला के भरुआ।
पटुआ-साग-तिम्मन,अल्हु के सन्ना,
मिथिला प्रसिध्द अछि खीर-मखाना।

छुटपन, पियै छलहुँ सुराही के नीर,
हरदमें रहैत छल,दुआरो पर भीड़।
बेल,पुदीना आओर नेबो के शरबत,
कहियौ न बुझलों,छाछ के माहत ।

आब जों बसल छौं,कंक्रीट क देश में,
बिसलरी बोतल किनू, रहू विदेश में।
फोन स समय लिय, तखन करु भेंट,
बिन बतैने पहुँचब त बंद भेटत गेट।

गप-शप, गीत-नाद, भोर-साँझ झगड़ा,
बूझै में न कहियो आएल की छल बखड़ा।
बुढ़ारी में अलगे स दिन काटू असगर,
रहि रहि बुध्दि भाँसत, सौसें देह लड़बड़।

अंतकाल मन पड़त, पुरनका ओ अंङना!
गोतिया-नेना, बाड़ी-झाड़ी, छनकैत कँङना।
प्रगति विशेष भेल, ललना सब विदेश गेल,
मिथिला के धिय-पूत, दुनियाँ में पसैर गेल।

कोणनिचिवा, गुटेनमॉन, नि हाओ, हैलो-हाय!
जापानी, अंग्रेजी, जर्मन-चीनी सीख जाय,
पूजा-पाठ,कर्मकाण्ड! संस्कृति छुइट गेल,
आन भाषा सीख-पढ़ि, मैथिली बिसरि गेल। डॉ सुमंगला झा।

(डा सुमंगला झा, PhD, हसनत महिला कॉलेज बंगलुरु के सेवा निवृत्त हिंदी विभागाध्यक्ष छथि)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

